प्रकाशक –
सत्यदेव वर्मा बी ए, एल-एल बी
मयूर-प्रकाशन, झाँसी ।

प्रथमबार—१९४९

मूल्य—डेढ़ रुपया

मुद्रक—
द्वारिकाप्रसाद मिश्र 'द्वारिकेश'
स्वाधीन प्रेस, झाँसी ।

पीले हाथ

परिचय

—:*:—

कुछ वर्ष हुए झांसी से मऊ रानीपुर एक बरात गई थी। दोनों समधी सुधारवादी थे, परन्तु खातिरदारी की कमी के कारण दोनो मे मन मुटाव हो गया। बात चीत हो पड़ी। थप्पड़ घूसे—और शायद लाठी—की भी नौबत आजाती, परन्तु लड़की का पिता वर के पिता से केवल इतना ही कह कर रह गया—

'मैंने आपके पैर पूजे हैं, पीठ नहीं पूजी है।'

एक घटना हाल की है। दोनों काफी शिक्षित। लड़के के पिता जज। लड़की वाले ने बरात के डेरे में दावत देने की सूचना भेजी। जज होते हुए भी वर के पिता पुरातन पन्थी थे—बरात के डेरे मे सभी प्रकार के भोजन पान और नृत्य गान के प्रेमी! बिचारा लड़की वाला ही तो था। उसको सब प्रकार के तकाजे पूरे करने पड़े। बरात के डेरे मे ही दावत देने के अनुरोध पर लिखी हुई फटकार खानी पड़ी रस्म रिवाज के खिलाफ बरात के डेरे मे लड़की वाला दावत देने का साहस करे!

दहेज, लेन देन, ठीक ठहराव इत्यादि की प्रथा हिन्दू समाज मे स्त्री के नीचे स्थान के कारण जारी है। जातियों और उपजातियों की सभाओं मे इसके विरुद्ध हर साल प्रस्ताव पर प्रस्ताव स्वीकृत होते है। उन प्रस्तावों की अभी स्याही भी न सूखी होगी—इधर पढ़े लिखे लड़कों का, नीलाम शुरू हो गया है!

जो सोलह आना सुधार की क़सम खाते हैं वे भी बरात की खातिर दारी कराने पर सिर मुड़ाए फिरते हैं। जो लोग ठीक ठहराव के जघन्य

व्यवसाय से दूर रहते हुए भी खातिरदारी को अपने बड़प्पन का और स्त्री के पद की निम्नता का रूप देते हैं उनको गयाप्रसाद में अपना समकालीन मिलेगा।

बराबरी वालों की आपसी खातिरदारी और बात है, पर छोटा समझा जाने के कारण बड़े की जो खातिर बरात के अवसर पर करता है उसका समर्थन स्त्री के निम्न पद के सिवाय और कौन करेगा?

झाँसी
ता० २८-११-४८

वृन्दावनलाल वर्मा

नाटक के पात्र

पुरुष—

बन्सीलाल—निर्मला का पिता

गयाप्रसाद—वीरेन्द्र का पिता

वीरेन्द्र—एक युवक जिसके साथ निर्मला का विवाह होता है।

सोहनपाल—वीरेन्द्र का मित्र और बराती सनकी स्वभाव वाला।

केदारनाथ—गयाप्रसाद का व्यौहारी और मित्र, एक बराती।

वादन-मंडली, कुछ बराती, शहर के पुरुष और बालक इत्यादि।

स्त्री—

निर्मला—बन्सीलाल की लड़की जिसके साथ वीरेन्द्र का विवाह होता है।

शहर की कुछ स्त्रियां और लड़कियां।

❀ गीत ❀

पवन तू डाल सुरभि झोली में।
थकी हुई सी, झुकी हुई सी रश्मि सिमटकर चली जा रही,
झुकी हुई सी, लुका हुई सी निशा झिलमिली सजी आ रही,
गगन ने घोले रंग रोली में।
पवन तू डाल सुरभि झोली में।

(अँधेरा बढ़ता है। जैसे ही निर्मला का गीत समाप्त होता है, वीरेन्द्र पेड़ों की ओट से आता है। वीरेन्द्र लगभग २० वर्ष का स्वस्थ, आकर्षक युवक है। उसकी परीक्षा समाप्त हो चुकी है। उसके आने पर निर्मला जरा चौंक जाती है।)

निर्मला—(मुस्कराहट को छिपाने का प्रयत्न करते हुए) यह क्या ? कहां छिपे थे ? तुम यहां कब से थे ?

(वीरेन्द्र में लज्जा का भाव नहीं है। वह भोला बनने का उपाय करता है। परन्तु जान-बूझकर बनावटी भोलेपन को हँसी से दबाता है।)

वीरेन्द्र—तुमने अपनी तान से पवन को झोली में सुगन्धि डालने के लिए बुलाया और वह चला आया। (और भी हँस कर) परन्तु उसकी गांठ में सुरभि, सुगन्धि कुछ नहीं है।

निर्मला—दिन भर की थकावट को दूर करने आयी थी ; गाकर मन बहला रही थी, सो तुम आ कूदे।

वीरेन्द्र—कूदा कहां हूँ ? धीरे धीरे आया हूँ। गाने के बीच में तो आया नहीं। जब स्थायी, अन्तरा, तानें और आलाप समाप्त हो गये तभी तो चुपके से आया—रात की तरह लुका हुआ।

निर्मला—तो यह कहो कि पहले से यहीं कहीं छिपे थे।

वीरेन्द्र—नहीं तो। जब गगन रोली में अनेक रंगों को घोल रहा था तभी आया था।

निर्मला—तुम बड़े चत्रार्थी हो। तुम्हारी तो परीक्षा हो चुकी है। अब मज़े में मटरगश्त कर सकते हो। मेरे दो पर्चे बाकी हैं। घर कब जा रहे हो ?

वीरेन्द्र—तुम्हारे पर्चे पूरे होने पर। परन्तु इसके बाद हमारी तुम्हारी सबसे बड़ी परीक्षा होनी है।

निर्मला—अर्थात् ?—हूँ। वह परीक्षा हम लोगो के हाथ में नहीं है।

वीरेन्द्र—गुसाईं बाबो ने कहा है—

जापर जाको सत्य सनेहू, सो तिहि मिलै न कछु सन्देहू।

निर्मल—वीरू, इस कठोर संसार में यह कहावत सदा सच्ची उतरती नहीं पायी गयी। (सास लेती है।)

वीरेन्द्र—(उसकी सास को सुनकर) मै भी इतनी ही लम्बी सास लेता। अपने बहते हुए आसूओ को मोती की लड़ी को तुम्हारे कोमल सुन्दर करो से तुड़वाता, आकाश और पृथ्वी को गालिया देता, सूर्य की किरणों और चन्द्रमा की झिलमिलियों को कोसता, परन्तु—

निर्मला—परन्तु, किन्तु कुछ नहीं वीरू ! हम अपने हृदय के टुकड़े कर सकते हैं, परन्तु अपनी सस्कृति को नहीं तोड़-फोड़ सकते। (फिर सांस लेता है।)

वीरेन्द्र—मै तो उसको तोड़-मरोड़ डालता, परन्तु यदि सस्कृति ही सहायक हो जाय तो ?

निर्मला—क्यो अपने को और मुझको भुलावे में डालकर दुःख का पथ तैयार करते हो ? अब जाओ। अन्धेरा हो गया है। मुझको कल के पर्चे की तैयारी के लिए जल्दी जाना है।

वीरेन्द्र—उसके उपरान्त ?

निर्मला—उसके उपरान्त अदृष्ट है। भ्रम और फिर विस्मृति। जाओ कोई देख लेगा तो क्या कहेगा ?

वीरेन्द्र—देख लेगा तो क्या कहेगा और क्या कर लेगा ? मै अपनी भावी पत्नी के पास हूं और तुम अपने होनेवाले पति के पास।

निर्मला—बिलकुल मृग-मरीचिका। भ्रमों का दलदल। जाओ और भूल जाओ। मैं जाती हू। नमस्ते। (जाने को होती है)

वीरेन्द्र—न दलदल, न कीचड़। मरीचिका भी नहीं। कमलों से भरी झील। पिताजी का पत्र आया है। इसी महीने में मेरी-तुम्हारी भावर पड़ेगी। तुम्हारे पिताजी से सब बात तय हो गयी है। इसी समाचार को सुनाने के लिए मैं एकान्त की खोज करता हुआ आया। वैसे हिम्मत न पड़ती।

निर्मला—(उमड़े हुए हर्ष को दबाकर) जी हा, आप बड़े लाजवाले हैं ! न-जाने कितनी बार टोका-टाकी करके, पत्रों में कविता छुपा-छुपाकर मुझको कुढाया और हैरान किया।

वीरेन्द्र—अब अखबारों की आड़-ओट लेकर कविता नहीं छपेगी; मेरे-तुम्हारे जीवन के प्रत्येक पल में कविता छपेगी और छलकेगी। पत्र मेरी जब में है। टार्च ले आया हूँ। उसके उजाले में पढ़ो। (जेब से पत्र और टार्च निकालता है)

निर्मला—मै आपसे विनय करती हूँ। टार्च मत जलाइए। कोई देख लेगा तो मुझको लाजों डूबना पड़ेगा।

वीरेन्द्र—तो अपने साथ लेती जाओ। अकेले में पढ़ लेना।

निर्मला—मुझको क्या करना है। आप अपने पास ही रखिए। (फिर भी पत्र ले लेती है)

वीरेन्द्र—(आश्चर्य के साथ) आप ! आप ! यह सब क्या ? मुझसे और कहो। तुम कहो। आप क्या ? विवाह-सम्बन्ध की बात ने क्या कोई अन्तर पैदा कर दिया है ?

निर्मला—(हँसती हुई) अन्तर कैसा ? आप प्राणों से बढ़कर हैं ? देवताओं से ऊँचे, सागर से अधिक गहरे और आकाश से अधिक रहस्यमय। मै पुजारिन हू, आप पूज्य।

(वीरेन्द्र मन ही मन प्रसन्न होता है। अपने को इतना ऊंचा उठा हुआ पाने पर भी उसके प्रेम का उन्माद सन्तुष्ट नहीं होता। वह पुजारिन और पूज्य के व्यवधान को बनाये रखने की प्रेरणा अन्तर्मन से पाता है और साथ ही प्रेम के उन्माद की टीस।)

वीरेन्द्र—और मैं सोचता हूं, अपनी देवी को हृदय के पुष्पासन पर बिठाकर लगातार उपासना करता रहूँ। वह वरदान का एक फूल दे और भक्त देवता बन जाय।

निर्मला—मुझको कविता करनी नहीं आती। आप तो बहुत बातूनी हैं।

वीरेन्द्र—वह कविता नहीं थी तो क्या था—

पवन तू डाल सुरभि झोली मे !

सुगन्धि झोली या बटुए में नहीं बाधी जा सकती, परन्तु फूल ओली में गूँथा जा सकता है। मेरा नाम एक बार ले लो। समझूंगा एक नहीं अनेक फूल मेरी ओली मे आ गये। प्यारी निर्मला, एक बार मेरा नाम ले दो।

(निर्मला हँसती हुई जाती है)

निर्मला—(जाते जाते) आप मेरा नाम ले सकते हैं, परन्तु मैं आपका नाम नहीं ले सकती।

दूसरा दृश्य

[स्थान—विजयपुर नगर की एक गली मे गयाप्रसाद के घर की बैठक। बैठक के बीच मे एक मेज और कुछ कुर्सियां है। एक ओर एक तख्त पड़ा है। उस पर कुछ नहीं बिछा है। भीतर की ओर भी दीवार पर एक कलेण्डर टँगा है। कमरे में और कोई सजावट नहीं है। गयाप्रसाद कुर्सी पर बैठा है। वह प्रगतिशील विचारवाला बनने की कोशिश करता रहा है, परन्तु दफ्तर के

जीवन की लकीरें चेहरे पर इतनी गहरी है कि माथे की शिकनें ध्यान के साथ कर्तव्य-पालन करने रहने का अभ्यास अधिक प्रकट करती है और प्रगतिशीलता का कम । बन्सीलाल तख्त पर बैठा है । उनकी अवस्था कुछ उतरी हुई है । दोनों भौहों के बीच में खड़ी सिकुड़न है। ओठों पर रुखाई । जब वह मुस्कराने का प्रयत्न करता है, तब गर्दन कुछ आगे बढ़ जाती है और आंखों में आवेश-सा आ जाता है। जान पड़ता है—'सहजहिं चितवत मनहुं रिसौहैं,' परन्तु वास्तव में वह सहज क्रोधी नहीं है। स्वाभिमानी है, इसलिए कभी कभी उसके स्वर में टंकार का आभास मिलता है। समय—रात्रि]

बन्सीलाल—(बिना मुस्कराहट के) बाबूजी, समय थोड़ा है । शहर का वास्ता है । फल-फलारी तो मिल जाती है, परन्तु खाने-पीने का सामान कठिनाई के साथ प्राप्त होता है। बरात थोड़ी ही आनी चाहिए । वैसे मैं किसी और को आपकी सेवा में भेजता, परन्तु सोचा, स्वयम् जाकर निवेदन कर दूँ ।

गयाप्रसाद—(मुस्कराकर) फल-फलारी ही सही । बरात में
किसको छोड़ूँ और किसको साथ ले आऊ ? (गयाप्रसाद को अपने
दफ्तर के बाबुओं और दफ्तर से लगे हुए अन्य दफ्तरों के बाबुओं
और अपने लड़के के मित्रों का खयाल आ जाता है। साथ ही
स्वयम् बरात के नेता होने का चित्र सामने खिंच जाता है
प्रतिक्रिया में उसका दम्भ जाग्रत हो जाता है।) देखिए, बाबू
साहब, (हँसकर) बहुत लोगों के साथ मेरा व्यौहार है । बहुत बचता
हूँ, परन्तु लोग मानते ही नहीं । जिसके यहा बार-बार खाना खाया है,
बरात में गया हू, उनको लड़के की बरात में कैसे धता बता दूँ ? (गम्भी
रता के साथ) खाने का प्रबन्ध कर लूंगा, आप परेशान न हों।

बन्सीलाल-(क्षीण मुस्कराहट के साथ) मैं भी अपने मित्रों व महात्मा से खाने-पीने का सामान जुटा लूंगा। (रुखाई के साथ) मैं दहेज की प्रथा के खिलाफ हूँ। आप भी हैं। परन्तु बरात की खातिरदारी तो जैसी बन पड़ेगी, करूगा ही। अर्ज है, थोड़ी बरात लाने की।

(दहेज-प्रथा के खिलाफ होनेवाली बात को गयाप्रसाद स्वयम् कहना चाहता था, उसको बे-मौके बन्सीलाल के मुंह से सुनकर वह मन ही मन क्षुब्ध हो जाता है। उसको लगता है, जैसे उसका बड़प्पन बन्सीलाल ने दिन-दहाड़े चुरा लिया हो। परन्तु प्रगतिशीलता के नाते वह अपने क्षोभ को दबा लेता है।)

गयाप्रसाद—मुझको कोई हठ नहीं बाबू साहब! आप कहें मैं लड़के को उसके दो-एक मित्रों और एक ब्राह्मण सहित भेज दूँ? (विजय की मुस्कराहट के साथ) मुझको कुछ नहीं चाहिए। आप बहू दे रहे हैं, सब कुछ दे रहे हैं।

(बन्सीलाल के स्वाभिमान को चोट लगती है। वह तिल-मिला जाता है। परन्तु तुरन्त अपने को क़ाबू में कर लेता है।)

बन्सीलाल—(मुस्कराकर) मैं तो उस युग का स्वागत करूंगा जब बरात में वर और उसके दो-एक मित्र ही आवें। ब्राह्मण की भी अटक न रहे। वर-वधू स्वयम् वचन और प्रण दें और लें, परन्तु शायद हम लोगों के जीवन में ऐसा सम्भव नहीं।

गयाप्रसाद—प्रत्येक देश मे विवाह आमोद-प्रमोद का एक खास उत्सव समझा जाता है। हमारे देश में क्यो वह एक नीरस, बेजान रूखी रीति बना डाली जाय?

(बन्सीलाल कुछ बोलना चाहता है, परन्तु अपनी बात का पलड़ा भारी रखने के लिए गयाप्रसाद मुस्कराते हुए जल्दी जल्दी कहता है।) आप जितने बतलावें उतने ही लोग बरात में लाऊँगा और कुछ नहीं, ज़रा उनकी खातिर हो जाय। कुछ आमोद-प्रमोद भी।

बन्सीलाल—(तर्क बढ़ाने का कोई अवसर न देखकर) तीस चालीस व्यक्ति काफी होंगे। आमोद-प्रमोद का प्रबन्ध मैं कर दूँगा। हमारे यहाँ एक वादन-मंडली है।

गयाप्रसाद—धन्यवाद! रोशनी और मोटरों का प्रबन्ध भी आपको करना होगा।

बन्सीलाल—सब हो जायगा। आप चिन्ता न करें।

गयाप्रसाद—हम लोगों ने अतिशबाजी और फुलझड़ी बिलकुल बन्द कर दी है। द्वारचार के समय केवल एक फूल और एक पटाखे का सम्मान, स्त्रियों के हठ के कारण, करना पड़ता है।

बन्सीलाल—याद रक्खूंगा। (मुस्कराकर) रीति-रिवाज़ों के विराट् रूप टूट जाते हैं, परन्तु वे अपना भद्दापन और बेहूदापन एक बहुत छोटे से ही रूप में क्यों न हो, चिरकाल के लिए छोड़ जाते हैं। नमस्ते, महाराज! (जाता है)

(गयाप्रसाद उसको दरवाजे तक पहुंचाकर कुर्सी पर आ बैठता है) गयाप्रसाद—कितना बदतमीज़ है! बीरू, ओ बीरू!

(वीरेन्द्र तुरन्त आता है)

वीरेन्द्र—मैं तो आ ही रहा था पिताजी! आप बदतमीज़ किसको कह रहे थे!

गयाप्रसाद—(कुढ़कर) संसार को, दुनिया को, जगत को। बदतमीज़ों की कुछ कमी है? टीक–ठहराव नहीं किया, दहेज़ नहीं लिया, बरात का रेल–किराया ठुकरा दिया, कह दिया कि बरात बहुत थोड़ी संख्या में लाऊँगा। द्वारचार के समय के लिए एक फूल और एक पटाखा की रीति–निभाव के लिए कहा तो ये सुधारवादी उसमें भद्दापन और बेहूदापन सूंघते हैं।

(वीरेन्द्र एक क्षण के लिए सिर नीचा कर लेता है)

वीरेन्द्र—(यकायक हँसकर, लाड़ले लड़के की तरह) मेरा साथी वह सनकी सोहनपाल है न, उसको अवश्य ले चलिएगा, पिताजी वह मुँह-तोड़ बात करने के लिए हम लोगों में प्रसिद्ध है।

गयाप्रसाद—(मुस्कराकर) क्या लड़ाई करवायेगा?

वीरेन्द्र—(हठपूर्वक) ऐं—नहीं पिताजी! चाहे और कोई जाये या न जाये, सोहन को ज़रूर बरात का नेवता दीजिए।

गयाप्रसाद —(गम्भीरता पूर्वक) बरात में जाने का अवकाश किसको है! हाथ जोड़ने पड़ेंगे खुशामद करनी पड़ेगी, तब कहीं थोड़े से लोग चलने को तैयार होंगे। सोहनपाल को निमंत्रण दे देना। और देखो, अच्छे-से-अच्छे कागज़ पर निमंत्रण छपवाना। नहीं रेशमी रूमालों पर चटकीली स्याही से छपवाना। और हां, निमंत्रण भड़कीली कविता मे हो।

वीरेन्द्र—(नीचा सिर करके मुस्कराते हुए) कविता में! कविता कौन करेगा?

गयाप्रसाद—अरे, जैसे मै जानता न होऊँ! पत्रों में यह छायावाद, मायावाद, और न-जाने किन किन वादों पर तू कविता लिखता है सो क्या यों ही? जाओ। मुझको केदारनाथ के यहां जाना है। उनको बरात में अवश्य ही ले जाऊँगा।

वीरेन्द्र—उनकी तो तबियत खराब है।

गयाप्रसाद—तब तक अच्छे हो जायेंगे। और फिर यह तो सब लगा ही रहता है - कोई बीमार है—कोई दुखी है, तो कोई काम मे उलझा हुआ है। केदार बाबू की तबियत भी देख लूंगा और अवसर ठीक समझूंगा तो बरात में चलने का आग्रह भी करूंगा। आज अवसर न मिला तो निमंत्रण छप जाने पर सही!

वीरेन्द्र—केदार बाबू हैं शानदार।

गयाप्रसाद—तभी तो उनको बरात में ले जाना होगा।

तीसरा दृश्य

[स्थान—विजयनगर की सड़क पर केदारनाथ का घर। घर बड़ा है। दरवाजा बन्द है। समय प्रातः काल के कुछ उपरान्त। गयाप्रसाद आता है। दरवाजे की साकल खटखटाता है। दरवाजा खुलने पर गयाप्रसाद भीतर जाता है। भीतर कमरे में पलंग पर केदारनाथ लेटा हुआ है। उसको ज्वर है। वह निर्बल भी है, परन्तु हँसमुख है। आयु लगभग ४० साल।]

गयाप्रसाद—आज तुम अच्छे हो भाई।

केदारनाथ—हाँ, इतना ही अच्छा हूँ कि मरने के क़रीब नही हूँ। रात-भर ज्वर रहा है। अब भी है। नींद नहीं आई। दिलमें धड़कन है।

गयाप्रसाद—(हाथ टटोलकर) अरे यार, यह कुछ भी नहीं। रोग को जितना पालो, उतना ही बढ़ता है। इतने हट्टे-कट्टे होकर तुमने तो चारपाई ही पकड़ली! मैं जब उस रात आया, तब ज़रूर ज्वर कुछ अधिक था, अब तो नहीं के बराबर है। चलो-फिरो जरा हवा खाओ तो बुखार रफूचक्कर हो जायगा।

केदारनाथ—बीरू की बरात कब जा रही है?

गयाप्रसाद—बीरू क्या निमंत्रण नहीं दे गया?

केदारनाथ—दे तो गया था, परन्तु पढ़ा नहीं।

गयाप्रसाद—यह लो! तुम्हारा ही जब यह हाल है तब बरात में कौन जायगा? चला जाय बीरू अकेला—मैं तो तुम्हारे बिना जाने से रहा। (गयाप्रसाद आवेश मे कुर्सी पर हिलता है)

केदारनाथ—(हँसकर) भाई वाह! दूल्हा का बाप बरात में न जावे! खूब रहेगी बरात!!

गयाप्रसाद—दूल्हा का बाप मैं हूँ या तुम हो? मैंने तो क़सम खाली है। मैं न जाऊँगा।

केदारनाथ- (अनुनय के साथ गयाप्रसाद का हाथ थामकर) मैं जरूर चलता, पर क्या करूँ, विवश हूँ। सौ डिग्री पर तो इस समय है। रेल की यात्रा होगी, बरात का कुपथ्य, जागना, हो-हल्ला ठीक नहीं जान पड़ता। क्षमा करना गया बाबू!

गयाप्रसाद—जितने मेरे मित्र हैं, शायद ही किसी के हों। जिन जिन के पास गया, सबने कुछ न कुछ अड़चन बतलायी, किसी को फुर्सत नहीं। मै तो हाहा खाते थक गया। जी चाहता है, मर जाऊँ।

केदारनाथ—अरे यार, क्या बकते हो? शुभकार्य के समय ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए।

गयाप्रसाद—(स्वर में और अधिक क्षोभ लाकर) तब और क्या कहूँ? दस-बारह रिश्तेदार हैं, बोरू के दो-एक सहपाठी होंगे। क्या इतने से बरात अच्छी लगेगी? समधी ने स्वागत का अच्छा प्रबन्ध किया है। बिजली की रंग-बिरंगी रोशनी, सजावट, शानदार अभिनन्दन पत्र, गायन-वादन इत्यादि। और बरात होगी कुल चौदह-पन्द्रह आदमियों की। उसमें हम दोनों बाप-बेटे! बेहद किरकिरी होगी।

केदारनाथ—कब जा रही है बरात?

गयाप्रसाद—(आशा की झलक देखकर, उत्साह के साथ) कल दोपहर की गाड़ी से।

केदारनाथ—देखूँ कल तक कैसी तबियत रहती है?

गयाप्रसाद—अच्छी रहेगी, बहुत अच्छी। तुम चलोगे तो और मित्र भी तैयार हो जायेंगे।

केदारनाथ—सो कैसे?

गयाप्रसाद—जब लोग सुनेंगे कि बीमार होते हुए भी बरात में जाने के लिए उद्यत हो, तब काम की उलझनों का बहाना करनेवालों को शर्म आयगी और वे साथ हो लेंगे।

केदारनाथ—हूं।

गयाप्रसाद—हूँ यूँ नहीं, (गिड़गिड़ाकर) मैं तुम्हारे हाथ जोड़ता हूँ केदार, चलो, चलो भाई। बड़े आदमी हो। बरात में होने से हमारी शोभा बढ़ेगी—अकूती बढ़ेगी। बा० बमीलाल ने जो बरात के स्वागत का बड़ा आयोजन किया है, वह तुम्हारे सरीखे लोगों के सहयोग से ही निखर सकेगा।

केदारनाथ—(मन ही मन सन्तुष्ट होकर) क्या करूँ—क्या कहूँ ?

गयाप्रसाद—(उसी स्वर में) तुम चलोगे तो और मित्र भी निश्चय ही चलेंगे, किनर-मिनर करेंगे तो रस्सी से बाँध ले जाऊँगा। सोचो, बीरू का व्याह रोज़ रोज़ नहीं होगा !

(केदारनाथ हँसता है)

केदारनाथ—बड़े हठी हो तुम गया बाबू।

गयाप्रसाद—बस तो हाँ कर दो। सच कहता हूँ, इतनी खुशी दूल्हा को व्याह की न होगी, जितनी मुझे तुम्हें बरात में ले चलने की होगी।

केदारनाथ—और यदि कल बुखार बढ़ गया तो ?

गयाप्रसाद—कदापि नहीं बढ़ेगा। मनोबल से दृढतापूर्वक काम लो इधर मैं भी भगवान् से प्रार्थना करूँगा।

केदारनाथ—आशा तो है, ज्वर कल कम हो जाय।

गयाप्रसाद—मलेरिया है—फसली बुखार। बुखार भी कोई बीमारी है ! सब को होता है। किसी किसी को तो साल-भर में दस महीने रहता है। बुखार भी चलता है और आवश्यक काम भी चलते रहते हैं।

केदारनाथ—चलूँगा चलूँगा—क्यों जान खाये जाते हो ? कुछ निर्बलता मालूम होती है वैसे तो कोई बात नहीं। दवा खा रहा हूँ। भूख नहीं लगती।

गयाप्रसाद—(प्रसन्न होकर) तुम्हारे लिए दूध-साबूदाने का प्रबन्ध रहेगा, रेल में लेटे चलना। लड़कीवाले के यहाँ भी बरात के

डेरे में आराम से पड़े रहना। उन लोगों ने वहा वादन की अच्छी मंडली बनायी है। कन्सर्ट—कन्सर्टपार्टी।

केदारनाथ—देखूँगा—जीवन के आनन्द के लिए ज्वर कुछ बढ़ भी जायगा तो चिन्ता नहीं। चलूँगा।

गयाप्रसाद—(प्रसन्नता के अतिरेक में) अब बाईस-तेईस मनुष्य तो भी बरात मे हो जायेंगे। बसीलाल ने चालीस तक के लिए कहा था। कह देंगे और भी कम कर दिये। अब मैं जाता हूँ। लोगों को मनाते-मनूते और चलने की तैयारी कराते काफी देर लग जायगी। कल दोपहर की गाड़ी याद रखना। नमस्ते! (गयाप्रसाद जाता है)

(गयाप्रसाद सड़क पर आ जाता है उसको उसका एक मित्र मिल जाता है।)

गयाप्रसाद—(तपाक के साथ) नमस्ते, भाई साहब, तुम्हारे ही घर जा रहा था। बीरू की बरात का निमन्त्रण तो मिल ही गया होगा?

मित्र—मिल तो गया था, परन्तु यार, उलझनो के मारे नाक में दम है। क्षमा करना, बरात में नहीं जा सकूँगा!

गयाप्रसाद—कैसे न जाओगे? मैं धरना दूँगा। केदार बाबू को देखो, बिचारे अधमरे धरे हैं, परन्तु चल रहे हैं।

मित्र—केदारनाथ चल रहे हैं?

गयाप्रसाद—हां, मै तुम्हारे किसी बहाने को न सुनूँगा।

मित्र—(परवश-सा) अच्छा भाई, चलूगा। (दोनो का प्रस्थान)

चौथा दृश्य

[स्थान—नीमनगर की सड़क। सड़क चौड़ी है। उसके एक किनारे बंसीलाल का मकान। मकान के अगवाड़े का पार्श्व बिजली के रंग-बिरंगे गट्टो (बल्वों) से सजा हुआ है। उसी के तोरण, बन्दनवार बनाये गये हैं। मकान के दरवाजे पर बहुत

सजा हुआ छोटा सा मंडप है। मंडप के आगे कुछ कुर्सियां पड़ी है दूसरी ओर से बरात आ रही है। नेपथ्य में मोटरों की धूमधाम, लोगों का गुल गपाड़ा और उन सब के ऊपर पटाखों और भयङ्कर शोर करने वाली हवाइयों का विस्फोट होता है।

सड़क पर नीमनगर के स्त्री-पुरुष और बालक-बालिकाएँ तमाशा देखने के लिए इधर-उधर फिर रहे हैं। मोटरें पीछे है, गयाप्रसाद और थोड़े-से अन्य बराती मोटरों से उतर कर पैदल हो गये हैं। इन बरातियों में केदार कूलता-काखता चला आ रहा है। साथ में सोहनपाल भी है। सोहनपाल एक उद्दण्ड युवक है। वह कुछ कहने के लिए उतावला है, परन्तु उपयुक्त श्रोता न मिलने से मन मसोसकर रह जाता है। हवाइयां और पटाखों के भयङ्कर नाद के कारण नीमनगर निवासी एक अधेड़ मनुष्य व्याकुल हो जाता है। केदारनाथ भी बार बार कानों पर हाथ रख लेता है और घबरा घबरा जाता है। गयाप्रसाद के चेहरे पर कोई हर्ष नहीं है। वह थकावट और बरात के कष्टों के कारण अधीर हो चुका है। समय—रात्रि]

गयाप्रसाद—(केदारनाथ की व्याकुलता देखकर) केदार बाबू मैं आतिशबाज़ी, हवाइयां और पटाखों के बहुत विरुद्ध हूँ। माथा चटका जा रहा है इन आवाज़ों से।

केदारनाथ—(क्षोभ के साथ) फिर किस के कहने से यह तूफ़ान खड़ा हो गया ?

गयाप्रसाद—मैंने तो सगुन के एक पटाखे और एक फूल ही के लिए कहा था। यह सब बंसीलाल की मूर्खता है। खाने के लिए अभी तक फीकी चाय और दो दो समोसों के सिवा और कुछ दिया नहीं, अब धूल, धुएँ और धड़ाकों से प्राण लिये लेता है।

नीमनगर निवासी एक अधेड़—(अपने साथियों को सुनाता हुआ।) सत्यानाश जाय इस बरात का। हवाइयों और पटाखों ने कान फोड़ डाले। मकान हिल गये हैं ये सुधारक बने फिरते हैं। राम करे इन पटाखों की तरह ये भी सब फूटकर मर जायें।

(गयाप्रसाद की तरेरी हुई आंख को देखकर वह अधेड़ भीड़ में गायब हो जाता है। दु:खी होने पर भी केदारनाथ के चेहरे पर मुस्कराहट आ जाती है। सोहनपाल मन ही मन प्रसन्न हो जाता है)

सोहनपाल—यदि बसीलाल या किसीलाल के हाथ मे ज्वालामुखी और भूकम्प होते तो वह उन सब को भी बांध-पकड़कर इस शोर-गुल के अखाड़े में ला उतारते।

केदारनाथ—(खांसते-खूखते, परन्तु हँसते हुए) और सामने जो पूरे बिलजी घर को लाकर खड़ा कर दिया है, उसका मुकाबला कौन करता? सोहन, बतलाओ, नहीं तो धोखा खाओगे।

सोहनपाल—(ओठ दबाकर हँसाने की इच्छा से) पुच्छल तारों को पकड़ लाते, पुच्छल तारों को।

गयाप्रसाद—(क्रोध का दमन करके, जबरदस्ती मुस्कराते हुए) ज्वालामुखी, भूकम्प और पुच्छल तारों से बरात का क्या होता भाई सोहनपाल?

सोहनपाल—(गयाप्रसाद को मुस्कराहट के भीतर छिपे हुए क्रोध को न देखकर) बाबू जी, सम्मान, सत्कार, शोभा—शोभा बढ़ती बरात की, शोभा।

गयाप्रसाद—(गम्भीरता के साथ) लड़की वाले के घर के निकट पहुँच रहे हैं, अब चुप रहो।

(हवाइयों के छूटने का फिर शोर होता है)

भीड़ में किसी का स्वर—सत्यानाश जाय बरात का, मर जायँ सब बराती, शहर मे आग लगाने को फिरते हैं हत्यारे, मकान पटकने को आततायी।

केदारनाथ—गया बाबू, मेरी तबियत बहुत खराब हो रही है। किसी मोटर से डेरे पर भिजवा दीजिए मुझको। दिल बहुत धड़क रहा है दर्द हो रहा है।

(गयाप्रसाद को द्वारचार के दस्तूर की अधिक चिन्ता है, इसलिए वह अनसुनी करता है)

गयाप्रसाद—(सोहनपाल से) अब निकट आ गए हैं। बीरू को मोटर पर से उतार लाओ।

सोहनपाल—केदार बाबू को सँभालिए, उनकी तबियत ज्यादा खराब हो रही है। दूल्हा तो आ ही जायगा। कहा जाता है?

गयाप्रसाद—(क्षुब्ध होकर) तुम सिवाय हँसी ठठोली के और कुछ करना नहीं जानते। जाओ, उसको लिवा लाओ।

सोहनपाल—(जाते जाते) उन्हें देखिए—केदार बाबू ढेर हुए जा रहे हैं। (प्रस्थान)

केदारनाथ—मैं मर रहा हूँ गयाप्रसाद, मुझको घर भेज दो।

गयाप्रसाद—घर केदार बाबू? घर तो बहुत दूर है। और फिर बरात का क्या होगा? ब्याह क्या होगा किसके साथ भेज दूँ? सब फीका हो जायगा, सब किरकिरा।

(केदारनाथ गिर पड़ता है। उसको गयाप्रसाद उठा लेता है। गयाप्रसाद चिन्तित है।)

केदारनाथ—मैं चाहे मर जाऊ, पर तुम्हारा मज़ा किरकिरा न होने पाए।

(सोहनपाल वीरेन्द्र को लेकर आता है। वीरेन्द्र दूल्हा के वेष में है। सोहनपाल केदारनाथ की बात सुन लेता है।)

सोहनपाल--जीना मरना तो लगा ही रहता है, परन्तु आप स्वस्थ हो जायँगे।

गयाप्रसाद—मै तुमको डेरे मे लिटाए देता हूँ। आराम मिलेगा।

(गयाप्रसाद केदारनाथ को ले जाता है। बरात धीरे धीरे बंसीलाल के मकान की ओर बढ़ती है।)

वीरेन्द्र—तुम कभी-कभी बढ़ जाते हो। कुछ तो लिहाज़ किया करो।

सोहनपाल—वह मुझको नहीं छोड़ते, मैं उनको नहीं छोड़ता। वह सचमुच नहीं मरेंगे, हम तुम चाहे मर जायँ। और हम तुम मर जायँ,—इस शहर का एक बदमाश कहता ही था—तो भी शोभा, बरात की शोभा, अजर और अमर रहेगी। (हँसता है)

(गयाप्रसाद थका-मादा और चिन्तित आता है)

गयाप्रसाद—(सोहनपाल को हँसता हुआ देखकर कुछ उत्साहित होता हुआ) तुम बीरू को द्वारचार के लिए उधर ले जाओ। हम लोग सभा मे आ बैठते हैं। द्वारचार के बाद यहीं लिवा लाना।

सोहनपाल—यदि वह वहीं खो गया तो आपके पास अकेला आ जाऊँगा।

गयाप्रसाद—(सोहनपाल की पीठ ठोककर) तुम बड़े पाजी हो। जाओ, ले जाओ।

(सोहनपाल और वीरेन्द्र जाते है)

(गयाप्रसाद बरातियों सहित कुर्सियो पर बैठ जाता है)

(बंसीलाल आता है। वह अधिक थका हुआ नही है। रूखे ओठो पर क्षीण मुस्कराहट लाकर, हाथ जोड़े हुये गयाप्रसाद के सामने खड़ा हो जाता है।

बंसीलाल—(गयाप्रसाद को बड़प्पन देने और अपने को छोटा समझे जाने की लालसा से) आपकी आज्ञा के अनुसार मैंने प्रत्येक नेग-दस्तूर एक-एक चवन्नी का रखा है। चाहता था एक-एक रुपये का तो रखता, परन्तु आप तो कठोर सुधारवादी हैं।

(गयाप्रसाद का अन्तर्मन क्रुद्ध हो जाता है, परन्तु वह ऊपर से मुस्कराता है।)

गयाप्रसाद—बाबू साहब, आपने अच्छा ही किया। सुधरे हुए समाज के सामने मुझको मुँह दिखलाने योग्य रखा। विराजिए न।

बंसीलाल—(मुस्कराहट को लम्बा खींचकर) मैं बराबरी से कैसे बैठ सकता हूँ? लड़की के हाथ पीले ही तो कर पाऊँगा।

(वादन-समाज का प्रवेश। समाज वाले अपने वाद्य साथ लाते हैं।)

बन्सीलाल—और थोड़ा सा प्रमोद हमारे नगर के ये सहयोगी पेश करते हैं।

गयाप्रसाद—ब्याहों में धूम-धड़ाके की जगह यदि यह प्रमोद पकड़ ले तो कितना अच्छा हो (बनावटी क्रोध के साथ) मैंने आपसे सगुन के एक पटाखे के लिए विनय की थी, आपने आतिशबाजी का तूफान खड़ा कर दिया।

एक बराती—अरे भाई, लोग कैसे जानते कि विजयनगर की बरात आई है।

गयाप्रसाद—(हँसकर) हां, आप लोगों का मन जो रखना था।

(वादन-समाज वाले एक गत बजाते हैं। उसकी समाप्ति पर वीरेन्द्र और सोहनपाल आते हैं, उन दोनों को आव-भगत के साथ बिठलाते हैं। इसके बाद स्त्री वेशधारी एक पुरुष और बड़ी मूँछों वाला चेहरा लगाये हुए दूसरा पुरुष, घुंघरू बांधे हुये, एक ढोलकी वाले के साथ आते हैं।)

वंसीलाल—ये लोग जन-नृत्य, फोकडान्स, दिखलायेंगे।

कुछ बराती—अवश्य.

सोहनपाल—(वीरेन्द्र से) हे भगवान ! क्या विहगम औहब दृश्य है। फोकडान्स ! जन-नृत्य !!

(वे लोग नाचते है। नृत्य की समाप्ति पर चले जाते है)

सोहनपाल—(वीरेन्द्र से) यदि जन-नृत्य इस बन्दर-कूदनी और कपि-मुद्रा का नाम है तो निकला कला का कचूमर।

गयाप्रसाद—सोहन, तुम भूलते हो। जन-भावना के साथ इस जन नृत्य को देखना चाहिए। फिर अनुभव करोगे सरल, सच्चे आनन्द को।

सोहनपाल—(अपनी आलोचना की प्रत्यालोचना को सहन न करके) क्षमा करिएगा बाबूजी, जिस वेश्या-नृत्य को हम लोगो ने ब्याह बरातो से निकाल दिया है, वह क्या कुछ इसी प्रकार की भावना से नही देखा जा सकता था ? उसमे भी कुछ कला थी !

गयाप्रसाद—बकते हो। वह कला दुराचार फैलाने वाली थी।

सोहनपाल—जाने दीजिए।

वंसीलाल—बस बस, (मुस्कराकर और आखे निकालकर) आजकल के लडके मु ह लग जाते हैं।

सोहनपाल—(ओठ सटोकर) जी।

(एक घबराये हुए व्यक्ति का प्रवेश)

घबराया हुआ व्यक्ति—बहुत बुरा समाचार है—बहुत घोर ! भयानक !!

गयाप्रसाद—(अचानक खड़े होकर) क्या हुआ ? क्या है ?

व्यक्ति—बारात के डेरे मे जो एक बाबू बीमार थे उनका देहान्त हो गया है। नाम केदारनाथ बतलाया गया है। था न ?

(गयाप्रसाद भर भराकर कुर्सी पर वैठ जाता है।)

गयाप्रसाद—(भराए हुए गले से) ओफ़ ।

वीरेन्द्र—(सोहनपाल से) असल में उनको बरात में लाना ही नहीं चाहिए था ।

गयाप्रसाद—बरात चलने के पहले उनका ज्वर बिलकुल उतर गया था । उनकी स्वय इच्छा बरात में आने की थी । इसलिए वह चल पड़े । मैने कोई ज़बरदस्ती नहीं की थी ।

एक बराती—जबरदस्ती तो आपने किसी के साथ नही की ।

सोहनपाल—अन्त में इस नगर वाले उस मनहूस का शाप सफल होकर ही रहा । कहता था—सत्यानाश हो जाय इस बरात का । सो आरम्भ तो हो गया ।

गयाप्रसाद—चुप भी रहोगे या नहीं? दिल्लगी के लिए समय-कुसमय कुछ नहीं देखते ।

एक बराती—अब केदारनाथ के दाह का प्रबन्ध यहीं करोगे ? या शव को घर ले चलोगे ?

गयाप्रसाद—(केदारनाथ के शव की समस्या पर क्षुब्ध अधिक और विह्वल कम होकर) बहुत परेशान हू, क्या करूँ ? सारा ब्याह अभी सामने रखा है और यह क्या असमय विपद सामने आयी ?

सोहनपाल—यदि वह घर पर जाकर मरते तो बहुत अच्छा होता, बरात की सुन्दरता में कोई अन्तर न आता ।

बन्सीलाल—(अनसुनी करके) जो कुछ करना हो, जल्दी करिए । भावर का मुहूर्त नहीं टलना चाहिए ।

सोहनपाल—तो क्या किया जाय—लाश को कहीं कूड़ा-घर में फेंक दें ?

बन्सीलाल—आप बहुत उद्दण्ड हैं । आपको अपनी सीमा के भीतर रहना चाहिए ।

(गयाप्रसाद का क्षोभ सोहनपाल पर आसन न जमाकर बन्सीलाल पर उतरना चाहता है; किन्तु उसको अपने सुधारवादी अभ्यास का स्मरण हो आता है, उसका क्षोभ कुछ दब जाता है।)

गयाप्रसाद—बा० बन्सीलालजी, सोहनपाल में लड़कपन की छिछोरी जरूर है, परन्तु वह कहता ठीक है। लाश को डाकगाड़ी से किसी के साथ भेजता हूँ। आप भावर का प्रबन्ध कीजिए।

सोहनपाल—डाकगाड़ी वाले लाश को जब अपने साथ जाने दें तब तो!

गयाप्रसाद—तो वह मोटर में इसी समय जायगी। (बन्सीलाल मुँह लटका लेता है।)

गयाप्रसाद—(क्रुद्ध होकर) आप चिन्ता न करें बाबू साहब। मोटर का किराया, पैट्रोल का दाम मैं दूँगा।

बन्सीलाल—मै किस योग्य हू। लड़की के हाथ पीले करने जारहा हूँ—

गयाप्रसाद—(क्षोभ की दौड मे टोककर) आपसे कोई ठीक-ठहराव मैंने नहीं किया। मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिए। मैं उसके बिलकुल विरुद्ध हू। मैं आपका एक पैसा नहीं चाहता। जैसे ब्याह का सारा खर्चा झेला है, वैसे ही इस खर्च को भी सह लूगा कोई मागना या भिखारी नहीं हूँ।—

बीरेन्द्र—बाबूजी—

गयाप्रसाद—(क्षोभ को संभालकर) नहीं, मैं तो सीधी-सी बात कह रहा हूँ। (बन्सीलाल को लौ-सी भरी आख से देखता है।)

बन्सीलाल—मैंने तो कुछ भी नहीं कहा। लड़कीवाला हूँ, कह भी क्या सकता हूँ। मोटर हाजिर है। बा० केदारनाथ के शव को भेज दीजिए। पैट्रोल का भी प्रबन्ध है। आपको कोई चिन्ता नहीं करनी पड़ेगी। केवल यह प्रार्थना है कि भावर की सायत न चूकने पावे।

(गयाप्रसाद स्वीकृति-सूचक सिर हिलाता है।)

पाँचवाँ दृश्य

[स्थान – नीमनगर की एक सड़क पर जरा बड़ा-सा मकान इसी में वीरेन्द्र की बरात का डेरा है। दरवाजा खुला है। केदारनाथ का शव मोटर से भेजा जा चुका है। भाँवर भी पड़ चुकी है। पंच डेरा, नोटाटी का नेग होना शेष है। बन्सीलाल नाते-दारों, लड़कों और ब्राह्मणों को लेकर आता है। वे मकान के भीतर हैं मकान के एक बड़े कमरे में गयाप्रसाद इत्यादि बराती स्वागत के लिए पहले से तैयार हैं। लड़की पक्ष के लोग एक ओर बैठ जाते हैं। समय–दिन]

बन्सीलाल—(मुस्कराते हुए, परन्तु उसकी मुस्कराहट के साथ उसकी आँखों के गड्ढे नहीं निकल रहे हैं) इस अवसर पर समधी को नहीं आना चाहिए, परन्तु आप सुधारवादी हैं और मेरी धारणा है कि परस्पर प्रेम बढ़ाने के लिए सभी अवसरों का हम लोगों को उपयोग करना चाहिए। सेवा में एक अभिनन्दन-पत्र भी भेंट करना है। होना तो चाहिए था द्वारचार के भी पहले, परन्तु उधर हम लोग बहुत व्यस्त रहे, इधर वह दुर्घटना हो गयी।

(उसके 'व्यस्त' शब्द के अर्थ में किसी भारी भरकम तैयारी का दम्भ समझकर—क्योंकि बरात छोटी थी और खातिरदारी कोई बड़ी नहीं हुई, बिजली की रोशनी और पटाखों धूम-धड़ाकों की स्मृति के साथ मना-मनाकर लाये हुए एक मित्र बराती का देहावसान संयुक्त होने की कल्पना करके गयाप्रसाद को ग्लानि होती है, परन्तु वह उसको अप्रकट रखता है।)

गयाप्रसाद—जी ·· ई। प्रेम एक, हृदय से दूसरे हृदय की ओर बढ़ता ही है।

एक लड़का अभिनन्दन-पत्र पढ़ता है —

आप आकाश है, हम पाताल के एक ढेले। आप सागर हैं, हम एक क्षुद्र डाबर। आप गंगा नदी हैं, हम एक छोटे से नाले। आप हिमालय हैं, हम एक छोटी सी टेकड़ी। आप विशाल वट-वृक्ष हैं, हम एक छोटे से तिनके। आप महान् है, हम लाघव से भी लघु। हम आपका अत्यन्त स्नेह के साथ स्वागत करते हैं। (लड़का गयाप्रसाद को अभिनन्दन-पत्र भेंट करके बैठ जाता है।)

ब्राह्मण—आप दशरथ हैं। बड़ी यात्रा के कष्ट सहकर आये हैं। हमारे जनकजी ने आपका कोई सत्कार नही कर पाया।

बन्सीलाल—मैं तो कुछ भी नहीं कर सका। लड़की के केवल हाथ पीले कर दिये हैं।

(वीरेन्द्र सोहनपाल को उत्तर देने के लिए संकेत करता है। गयाप्रसाद देख लेता है। वह भी सोहनपाल को बोलने के लिए उकसाता है।)

गयाप्रसाद—सोहनपाल, तुम वैसे तो बहुत चबड़-चबड़ किया करते हो, इस अवसर के अनुकूल तुम भी कुछ कहो।

बन्सीलाल—(बरबस मुस्कराते हुए, आँख फाड़कर) बरात और ब्याह की शोभा तो लड़के ही होते हैं।

सोहनपाल—एड्रेस, अभिनन्दन की प्रथा बहुत अच्छी चल पड़ी है। लड़कीवाला छोटा और लड़केवाला बड़ा यह कल्पना हमारे रक्त के कण-कण के परमाणु-परमाणु में है।

बन्सीलाल—सो तो ठीक ही है। सुन्दर है बाबू!

सोहनपाल—जिन्होंने लेन-देन, ठीक-ठहराव, दहेज इत्यादि को बन्द कर दिया है, वे खातिर चाहते हैं। स्वाभाविक है।

बन्सीलाल—आज का भोज मैं बरात के डेरे पर ही देना चाहता हूँ, आप मेरे घर कष्ट न करें।

गयाप्रसाद—यानी आप हम लोगों को यहा के यहीं अपने शहर से बाहर कर देना चाहते हैं, निकाल देना चाहते हैं। आप बड़े आदमी हैं न! (क्रुद्ध स्वर में) हमारा अपमान मत कीजिए।

बन्सीलाल—(दबे हुए क्षोभ के साथ) मैंने अपमान किया है? इतनी खुशामद, इतनी खातिरदारी के बाद भी अपमान! आप कहते क्या हैं! घर पर बुलाने से बिदा के प्रबन्ध में गड़बड़ होने की आशंका है।

गयाप्रसाद—ओहो! बड़ी भारी बिदा करनी है न! यहीं भोजन भेजना रिवाज़ के विरुद्ध है।

वीरेन्द्र—बाबूजी, सोहनपाल को अभी कुछ कहना है।

गयाप्रसाद—(संयत होकर) हां, हां।

सोहनपाल—मुझको अभिनन्दन का उत्तर पूरा करना है। जरा धीरज धरिए। आप चौड़ी सड़क हैं, हम केवल एक छोटी-सी पगडंडी। आप बड़े भारी ढोके हैं, हम एक छोटे से कंकड़। आप बड़े भारी गेहूं हैं, हम केवल भूसा। आप तूफान हैं, हम महज पंखे की हवा। आप डाकगाड़ी, नहीं बड़ी लम्बी मालगाड़ी हैं, हम केवल छकड़ा। आप शकर हैं, हम नीम की निबौरी। कहां आपके पलंग और कहां हमारी भूमि—

गयाप्रसाद मन ही मन प्रसन्न होता है, परन्तु ऊपर से रोष प्रकट करता है। लेकिन इस अभिनय को निभा नहीं पाता है)

गयाप्रसाद—हो गया जी, बहुत हुआ। वही सब पुरानी बातें; उनको अभिनन्दन का नया रूप दे दिया गया है। हमारी जाति में लड़के अन्त्याक्षरी और बेतबाजी किया करते थे। वह इससे कहीं अधिक मनोरंजक होता था। (हंस पड़ता है।) और भी कुछ होता था—

सोहनपाल—बेतबाजी अर्थात् घूंसा, डंडा और—

गयाप्रसाद—(बनावटी क्रोध के साथ जो हंसी का विरोध नहीं कर पाता) चुप, चुप। बेतबाजी का मतलब है कविताबाजी। तुमने बिना तुक की कविता कर तो डाली—आप लम्बी मालगाड़ी, हम केवल छकड़े। आप शकर, हम नीम की निबोरी!! ह। ह!! ह।!!

बन्सीलाल—(रुखाई के साथ, परन्तु मुस्कराकर) आप भी लड़कों में शामिल हो गये।

सोहनपाल—क्यों न हों बाबू साहब? स्टेशन पर उतरने के बाद ही एक एक कटोरी असली चाय मिली, मिर्चों से भरे दो दो समोसे मिले। खुमारीवाली पूड़ी!! खमीरदार साग!! लोचवाला अचार!!!! और छलकता हुआ दही!!!!

एक बराती—और कचौड़ी?

सोहनपाल—और कचौड़ी इतनी खस्ता कि दातों को खस्ता कर दे।

बन्सीलाल—(क्रोध को निस्सीम प्रयत्नसे दबाकर) सब सामान हलवाई के यहां बनवाया गया था। पूरे दाम दिये हैं। मैं नहीं जानता था कि वह इतना बड़ा गधा है।

गयाप्रसाद—इस शहर में क्या वही हलवाई एक गधा है या और भी कोई? (बराती हंस पड़ते है)

बन्सीलाल—(क्रोध के दमन मे अशक्त होकर) देखिए, हमने अपनी लड़की दी है इज्जत नहीं दी है।

(वीरेन्द्र वहां से उठकर चला जाता है।)

गयाप्रसाद—इस शहर में गधे ही नहीं, बल्कि गँवार भी बहुत जान पड़ते हैं।

एक बराती—हम गँवारी का इलाज जानते हैं।

बन्सीलाल—कौन गँवार है, इसके प्रमाणित करने की जरूरत नहीं है। कान खोलकर सुन लीजिए। मैंने पैर पूजे हैं, पीठ नहीं पूजी है।

बराती इस चुनौती का तात्पर्य समझकर उठ खड़े होते हैं, सोहनपाल बीच में आ जाता है-।)

सोहनपाल—आप आकाश हैं, ये पाताल! आप हिमालय हैं, ये एक टेकड़ी। आप बड़ के पेड़ हैं, ये तिनके। अन्तर बनाये रखिए, दूर रहिए। निकट के संघर्ष में मामला निरन्तर हो जायगा। कुछ बराती और घराती बीच बिचाव करते हैं।)

बंसीलाल - (रूयत होकर कुछ बीच में फुफकार-सी छोड़ता हुआ) लड़की वाले को नीच, हेटा, गिरा हुआ समझा जाता है। परन्तु मैं ऐसा नहीं हूँ। सारा नगर मुझको मानता है। आप लोग मुझको धूल में मिलाना चाहते हैं!

सोहनपाल—आपके अभिनन्दन-पत्र को कोई सार्थक नहीं करना चाहता, विश्वास रखिए। आप लोग बनावटी व्यवधान को समाप्त करके अपने असली रूप में आ गए। यह संसार के इतिहास की कोई अनहोनी घटना नहीं है। अब विदा के शुभ-कार्य को पूरा करिए। क्योंकि सारी आतिशबाजी और साग-तरकारी तथा भोग-ब्यारी में वही एक असली तथ्य की बात है।

बंसीलाल—(बिलकुल ठण्डा होकर) मैं क्षमा चाहता हूँ। कोई अपशब्द निकल गया हो तो क्षमा कीजिएगा।

गयाप्रसाद—(विचारपूर्वक) पैर पूजे हैं, पीठ नहीं पूजी है! हूँ! हम लोगों को पीटना चाहते थे!!!

बंसीलाल—क्षमा कीजिए। मैं हाथ जोड़ता हूँ—न मालूम इस अभागी जीभ से क्या से क्या निकल गया! —

गयाप्रसाद—कुछ और निकलता तो यह जनवासा अखाड़ा बन जाता, परन्तु जिस तरह मैंने ठीक-ठहराव लेन-देन दहेज आदि सब छोड़ा, बरात का किराया तक गांठ से दिया, उसी तरह आपकी अभद्रता को भी उपेक्षा के साथ छोड़ता हूँ। बिदा की तैयारी करिए। जाइए।

बंसीलाल—भोजन यहीं भेज दूं या, मेरी कुटिया पर ग्रहण कीजिएगा ?

गयाप्रसाद—यहां भोजन का कराया जाना प्रथा के प्रतिकूल होगा। क्या आपके यहां की स्त्रियां अपने हाथ से रसोई नहीं बनातीं ?

बंसीलाल—अभी कहां। इसलिए हलवाई के यहां प्रबन्ध करना पड़ा।

गयाप्रसाद—(पूरी शांति स्थापित करने की आकांक्षा से ओठों पर मुस्कराहट लाकर) यदि हो सके तो समधिन साहब के हाथ की बनी रसोई खाऊंगा।

सोहनपाल—परन्तु उसमें खुमारी, खमीर और लोच कहां से आयगा ?

गयाप्रसाद—(वास्तविक क्रोध के साथ) चुप, चुप !

बंसीलाल—लड़के हैं—आजकल के लड़के !

(सोहनपाल कुछ कहना चाहता है; परन्तु उसे मन में दबाकर रह जाता है। बंसीलाल अपने साथियों सहित जाता है।)

छठवां दृश्य

[स्थान—नीमनगर में सड़क पर बंसीलाल का मकान। नेपथ्य में मोटरों की भड़भड़ और शहनाई। शहनाई के साथ बरातियों का प्रवेश। समय—सन्ध्या। बरातियों के आते ही उनके लिए कुर्सियां डाल दी जाती हैं। वीरेन्द्र और सोहनपाल पास बैठ जाते हैं। शहनाई वाले भीतर चले जाते हैं।]

गयाप्रसाद—विदा का शीघ्र प्रबन्ध होना चाहिए। नहीं तो दूसरी गाड़ी भी चूक जायगी। भोजन करते-कराते एक तो चूक ही गई।

एक बराती—तो क्या होगा ? हरि अनन्त, हरिकथा अनन्त। समय अनन्त है। रेलगाड़ियां अनन्त हैं—एक जाती है, दूसरी आती है।

दूसरा बराती—हां, हां! तब तक एकाध फालतू बराती और टैं हो जायगा।

सोहनपाल—बरात की शोभा बनी रहे, बराती जैसे यहां मरे, तैसे घर मरे।

(बंसीलाल आता है)

बन्सीलाल—थोड़ी सी देर और है। क्या करूं स्त्रियों के मारे विवश हूँ। उनके नेग-दस्तूरों की कोई सीमा ही नहीं।

सोहनपाल—बाबू साहब, सीमा तो केवल विचारे-जीवन की है।

बन्सीलाल—(अपनी बात के उत्तर में किसी की न सुनकर सन्तोष के साथ) आप विकट शब्दों का व्यवहार करते हुए भी बात सार की कहते हैं। गद्य में ही कुछ कविता सुनाइए।

गयाप्रसाद—जिसमें रेलों पर रेलें आती रहें और चूकती रहें !! ह !! ह !!! (इस बेतुकी हँसी पर बन्सीलाल के चेहरे पर फिर रुखाई आ जाती है।)

बन्सीलाल—मैं भीतर जाकर स्त्रियों को झझोड़ता हूँ, तब तक बरातियों के तिलक की रस्म पूरी कर दूं।

(बन्सीलाल सब बरातियों को एक-एक रुपया भेंट करता है और वे ले लेते है। अन्त में वह सोहनपाल के पास जाता है और उसकी ओर रुपया बढ़ाता है।)

सोहनपाल—मुझे इस डाइ से मुक्त रखिए। ठीक-ठहराव, दहेज, लेन-देन जाते जाते भी इस पुछल्ले को छोड़े जा रहा है।

गयाप्रसाद—स्वीकार करो, सोहन ! यह भेंट इनके दरवाज़े की शोभा है।

सोहनपाल—बाबूजी, दरवाजे की शोभा किवाड़ होते हैं या एकाध बराती ठण्डा हो जाय तो वह दरवाजे और बारात की शोभा बन सकता है। मैं तो अपनी हड्डी-पसली को घर समूची ले जाने का पक्षपाती हूँ।

वीरेन्द्र—बड़े लफंगे हो।

सोहनपाल—यह सनद मुझको बा० बन्सीलाल जी से मिलनी चाहिए थी, न कि तुमसे।

बन्सीलाल—(सच्ची मुस्कराहट के साथ) कोई न कोई सनद तुमको दूंगा अवश्य भाई साहब, परन्तु तुम्हारी एकाध चिटपिटी सुनकर।

सोहनपाल—चलते समय सुनाऊँगा। अतुकान्त नहीं, तुकान्त कविता। (सोहनपाल रुपया नहीं लेता। बन्सीलाल वधू की बिदा के लिए भीतर जाता है।)

वीरेन्द्र—तुम और कविता ! लू की लपेट में ओले ! तुम तो बहकी बहकी कहते रहो।

सोहनपाल—बहुत से कवि जो कविता करते हैं, वह क्या है ? बौखलाया हुआ गद्य ! मैं जो कुछ कहूँगा, वह बे-सिर-पैर का न होगा।

वीरेन्द्र—क्या कहेगा भलेमानस, मुझको भी सुना दे।

सोहनपाल—जो कुछ कहूगा, बिलकुल सही और वास्तविक, पुराने बोल की।

(बन्सीलाल आता है)

बन्सीलाल—आपकी गाड़ी न चूकेगी। बिदा होने में केवल एक घण्टे की देर है।

सोहनपाल—केवल एक घण्टे की। इसके बाद हम लोग एक घण्टे मे अपने डेरे पर पहुचेंगे, फिर केवल एक घण्टे उपरान्त स्टेशन। तब तक केवल दो गाड़िया चूक जायँगी। फिर बरातियों का केवल डेरा, बिना पलग-चारपाई की सुनसान रात और सवेरे केवल एक गाड़ी। वह भी यदि एक कटोरे शुद्ध चाय और केवल दो समोसों के फेर मे चूक गयी—तो बस हिमालय पर्वत और छोटी-सी टेकड़ी के अन्तर पर आखें टक-टकाते रहें!

बन्सीलाल—(लाज के साथ) जनवासे मे पलग-चार-पाई नहीं पहुंची! आप लोगों ने कहलवाया भी नहीं!! मैने प्रबन्ध तो कर दिया था।

एक बराती—पलग-चारपाइयों को हलवाई पकाने से भूल गया होगा। ह! ह!! ह!!!

(बन्सीलाल माथा ठोककर सिर नीचा नवा लेता है।)

गयाप्रसाद—(समधी के इस प्रायश्चित से सन्तुष्ट न होकर) खैर, कोई बात नहो। बिदा की जल्दी करवाइए।

सोहनपाल—जी हां, बात तो कुछ नहीं। अब उस कविता को सुन लीजिए.—

भूमि परन भूखन मरन जो बरात की हेत,
घर सो टेर बुलायके, फेर खबर नहि लेत।
फेर खबर नहिं लेत, कलेवा देत के देतइ नहिंया,
धरें गठरिया मूड़ बात कोउ पूँछत नहिंया।
कह गिरधर कविराय बरैं जो ईधक बीधौ,
घरै पहुच पै पायँ देहिं ब्राह्मण खों सीधौ।

(बन्सीलाल प्रयत्न करने पर भी हँसी को नहीं रोक पाता)

बन्सीलाल—यह फबती हमारे समधी साहब पर जाकर कसती है।

सोहनपाल—तो आप केवल यही सनद देते हैं ?

(गयाप्रसाद की समझ मे नहीं आता कि दहेज ठीक-ठहराव इत्यादि को छोड़ देने पर भी कुछ और भी त्याग की जरूरत है या बाकी रहती है ।)

(भीतर शहनाई बजती है ।)

बन्सीलाल – अब विदा मे विलम्ब नही है ।

सोहनपाल—अच्छा ! ओह !!

गयाप्रसाद—तुम फूहड़ हो ।

वीरेन्द्र—नि सन्देह ।

सोहनपाल—बड़ी बात है, बरात की शोभा बनने से तो बच गया !

सातवां दृश्य

[स्थान—संगमपुर विश्वविद्यालय के भवनो की बाहर की सड़क के किनारे दूब मैदान । निर्मला और वीरेन्द्र स्नातक (ग्रेजुएट) की टोपी और चोगा पहने हुए आते है। वे अपनी सनद हाथ मे लिये हुए है। समय मध्यान्ह के कुछ समय बाद ।]

वीरेन्द्र—उस दिन सध्या समय इसी स्थान पर तुम्हारा गीत सुना था—पवन तू डाल सुरभि झोली मे । कितना मधुर था, कितना मोहक । एक बार फिर गाओ ।

निर्मला—वह सध्या थी, यह दोपहर है । वह अँधेरा था, यह उजाला है । उस समय पवन में झूल रहे थे, अब ठोस पृथ्वी पर पैर रख रहे हैं । उस समय तारों के धुँधले प्रकाश मे गीत ही गीत था, अब सामने जीवन की सचाई ही सचाई है ।

वीरेन्द्र—तो क्या जीवन की सचाई और मन के गीत का मेल नहीं निभ सकता !

निर्मला—क्यो नही निभ सकता ? परन्तु तुम जब निभने दो तब न !

वीरेन्द्र—मै कोई वाधा नहीं डालूगा । जैसा रहन-सहन रखना चाहो, रखो । तुमको इतने दिन मे मेरी प्रकृति मालूम हो गई । सन्देह क्यों करती हो ?

निर्मला—मै तुम्हारी ही तरह विश्वविद्यालय की स्नातक हो गई हूँ । तुम निर्वाह के लिए कुछ न कुछ काम करोगे । मै भी उपार्जन के लिए कुछ करना चाहती हूँ । स्वीकृति दो ।

वीरेन्द्र—मेरे होते हुए तुम क्या कोई नौकरी करोगी ? यह कैसे सम्भव है ?

निर्मला—तभी मैने कहा—तुम निभने दो तब न । स्त्री को समान पद देने के पक्षपाती हो, हो न ?

वीरेन्द्र—बिलकुल । सन्देह के लिए कोई स्थान ही नहीं । मै अकेला क्या, मेरे सरीखे विचार वाले, और भी अनेक हैं ।

निर्मला—परन्तु तुमने या तुम-सरीखे विचार वालों ने केवल उदारतावश वह भावना बनाई है । उदारता का पाया बहुत प्रबल या स्थायी नहीं होता । स्त्री की दुर्दशा का कारण उसकी आर्थिक परतन्त्रता है । जहा उसको आर्थिक स्वावलम्बन मिला नहीं, वह स्वाधीन हुई ।

वीरेन्द्र—मेरे मित्र, पिता जी, पड़ौसी क्या कहेंगे ?

निर्मला—'क्या कहेंगे' की शंका ने ही स्त्री को पुरुष की उदारता के होते भी गिरा रखा है । तुमको क्या इसके समझाने की भी आवश्यकता है ?

वीरेन्द्र—कहा नौकरी करोगी ? मै रहूँगा विजयनगर में और तुम न जाने किस नगर मे नौकरी करोगी ? असंभव ।

निर्मला—इस बाधा को में भी अनुगत कर रही हूँ । असल में यह हमारी शिक्षा का दोष है । किसानों और मजदूरो की स्त्रिया अपने अपने पुरुषो के साथ रहकर जीवन-निर्वाह के उपायों में उनका हाथ बटाती हैं । पढी लिखी न होने पर भी वे हम लोगों की अपेक्षा अधिक

स्वाधीन हैं। स्त्रियों की शिक्षा में यदि घरू, शिल्प, उद्योग और धन्धे सिखलाए जायँ तथा डाक्टरी इत्यादि पढाई जाय तो समस्या सहज हो सकती है। मै विजयनगर मे ही नौकरी करूगी। किसी पाठशाला में, क्योंकि यह सनद और कोई काम नही दिलवा सकती। (मुस्कराकर) अब तो तुमको कोई इनकार नहीं ?

वीरेन्द्र—(सोचते हुए) इसमे तो कोई विशेष बाधा नहीं, देखू, वह सनकी सोहनपाल क्या कहता है ?

निर्मला—तुमको बधाई देगा। उसकी सनक मे सार है।

वीरेन्द्र—मैं तुम्हारे हठ को समझ गया। उसका आदर करूगा। अब वह गीत गा दो। हो गया न जीवन की सचाई और मन के गीत का मेल !

निर्मला—(मुस्कराकर) अच्छा, पर धीरे-धीरे। नहीं तो सारे स्नातक यहीं दौड़े चले आयेगे।

(दोनो का गाते-गाते प्रस्थान)

❀ यवनिका ❀

लो भाई, पंचो ! लो !!

परिचय

चिरगाव के निकट भरतपुरा ग्राम में मेरे मित्र और सहपाठी श्री फूलचन्द पुरोहित रहते थे। लगभग पाच साल हो गए उनका देहान्त हो गया।

इस नाटक मे वर्णित घटना का मूलरूप श्री फूलचन्द पुरोहित ने मुझको बतलाया था। घटना किस गाव और किस समय की है, यह उन को नहीं मालूम था। परन्तु उन्होंने इस घटना का एक पञ्चायत में प्रभाव शाली उपयोग किया।

चिरगाव से ४, ५ मील की दूरी पर घुसगवां नाम का एक गाव है। वहा किसी का बच्चा मर गया। एक गाव वाले पर आरोप लगाया गया कि उसने मन्त्र जन्त्र करवा कर बच्चे को मरवा डाला है। कहा गया कि मन्त्र जन्त्र चिरगाव के एक मुसलमान से करवाया था। यह व्यक्ति मेरे जङ्गल-भ्रमण मे काफी दिनों साथ रहा है। मुझको आश्चर्य हुआ क्या यह मन्त्र जन्त्र का भी ढोंग रचता है? और फिर मंत्र जंत्र से कोई किसी को मार दे!

परतु पूरे गाव की चिल्लाहट यही थी। गाव भर कहता था—'चिर-गाव का वह व्यक्ति बहुत बुरा आदमी है, उसने मंत्र जत्र किया इसीलिए बच्चा मर गया।'

पञ्चायत हुई। पुरोहित जी को भी उसमे बुलाया गया। सिवाय उस अभियोग के और कोई बात ही न थी। कोई किसी की नहीं सुन रहा था। मन्त्र जन्त्र वाले को गाव की जनता और पञ्चायत दण्ड देने पर तुली हुई थी।

जब पुरोहित जी की किसी भी युक्ति को गांव की जनता ने न सुना तब उनको 'लो' भाई पञ्चो! लो!!' वाली घटना याद आगई, और उन्होंने उसका प्रयोग किया।

प्रयोग बिलकुल सफल रहा । घटना के सुनते ही गांव वाले हँस पड़े और उन्होंने अपराधी को निर्दोषी ठहरा दिया !

प्राचीन काल में पञ्चायत द्वारा बड़े बड़े झगड़े तै हो जाते थे, और सबसे बड़ी बात यह है कि, अन्याय और अत्याचार नहीं हो पाता था। पञ्च लोग विवेक से काम लेते थे। कभी कभी कठोर परीक्षाएं भी ली जाती थीं। परन्तु कम।

सौ डेढ़ सौ वर्ष से गाववाले पञ्चायत के साधन को, अनभ्यास के कारण, भूलसा गए हैं। कानून द्वारा फिर पञ्चायते स्थापित हो गई हैं। डर है कि गाव की दलबन्दियों के कारण पञ्चायतों का अभिप्राय न्याय और विवेक के मार्ग पर कम चले, या रेंग रेंगकर चले। कहीं कहीं तो पञ्चायत का रूप इतना बिगड़ गया है कि किसी भी व्यर्थ चख चख के लिए कुछ लोग कह उठते हैं, 'क्या पञ्चायत मचा रक्खी है !' परन्तु हिन्दुस्थान की प्रकृति में पञ्चायत के बीज वर्तमान हैं, इसलिए आशा है कि बिना किसी पुरातन अनाचार को सग लगाए वह अपने पुराने गौरव को फिर प्राप्त करेगी और हिन्दुस्थान की प्रतिभा को सजीव। यह लघु नाटक यदि इन पञ्चायतों को आनन्द, विवेक और साधारण जन के प्रति सहानुभूति देसका तो छन्दी का कार्य-क्रम बहुत नहीं अखरेगा।

झासी
२९-३-१९४७

वृन्दावनलाल वर्मा

नाटक के पात्र

पुरुष—

झन्टी

धाँधू

सबल

गाँव के सरपञ्च, पञ्च, मुखिया, चौकीदार इत्यादि

लो, भाई पंचो ! लो !!

पहला दृश्य

[बगरा गाँव के बाहर खेत, जिनमे पकी फसल खडी हुई है । आधी रात का समय है । अँधियारी रात । तारे जगमगा रहे है । झींगुर झंकार रहे है । कभी कभी एकाध चिडिया बोल जाती है । वैसे सुनसान है । कन्धे पर एक मटमैला कपडा डाले और हाथ मे हँसिया लिए छुन्दी आता है । छुन्दी लगभग चालीस वर्ष का तगडा आदमी है । किरमिच का फटा हुआ जूता पहने है । उससे आवाज नहीं होती । सिर पर मैली टोपी लगाए हुए है । खेत की मेड से जरा हटकर वह अपने कन्धे पर डाले कपडे को फैला देता है और इधर उधर देखता हुआ चट्ट कान चोरी से फसल काटने में चिपट जाता है । अन्न की बालो को काट काटकर मेड़ के पास फैले हुए कपडे पर इकट्ठा करता जाता है । उसको किसी के आने की आहट मिलती है, चौकन्ना हो जाता है । और काटे हुए अनाज को जल्दी से बाँधकर खेत के एक सघन भाग मे जा छिपता है । धाँधू अपने

लड़के सबल के साथ आना है। धाधू उतरती अवस्था का दुर्बल किसान है। बहुत कम कपड़े पहने है। जो भी है वे फटे हुए। सबल तेरह-चौदह वर्ष का दुर्बल, परन्तु कुशाग्रबुद्धि लड़का है। अद्धा कुर्ता और जाघिया पहने है। बाप-बेटे दोनों नंगे पैर है। हँसिया लिए है, मोट बाँधने के लिए एक एक मैला कपड़ा। दोनों मेड़ पर खड़े हो जाते है।]

सबल—(चारों ओर देखकर) बापू मुझको काटा लग गया है। चला नहीं जाता। बहुत त्रास रहा है।

धाँधू—तूने ऐन मौके पर काटा लगा लिया ! अभागे, मैंने दिनभर कुछ नहीं खाया, तुझे तो दो रोटियां मिल भी गई थीं। मेरी आतें जल रही हैं।

सबल—कहा था कि मजदूरी कर लेने दो, सो अपने पास दिन भर बिठलाए रहे।

धाँधू—मेरा जी खराब था ! तू चला जाता तो मुझे पानी कौन पिलाता ? अब हलका है और बड़ी भूख लग रही है।

सबल—तो तुम्हीं काटने लगो, मेरा तो पैर फटा जा रहा है।

धाँधू—हाथ तो नहीं फटा जा रहा है ? कर जल्दी।

सबल—गिर पड़ा सो हाथ मे चोट आ गई है !

धाँधू—तो मै अकेले कितना कर लूँगा ? कमजोरी के मारे मेरा हाथ ही नहीं चल पा रहा है। कमर जुदी बहुत दूख रही है।

सबल—(बैठकर) मुझसे तो अब खड़ा ही नहीं हुआ जाता है। जो दिखलाई पड़े सो करो।

धाँधू—घर मे चारपाई के सिवा और कुछ नहीं है जिसको बेचकर पेट भर सकूँ।

सबल—वह और रह गई है तुम्हारे जुआ खेलने के लिए, सो उसको भी बेचकर दाव लगा आओ।

धोंधू—क्यों रे सनीचर, यहा लड़ने को आया है या पेट भरने को ? कोई सुन लेगा तो लाठियों से भुस कर देगा। ओह !

सबल—भूखो मरने से तो बच जायगे !

धोंधू—उठ, उठ ! बाले तोड़कर चबा ले। मै भी जितनी बनेंगी चबा लूँगा। सिर पर बोझ न ले जायगे कोई बात नहीं, कल फिर देखा जायगा।

सबल—दो-एक दिन मे सब खेत कट जाएगे, फिर ?

धोंधू—फिर मैं कुछ करूगा और तू मजदूरी करना।

सबल—मजदूरी तो इतनी मिलती ही नहीं कि पेट भर सकें ! पञ्च और मुखिया अपना काम तो दिन भर करवाना चाहते हैं, पर खाने को पेट भर नहीं देते।

(वे दोनो बाले तोडकर खाने लगते है)

सबल—बापू, मेरा हाथ काम नहीं कर रहा है।

धोंधू—अच्छा मै तोड़कर देता हूँ, इधर आ।

सबल—फिर तुम अपना पेट कैसे भरोगे ?

धोंधू—अभी मेरे भीतर ज्वर है, इसलिए थोडे मे ही अघा गया। और नहीं खाया जाता।

(सबल लंगडाता-लगडाता उठता हे और गिर पडता है)

सबल—हाय राम !

धोंधू—क्या हुआ सबलुआ ?

सबल—गड्ढे मे पैर पड़ जाने से गिर गया। उठा नहीं जाता। पसलियों मे काटे चुभ गए हैं !

धाँधू—मैं आता हू, बेटा ! *(धाँधू उसके पास आता है)*

सबल—*(बैठकर)* घुटना फूट गया, बापू !

धाँधू—*(उसको उठाने के प्रयत्न में असफल होकर)* मेरी कमर इतनी दुख रही है कि तुझको उठा ही नहीं पा रहा हूँ। हे राम! *(घबराकर)* और मेरा हँसिया वहीं कहीं छूट गया है।

(हँसिया उठाने जाता है। ढूढता है, परन्तु नहीं पाता। हड़बड़ा कर सबल के पास फिर आता है।)

सबल—हँसिया मिल गया बापू ?

धाँधू—*(रुआँसे स्वर में)* नहीं मिला। अब कैसे काम चलेगा ? दिन में ढूँढने आ नहीं सकते। *(धीरे क्षुब्ध स्वर में)* न तुझको चोट लगती और न हँसिया खोता। अब क्या करूँ ! हाय, क्या करूँ ?

सबल—समझ लेना जुए में हार गए। हू !

धाँधू—क्यों रे ठठोली करता है ? एक ढेला उठाकर मारूँगा तो खोपड़ा फट जायगा।

(छन्दी आता है)

सबल—कोई आ रहा है, बापू ! भागो। *(सबल भागने की चेष्टा करता है, परन्तु गिर गिर पड़ता है। धाँधू थोड़ी दूर भागकर घुटने टेक कर बैठ जाता है)*

धाँधू—मैं हाथ जोड़ता हूँ, पाँव पड़ता हू, दया करो ! आगे कभी ऐसा नहीं करेंगे। और हमने ऐसा कुछ किया भी नहीं है। अभी आए थे। अभी, अभी।

छन्दी—*(पास आकर)* घबराओ मत, हम तुमको-मारने पीटने नहीं आए हैं, बचाने आए हैं।

धाँधू—*(साहस के साथ)* कौन ? छन्दी ? तुम कैसे आए यहा ?

छन्दी—जैसे तुम आए ।

धाँधू—हम तो वैसे ही आए थे ।

छन्दी—फिर हँसिया काहे को लाए थे ?

धाँधू—तुम क्या कर रहे थे ?

छन्दी—जुआ खेल रहे थे । ह ! ह !! ह !!! जुआ ।

धाधू—सवेरे की ठडक मे महुए बीन लेता हूँ, दुपहरी की गरमी में नाले के किनारे करौदी की छाह मे लेट जाता हूँ जब बुखार तेज होता है, तब घर पर पड़ जाता हू–जुआ कब खेलता हूँ ?

छन्दी—रात को ।

सबल—रात को नहीं खेलते, करौदी की छाँह में दिन मे खेलते है, दिन मे चरवाहो के साथ ।

धाँधू—चल घर पर देखता हूँ तुझको । झूठे ! निकम्मे !!

छन्दी—तो क्या हुआ ? मैं जुआ न खेलकर कुछ और बड़े खेल खेलता हूँ । किसी की मजाल है कि कुछ कहले ? मुँह पर कुछ कहे तो सर चकनाचूर कर दूँ !

धाँधू—हाँ भाई तुम्हारे बदन मे ताकत है । हम तो अधमरे ह और लड़के मे भी कुछ तन्त नहीं ।

सबल—काँटे कसक रहे है, बापू । अरे राम, मरा ।

धाँधू—घिसट घिसट कर चल यहा से । किसी तरह रात काट ले तो दिन मे देखेगे । पेट के लिए कुछ मिलता है या नहीं ! चल इनको करने दे अपना काम ? तेरे मारे जितना हैरान हूँ उतना बीमारी के मारे भी नहीं हूँ ।

छन्दी—जिसमे गाव भर में जाकर तुम ढोल पीट दो । पर तुम्हारा हँसिया तुमको पकड़वा देने के लिए काफी है । क्या कहते हो ?

सबल—और ऐसे में कोई आ जाय तो किसी भी सबूत की अटक नहीं। यहीं इतना गुल गपाड़ा कर रहे हो कि ठिकाना नहीं।

छन्दी—मैं तुम लोगों की मदद करना चाहता हूँ, भूखो न मरने दूँगा।

धाँधू—सो कैसे ? सो कैसे भैया छन्दीलाल ?

छन्दी—मैंने बहुत-सा अनाज काट लिया है मैं तुम्हारे घर पहुंचाए देता हूँ। ऐसे ! समझ गए ?

धांधू—सचमुच ! अच्छा होते ही मैं मेहनत मजदूरी करने लगूँगा। सबलुआ भी करेगा। फिर किसी का अन्न हरने की जरूरत नहीं रहेगी। कैसे ले चलोगे ?

छन्दी—सिर पर रख कर।

सबल—मुझसे तो चला ही नहीं जाता। क्या करूँ ?

छन्दी—तुमको कन्धे पर बिठला लूँगा।

धाँधू—भैया छन्दीलाल तुम युग-युग जियो।

छन्दी—(हँसकर) गाँव वाले चाहते हैं, मैं कल ही मर जाऊँ।

सबल—जल्दी करो कोई आ न जाय।

धाँधू—भैया छन्दीलाल मेरा हँसिया भी ढूँढ दो। मेरी गाँठ में इतने पैसे नहीं कि दूसरा ले सकूँ। और पहचान लिया गया तो पञ्च लोग मार डालेंगे।

छन्दी—मार नहीं डालेंगे—जिन्दगी भर मजदूरी करायेंगे। और तुम उफ भी न कर सकोगे। इन पञ्चों की अकल ठीक करनी है। बहुत घमंडी हो गए हैं। अपने को इन्द्र समझने लगे हैं। कहीं का राजा।

धाँधू—पहले मेरा हँसिया ढूँढ दो, राजा भैया।

लो, भाई पञ्चो ! लो !!

छन्दी—पहले अनाज लाऊँगा।

(छन्दी जाता है और कटे हुए अनाज की गठरी उठा लाता है। उसके बाद हँसिया ढूंढ लाता है।)

धाँधू—राम करे तुम हजार बरस जियो।

छन्दी—(हँसकर) हजार बरस मे तो मै शहर के शहर उजाड़ दूँगा।

(सबल को कन्धे पर बिठलाता है और अनाज की गठरी को सिर पर रखता है। एक हाथ से धाधू का हाथ पकड़ता है।)

धाँधू—रास्ता मै दिखलाता चलूँगा।

छन्दी—बुढऊ, एक बात की गाठ बाध लो। अगर तुमने या तुम्हारे लड़के ने कहीं भी हमारे काम की चर्चा की तो गँड़ासिए से कतर डालूंगा और नाले में कही गाड़ दूँगा। जानते हो मेरा नाम छन्दी है।

धाँधू—नहीं भैया छन्दीलाल! हमारे साथ इतना बड़ा उपकार किया, हम क्या ऐसे कृतघ्न हैं कि तुम्हारी बदी करते फिरें? मैं आगे जुआ भी न खेलूंगा! धरम ईमान बर्तूंगा।

छन्दी—(चलते चलते) तुम खूब जुआ खेलो और रात मे खेत काटो, हमको फिकर नहीं, लेकिन मेरे साथ छल-कपट मत करना, नहीं तो तुम जानो।

सबल—कभी नही करेगे छन्दी काका।

धाँधू—कभी नहीं।

छन्दी—अच्छा, अब चुपचाप चलो।

(वे जाते है)

दूसरा दृश्य

[बंगरा गांव के सरपच का मकान। मकान के बाहर चबूतरे हैं। इधर उधर छोटे बड़े मकान है। एक कोने पर गाँव का स्कूल है। मकान के सामने थोडा सा मैदान है। बाकी गांव मे गलियाँ सकरी है। एक गली में से गाँव के दो आदमी आते हैं और सरपंच के दरवाजे पर चिल्लाते है। उनकी पुकार पर सरपंच किवाड खोलकर बाहर आता है। वह अधेड अवस्था का मनुष्य है। समय–सवेरा]

सरपंच—क्या बात है ?

एक—लुट गए ! हम तो लुट गए !!

दूसरा—हमारा तो सत्यानाश हो गया !!!

सरपंच—क्या हो गया ? शाति के साथ बतलाओ, बैठो ! (*सरपच चबूतरे पर बैठ जाता है*)

दोनो—सारी फसल काट ली किसी ने रात को ! (*सिर पर हाथ रखकर दोनो बैठजाते है*)

सरपंच—किसने की होगी यह चोरी ?

पहला—रात को पहरा देने तो जाते नहीं।
दूसरा—न जाने कौन डम–डस लेता है। } *(एक साथ)*

सरपंच—बराबर शिकायत हो रही है। रखाते–रखाते चोरी पर चोरी हो रही है ! दिन भर के थके मादे लोग रात भर जागे भी कैसे ? बाहर का तो है नहीं। कोई गाव का ही है। चौकीदार को बुलाता हूँ—थाने में इत्तला भिजवाता हूँ।

पहला—बहुत तो हो चुकी।
दूसरा—थाने वाले कुछ नहीं करते। } *(एक साथ)*

सरपंच—कुछ सोध लगा ? कुछ भी ?

दोनों—कुछ नहीं।

पहला—मेरा तो आधा खेत कट गया।

दूसरा—और मेरा लगभग पूरा।

दोनों—चल कर देख न लो ?

सरपंच—देख तो लेंगे ही। पर देखने से ही क्या होता है। झूठ थोड़े ही बोल रहे हो। ढोरों ने तो नहीं चर लिया कहीं ?

पहला—ढोरों का चरा क्या हम पहिचान नहीं सकते ?

दूसरा—ढोरों का चरा तो अलग ही दिखलाई पड़ता है।

सरपंच—वही होगा। उसी ने काटा होगा। वही धरती को सिर पर लिए फिरता है। वही बड़ा पाजी है। सनीमा देखने शहर जाता है। गुंडा बना फिरता है। सब को आखें दिखलाता है। उसकी फसल को कोई नहीं चुराता।

पहला—फसल तो पञ्चों की भी कोई नहीं काटता। हम गरीब ही मारे जारहे हैं।

सरपंच—हम रखवाली भी तो काफी करते हैं। खेतों पर आदमी दिन रात बने रहते हैं।

पहला—हम इतने आदमी कहां से लाएँ ?
दूसरा—गांव छोड़ कर चले जायँ क्या ?
(एक साथ)

सरपंच—अबकी बार ऐसी पञ्चायत करेंगे कि उसको पुरखों की याद आ जावेगी।

पहला—कई बार तो हो चुकी पञ्चायत। कोई न कोई पञ्च ऐसे लचक जाते हैं उसके पक्ष में, कि न्याय होने ही नहीं पाता।

दूसरा—अबकी बार की पञ्चायत ही ठीक नहीं बनी।

सरपंच—तो पञ्च यों ही किसी को मार दें ? गवाही साखी भी तो कोई हो।

पहला—गवाही-साखी के सामने कोई चोरी करता है ? क्या होगया है तुमको ?

दूसरा—गाँव में अन्धेर मच रहा है। हम पूछते हैं कि पञ्चों की चोरी क्यों नहीं होती ? तुम कहते हो हम दिन-रात रखवाली करते हैं। हम पूछते हैं मुखिया और चौकीदार की चोरी क्यों नहीं होती ? वे तो दिन-रात रखवाली नहीं करते ?

सरपच—तो क्या पञ्च लोग चोरी करवाते हैं ?

दोनों—क्या जाने।

सरपंच—क्या जानें !

पहला—हाँ, पञ्चायत काहे की जो चोर-गुण्डों को पकड़ कर दण्ड न दे सके ? कह दो कि हमसे कुछ नहीं हो सकता—हम अदालत कर लेंगे।

सरपच—अदालत मे सबूत नहीं देना पड़ेगा ?

दूसरा—अदालत में झूठा-सच्चा सबूत दे देंगे। पञ्चायत मे तो झूठी गङ्गा उठाने कोई आएगा नहीं ? अदालत मे अपना मन तो भर लेंगे।

सरपंच—अबकी बार पुराना तरीका काम में लाएंगे। घबराओ मत। न्याय होगा। दण्ड दिया जाएगा। सनीमा-मनीमा सब भूल जाएगा वह।

पहला—सनीमा ने ही तो नाश मारा, जिन जिन गाँवों के मनुष्य सनीमा देखने जाते हैं सब बिगड़ जाते हैं . . .।

दूसरा—और इस स्कूल ने क्या कम चौपट किया है ? इसी मे पढ पढकर वह और उसके चेले-चाटे अच्छे तच्छे करना और इड़बड़-तुड़बड़ करके बोलना सीख गए हैं।

सरपंच—कह तो दिया, अबकी बार उसकी अकल ठिकाने लगा दी जाएगी।

पहला—पर जब और पञ्च पक्के हो तब न ?

दूसरा—हमसे पूछो हम बतलाते हैं, भेद की बात।

सरपंच—क्या ?

दूसरा—तुम्हारे कुछ पञ्च लालची हैं। रिश्वतखोर। कभी इन्साफ नहीं होने देगे।

सरपंच—कौन ? कौन ?

दूसरा—कौन–कोन ! मौसी कहकर कौन काजल लगवाए ?

पहला—कोई घर में बकरी बंधवा लेता है। कोई मुफ्त में मजदूरी करवाता है। तो कोई ईंधन के लिए लकड़ी मगवाता है और अनाज नहीं खर्च करना पड़ता है पावभर भी।

दूसरा—और, कोई अपनी उगाही करवाता है। कोई खेत रखवाता है। कोई घी–दूध मुफ्त लेता है।

सरपंच—तो अबकी बार दूसरे पञ्च चुन लेना।

पहला—गाँव में एका जो नहीं है।
दूसरा—अपने अपने गुट्ट बना रक्खे हैं। } *(एक साथ)*

सरपंच—पञ्चो को नाहक बदनाम करते हो।

पहला—चलो जी चलो, हम तो जानते थे।

दूसरा—किसी दूसरे गाँव का आसरा लेंगे। बची–खुची खेती मे हम लगाए देते हैं आग। न रहेगा बास, न बजेगी बांसुरी।

सरपच—यों ही बिगड़े चले जारहे हो ! कह दिया कि न्याय होगा, होगा और फिर होगा। हम गाव भर को अभी इकट्ठा करते हैं। उस भूत

छन्दिया की सबको शिकायत है। तुम्हारे मामले मे कोई पञ्च अधर्म नहीं कर सकेगा।

पहला—मास्टर को मत बोलने देना पञ्चायत मे, वह उसके साथ ताश खेलता है। उसकी सेट मे है।

दूसरा—पटवारी को भी मत बोलने देना, छन्दिया उसके साथ चौसर खेलता है। साथ-साथ दोनो सनीमा देखने जाया करते हैं।

सरपञ्च—चौकीदार को बुला लाओ।

पहला—आता ही होगा।
दूसरा—हम उसको बुला आए हैं। } (एक साथ)

सरपंच—अच्छा ! यह बन्दोबस्त करके घर से चले थे !!

पहला—तो क्या करते ? नाकों दम तो आगया है।

दूसरा—छन्दिया को मालूम होगया है कि हम दौड़धूप कर रहे हैं। गली में मिलते ही उसने आखे दिखलाई, मानो खा जाएगा !

सरपंच—अबकी बार उसको गाँव खा जाएगा। गाव भर के खिलाफ कोई भी सदा टेढा नहीं चल सकता। जो चलता है वह अपने मुँह की खाता है। और उसके दात टूट जाते हैं।

(चौकीदार आता है)

चौकीदार—राम राम। आज रात को फिर कई खेतों का अनाज कट गया है। कटा तो थोडा ही है, पर रौरा बहुत मचा हुआ है गाव में।

पहला - थोडा कटा है !

दूसरा—क्यों झूट बोलते हो चौकीदार ?

चौकीदार—मैं देख आया हूँ। पञ्च लोग भी देख लेंगे। कटा जरूर है। चोरी होने मे कोई सन्देह नहीं, पर सची बात यही है कि कटा थोडा थोडा ही है।

पहला—यह तो देखो कि चोरी कितने दिन से हो रही है, और कितने लोगो की हो रही है।

चौकीदार—इसमे कोई शक नही।

सरपंच—(*तेज होकर*) अबकी बार कानून को एक तरफ रखकर ऐसा कड़ा, ऐसा कड़ा इन्साफ किया जाएगा कि अपराधी के पुरखे काप उठेंगे। फिर चाहे पञ्चो पर कोई आफत ही क्यो न आ जावे। गाव की किलप-कराह अब नहीं सही जाती।

चौकीदार—हुकुम हो।

सरपच—अथाई पर सब गाव को इकट्ठा करो। मै अभी आता हूँ।

चौकीदार—अभी लो। (*चौकीदार जाता है*)

सरपच—तुम भी गाव के लोगो, पञ्चों और मुखिया को बुला लो। अकेला चौकीदार फिरेगा तो देर लग जायगी।

दोनो—अच्छा अभी बुलाते हैं। (*वे दोनो भी जाते है*)

(*दूसरी ओर से छन्दी आता है। सरपच सहम जाता है।*)

सरपंच—तुम क्या यहीं कही खड़े थे?

छन्दी—नहीं तो। मै चोरी से किसी की बात नहीं सुनता।

सरपच—(*आराम की सास लेकर*) कैसे आए?

छन्दी—तुमने सुना होगा दादा, खेतों मे बहुत चोरिया हो रही हैं। गई रात ही कइयों के खेत कट गए!

सरपच—सुना तो है। आज गाव भर की पञ्चायत होगी। अपराध का निखार होगा, यदि इस बार भी अपराधी को छोड़ दिया गया, तो कुछ दिनो बाद ही यह पूरा, समूचा गॉव उजड जायगा।

छन्दी—मै भी ऐसा ही सोचता हूँ यह काम बाहर वाले का नहीं हो सकता। कन्जड़ो हाबूड़ो को सरकार ने दाब दूब दिया है।

सरपच—पञ्चायत मे अभी सब बात ऊपर आई जाती है। जो बदमाश इस काम को कर रहे ह, वे अवश्य पकड़े जायेगे। बच नही सकते। उनका काला मुँह किया जायगा।

छन्दी—कैसे पकड़े जायँगे वे बदमाश ?

सरपच—गाव भर के सामने जो पञ्चायत होगी, उसी मे बतला दूगा।

छन्दी—और जो किसी बाहर वाले ने किया हो तो ?

सरपंच—तुमने अभी कहा कि किसी गाव वाले ही का हाथ इन चोरियों में है।

छन्दी—अरे ! मेरी जबान को मत पकड़ो दादा, मै तुम्हारी मदद करने आया हू।

सरपंच—क्या मदद करने आए हो, जल्दी कहो मुझको देर हो रही है। अथाई पर गाव के लोग इकट्ठे हो रहे होंगे।

छन्दी—तुमको जरा बैठकर सुनना होगा, बात कुछ लम्बी है।

सरपच—क्या मुश्किल है ! अच्छा बैठो, सुनाओ।

(दोनों चबूतरे पर बैठ जाते हे)

छन्दी—तुम जितनी फिकर चोरों के पकड़ने की करते हो उससे आधी भी गरीबो की सहायता की भी करते हो या नहीं ?

सरपंच—क्यो नहीं अमावस पूनो ब्राह्मण को सीधा देता हू, तिथि त्योहार को न्योते करता हू, जिसमें कितने ही गरीबो को भी मिल जाता है।

छन्दी—जूठन मिलता है न उनको ? और यदि कोई ऐसा गरीब हो जो जूठन खाने से घिन करे और तुम्हारे द्वारे पर भीख मागने से इनकार, तो उसके लिए क्या करते हो दादा !

सरपंच—जो हाथ-पैर न हिलावे, घरपर पड़ा पड़ा भूखों मरना चाहे, उसके लिए मै क्या, कोई भी क्या कर सकता है ? ऐसा कौन है यहा ।

छन्दी—मैने एक बात कही दादा । ऐसे गरीब की किसी न किसी तरह मदद करनी चाहिए या नहीं ? या उसको मौत के मुँह मे चले जाने देना चाहिए ?

सरपच—कौन रोकता है, मदद करने से ? ऐसों की मदद भगवान करते ह ।

छन्दी—भगवान कौन उसके यहा अनाज की बोरी रख आये गे ?

सरपच—तो, ऐसा आदमी मिहनत मजदूरी क्यो नहीं करता ?

छन्दी—मिहनत मजदूरी करने लायक ही न हो तो ?

सरपच—न हो तो मै करू उसके बदले मे मज़दूरी ? जल्दी कहो और क्या कहना है ?

छन्दी—मिहनत मजदूरी पूरी न मिले तो ऐसा गरीब क्या करे ? आप लोग ऐसे आदमियो से किसी न किसी दबाव में मजदूरी करवाते है और उनको भर पेट खाना देते नहीं, कैसे काम चले उनका ? गाव मे हो रहा है या नहीं ऐसा ?

सरपच—वेगार तो किसी से भी नहीं ली जाती । सेत-मेत तो कोई किसी का काम करता नहीं ।

छन्दी—किसी पर एहसान का दबाव है । किसी पर बड़े आदमियो की मुलाकात का, किसी पर ज्योतिष का, किसी पर मन्त्र जन्त्र का, किसी पर एक दूसरे से लड़ाने भिड़ाने का, किसी पर कोई असम्भव अदृष्ट लाभ पहुंचाने का, किसी पर कोई, किसी पर कोई ।

सरपंच—मदरसे से और मदरसे की पोथियो से जितनी शैतानी और बुराई तुमने सीखी उतनी किसी ने भी नहीं । मुझसे क्या यही सब कहने आए थे ?

छन्दी—मतलब की बात तो मैने दादा तुम से अभी कही ही नहीं। लोगबाग जो कुछ तुम्हारे बारे मे कहते हैं वह मैने सुनाया।

सरपच—कौन लोगबाग ?

छन्दी—काफी बड़ा गाव है, किस किस का नाम बतलाऊँ ? मै तुम्हारी निन्दा नहीं सुन सकता, इसलिए कहने आया, शायद पञ्चायत हो मे कोई बोल उठे। लोगो का मुंह तो पकड़ा नहीं जा सकता।

सरपंच—पञ्चायत मेरे किसी मामले की होगी या इन चोरियों की ? लोग कह उठेगे तो मै ऐसे कहने वालों से डरता थोड़े ही हूँ।

छन्दी—पञ्चो को किसी से डरना भी क्यो चाहिए ? उनका कोई कर ही क्या सकता है ? अदालत मे मामला जा नहीं सकता, चाहे जो कुछ करे।

सरपंच—(*कुढकर*) तुम तो व्याख्यान देने आए हो। मेरा समय खराब न करो, जाओ। मुझे जल्दी है।

छन्दी—जल्दी तो मुझको भी है। मुझको भी पञ्चायत मे आना है।

सरपच—तुमको तो आना ही पडेगा।

छन्दी—जरूर। इसलिए कि मे लगी लिपटी नहीं रखता—खरी और साफ साफ कहता हूँ।

सरपंच—हा, हा, बड़े खरे हो, जानता हूँ! गाव भर जानता है !! गाव का इतना खराब हाल हो गया है कि कुछ ठिकाना नहीं।

छन्दी—बेशक कुछ पञ्च भी जुआ खेलते हैं।

सरपच—(*चौंककर*) तुमको कैसे मालूम ? (*नियन्त्रित होकर, उत्सुकता के साथ*) कौन खेलते हैं ? झूठ मत कहना। धरम ईमान की कहना।

छन्दी—और कुछ चोरी भी करते हैं ।

सरपंच—चोरी ! चोरी कौन करता है चोरी ?

छन्दी—जिसको चोरी कहते हैं वह जानी-मानी हुई चोरी नहीं । ब्याह मे चुपचाप दहेज का लेना, चुपचाप लड़के का नीलाम करना, गरीब भूखों मरे, दावतों-पगतों में अन्न और घी का बेहिसाब नाश करना, बच्चों के अखाड़े को आध पाव दूध और दो पैसे भी न देना और तीर्थ यात्रा करने तथा पुरखों के और अपने स्मारक बनवाने में हज़ारो रुपए फ़ेंक देना !!

सरपच—चोरों के मुँह से समाज सुधार की बातें !

छन्दी—मैं चोर हू या नहीं हूँ, यह तो प्रमाण और निखार पर निर्भर है । पर मै जो कुछ कह रहा हू, क्या वह ग़लत है ?

सरपच—बिल्कुल ! अब जाओ, मेरा माथा न खाओ ।

छन्दी—मतलब की बात तो रह ही गई है अभी ।

सरपच—मतलब अतलब की बात को तुम्हारे पास कोई नहीं । केवल अल जलूल बकवास है । जो कुछ कहना हो पञ्चायत मे कहना । इन चोरियो के बारे में गॉव भर का शक तुम्हारे ऊपर है । तुमको पूरी और की सफाई देनी होगी ।

छन्दी—पहले सबूत तो हो तब सफाई दे लूँगा । मै इसी सम्बन्ध का बात करने आया था ।

सरपञ्च—तुमको बात वात कुछ नही कहनी है । मै और अधिक बकवास सुनना नही चाहता, जाओ ।

छन्दी—चोरी का पता लग गया ।

सरपच—(*छिपी हुई उत्सुकता और प्रकट अवहेलनाके साथ*) कौन है ? देखो धोका मत देना, सच-सच कहना ।

छन्दी—बिल्कुल सच कहूगा। जो कुछ कहूँगा बिलकुल सच कहूगा। राम मेरी मदद करे!

सरपच—(हँसकर) झूठ बोलने के पहले अदालत मे गवाह जो सौगन्ध खाता हैं, यह तो बिल्कुल वही है। अब सच क्या बोलोगे?

छन्दी—सो बात नहीं है। फसल कञ्जडों ने काटी है।

सरपंच—कञ्जडो ने! तुम स्वय थोड़ी देर पहले कह रहे थे कि कञ्जड़ों हाबूड़ो को सरकारने दाब-दूब लिया है। अब यह क्या कह रहे हो?

छन्दी—मैंने यह तो नहीं कहा कि कञ्जड़ों को सरकार ने मिटा दिया है। कञ्जड़ो का एक झुण्ड यहा से बारह मील के फासले पर बिलमा हुआँ है। पुलिस उनकी निगरानी पर जरूर है। परन्तु वे लोग तो आख बचाई और खिसके। बारह मील का धावा करके फिर जहा के तहा। ऐसे बज्र चोर कि हद है!

सरपञ्च यह सब तुम्हारे मन की गढन्त है, वही पञ्चायत में कहना, अब और कुछ नहीं सुनना चाहता। मेरा तो सिर दर्द करने लगा है। हे राम!

छन्दी—मेरे पास पक्का सबूत है कञ्जड़ों की चोरी का। एक आया हुआ है। कमबख्त मेरे ही पास आया! वह तुमसे मिलना चाहता है। दादा, इस चोरी के ब्योरे की क्या वह अनेक चोरियो की कथा बाचेगा।

सरपञ्च—(रुचि के साथ) कहा है वह?

छन्दी—उसने मुझे बहुत-बहुत सोगन्ध देकर तुम्हारे पास सन्देसा भेजा है। यदि मेरी गल्ती या बेपरवाही से उसको कुछ हो गया तो सबके सब कञ्जड़ मेरी खड़ी फसल को खाक मे मिला देंगे, और भी कोई बड़ी आफत सिर पर आ जाय!

सरपञ्च—(अधिक रुचि के साथ) कहो न मुझसे। मर्म को कोई न पा सकेगा।

छन्दी—तो गङ्गा जी की सौगन्ध खाइए। डर के मारे मेरा कलेजा सिटपिटा रहा है।

सरपञ्च—गङ्गा जी की सौगन्ध खाता हूँ, तुम्हारा नाम झंझट मे न आने पावेगा।

छन्दी—तो बतलाता हूँ। ये सब चोरिया कञ्जडो की की और कराई हुई है। चूकि मै यो ही बदनाम हूँ, इसलिए यह कञ्जड मेरे पास ही आया। उसने कहा है कि उसके गिरोह के दो कञ्जड उत्पात कर रहे हैं। वह नाम बतलावेगा, उनको पकड़वा दिया जाय। आपकी मिहनत, दौड़-धूप के बदले में दो दुधार भैंसे दे रहा है। भैंसें चोरी की नही हैं।

सरपञ्च—(सोचते हुए) भैंसे क्यो दे रहा है?

छन्दी—जिसमे आप मन लगाकर काम करे। शायद यह कञ्जड भी खुद चोरियों मे था। किसी चोरी में शामिल रहा हो। कञ्जडों मे परस्पर शत्रुता और दलबन्दी हो गई है। इसीलिए वह अपने को बचाकर अपने दुश्मनो को पकड़वाना चाहता है।

सरपञ्च—भैंसे कहा हे?

छन्दी—कजड़ों के पड़ाव में होगी।

सरपञ्च—और वह कजड़ कहा है?

छन्दी—मेरे घर पर।

सरपञ्च—किसी ओर ने देखा है उसको?

छन्दी—कई लोगों ने देखा है। दिन निकले मेरे घर आया था।

सरपञ्च—चोर होता तो ऐसे खुले खज़ाने आता वह तुम्हारे घर?

छन्दी—शायद वह चोर नहीं है। मैने अटकल ही तो लगाया था कि शायद हो।

सरपञ्च—तुम्हारे ही पास क्यों आया वह?

छन्दी—कहा न कि मै बहुत बदनाम हूँ।

सरपञ्च—(हँसकर) यानी चोर के पास चोर आया!

छन्दी—तुम्हारे पास भी आयगा दादा। वह भैसें देने आयगा तुम तो भले हो? हा।

सरपञ्च—कब तक ले आयेगा?

छन्दी—जब के लिए तुम तय करदो।

सरपञ्च—तुमने पूछा था कि कैसी हैं भैसें? उनकी क्या उमर है? उनके तले क्या है? पड़िया या पड़वे?

छन्दी—दोनों के नीचे पड़वे हैं, भैसे नई हैं और बहुत दुधार हैं।

सरपञ्च—अवश्य चोरी की होंगी।

छन्दी—नहीं हैं। कजड़ो के पास क्या निज का कुछ नहीं होता? यदि ऐसा होता तो पुलिस उस माल को कभी उनके पास न टिकने देती। मुझको तुम जैसा उत्तर दो वैसा ही कजड़ को भुगता दू। मुझे भी देर हो रही है। कहो तो कजड को तुम्हारे पास अभी भेज दूँ?

सरपञ्च—नहीं नहीं, इस समय मत भेजो।

छन्दी—तो कब भेजू? वह जल्दी में है, कहीं भाग न जाय। उसको भी तो डर लगा हुआ है।

सरपञ्च—आज की पञ्चायत निबट लें, तो उससे बातें करूंगा।

छन्दी—फिर क्या रह जायगा? उन चोरियो के लिए ही तो पञ्चायत हो रही है, जिनमें कजड़ों का हाथ रहा है। उसी सचाई को पञ्चायत में साबित करना है।

सरपञ्च—पर लोगों का सन्देह तो तुम्हारे ऊपर है।

छन्दी—उसी के निवारण के लिए तो दादा तुम्हारे पास आया हूं। साच को आंच क्या?

सरपञ्च—वे लोग तो कहेंगे कि 'हाथ कंगन को आरसी क्या ?'

छन्दी—मैं मिडिल की परीक्षा से नहीं घबराया, हालाकि मैं फेल हो गया, तो यह है क्या ? पर कंजड़ तो सब के सामने आयगा नही और न इकबाल करेगा, और, फिर दो भैंसे यो ही तुम्हारी मुट्ठी मे से निकली जाती हैं। क्या कहते हो दादा ?

सरपञ्च—(जाते जाते) यह कि तुम्हारी बात की प्रतीति नहीं होती। जाओ, अब और बात नही करूंगा। तुम काफी पाजी हो।

(सरपंच किवाड बन्द कर लेता है। छन्दी नाक टटोलता हुआ जाता है।)

तीसरा दृश्य

[बगरा गॉव की अथाई। एक बडे पेड की छाया मे चबूतरे के ऊपर कुछ लोग बैठे है। इनमे पंच और मुखिया भी है। चबूतरे के इधर उधर गाव के अन्य लोग है। इनमें धाँधू और सबल भी है। चबूतरे के एक कोने पर छन्दी आ बैठता है। वह आनन्द मग्न है। चबूतरे के आस पास खप्परों के टुकडे पडे हुए है। कूडा कचडा भी। समय—दिन।]

मुखिया कहो छन्दी, आज तो बड़ी मौज मे दिखलाई पड़ रहे हो। शाबाश रे छन्दी, शाबाश !

छन्दी—मुझको कभी किसी ने रोते देखा है ?

पञ्च—सरपंच आ जायँ तो आटा दाल का भाव मालूम पडेगा। उठ बैठ चबूतरे पर से। यह पचों की अथाई है। न्याय करने की जगह है।

छन्दी—(खडा होकर बिना अनमना हुए) क्यो ? चबूतरे पर बैठे रहने से क्या होगा ? मेरे क्या जमीन नहीं है ? घर द्वार नहीं है ? ढोर ढगर और खेती नहीं है ?

पञ्च - सब कुछ सही। पर तुम्हारे ऊपर चोरियो का आरोप है, इस लिए नीचे बैठो।

छन्दी—सरपञ्च से आपकी बातचीत हुई या नही, या यो ही लगे बातें मारने? उनको चोरियों का कुछ कुछ हाल मालूम है।

मुखिया—हो आई है चर्चा और मालूम होगया है कि तुम किस के लिए क्या कह रहे हो।

छन्दी—मैंने सरपञ्च से झूठ थोडे ही कहा है। पर वाह रे पञ्च, सौगन्ध खाने पर भी बात पेट में न पचाई! ऐसी जल्दी सब उगल दिया !!

पञ्च—चुप बेहया! तू पञ्चो को चोर बनाता है !! *(क्रोध के मारे थरथराने लगता है)* हम लोगों के ईमान पर भी कीचड फेंकता है !!!

छन्दी—अच्छा! यह बात !! तो सरपञ्च ने चुगली खाई है। भैसों वाली बात नहीं बताई!

मुखिया—कौनसी भैसों वाली!

छन्दी—कजडों की भैसों वाली। पर मैं क्यो किसी की बात कहकर ओछा बनूँ?

मुखिया - तुम इतने लम्बरी हो कि कोई वकील-मुख्तार भी इतना न होगा।

पञ्च—कहो भाई गाव वालो, कैसा है यह छन्दी?

कुछ गॉव वाले—उचक्का है।
कुछ और गाँव वाले—उठाईगीरा है।
कुछ और गॉव वाले—बहुत ठीक है।
(एक साथ)

धॉधू—बिना गवाही-साखी के किसी को बुरा नहीं कहना चाहिए।

सबल—छन्दी काका ने ऐसा क्या किया है?

पञ्च—चुप बे, काका के बच्चे ।

(सरपंच कागज, कलम और दावात लिए आता है)

मुखिया—आओ दादा ।
पञ्च—आओ सरपञ्च ।
चबूतरे पर बैठे हुए कुछ लोग—जगह दो, जगह दो ।
कुछ और पञ्च—आओ, आओ । *(एक साथ)*

सरपञ्च—*(ठोडी को उँगलियों से मरोडते हुए)* छन्दीलाल, तुम्हारे ऊपर गई रात को चोरियो का आरोप है । गाव वालो का शक है कि तमाम चोरिया तुम्हीं करते और करवाते हो । *(पञ्चो से)* गाव वाले कहते हैं न ? मैंने गाव वालों की बात ठीक ठीक बतला दी है न ? मैं अपनी तरफ से बनाकर नहीं कह रहा हू छन्दीलाल ।

एक पञ्च—बिल्कुल ठीक बतलाई है ।

दूसरा पञ्च—हम कहते हैं कि इसके बराबर तो दूसरा बदमाश है ही नहीं ।

तीसरा पञ्च—ससार भर मे ढूँढने पर भी मिलेगा नहीं ।

छन्दी—और हमारा गाव तो काशी जी से भी न्यारा है । मुझको छोड़कर इसमे सब हरिश्चन्द्र ही हरिश्चन्द्र बसते हैं ।

एक पञ्च—आज इसकी अकल ठिकाने लगानी है ।
दूसरा पञ्च—खाल उधेड़ने लायक है ।
तीसरा पञ्च—कजड़ों से भी गया-बीता । *(एक साथ)*

मुखिया—बोलो छन्दी, क्या कहते हो ? चोरियां की कि नहीं कीं ?

छन्दी—मुझको चोरियो से क्या प्रयोजन ?

एक पञ्च—सवाल करते हो ? जवाब दो ।

छन्दी—जवाब ही तो दिया है । मैं चोरिया क्यो करने लगा ?

दूसरा—तो ये सब चोरियां किसने की ?

छन्दी—पञ्च जानें। मैं क्या जानूँ ?

पञ्च—पञ्च जानें ! पञ्च क्या तुम्हारे पेट के अन्दर बैठे हैं ?

छन्दी—पञ्च लोग सब जानते हैं।

धाँधू—पांसा पड़े सो दाव। पञ्च करें सो न्याव।

कुछ गांव वाले—पञ्च न्याय ही करेंगे, न्याय !

छन्दी—क्यों नहीं। क्यों नहीं। पञ्च कहें बिल्ली तो बिल्ली !

मुखिया—छन्दी, तुमको मुँह सँभाल कर बात करनी चाहिए। अखबार पढ़ने से क्या तुम्हारी अकल बिल्कुल मारी गई ?

छन्दी—अखबार पढ़ने से और होता ही क्या है ? पञ्च लोग अखबार नहीं पढते तो देखिए उनकी अकल कितनी सच्ची है। सनीमा देखने से मैं चोरी करने लगा और अखबार पढ़ने से अकल मारी गई !

मुखिया—किसी से तो डरो छन्दी।

छन्दी—अकल होती तो सबसे डरता। बिना अकल वाले तो मौत से भी नहीं डरते।

(सरपञ्च—देखो छन्दी, गाव भर तुम्हारे खिलाफ है। तुम्हारी करतूतों से सबके दिल तुम से फिर गए हैं। बहुत ऐंठ करने का फल यह होगा कि न घर के रहोगे और न घाट के।

छन्दी—हाय रे, क्या करूं इस जीभ को (*मुह पकड़ते हुए*) अब मैं चुप हूँ। बिल्कुल चुप।

धाँधू—पञ्चायत का चबूतरा धर्मराज का आसन है। बड़े बड़े झगड़े निबट जाते हैं यहा। यह भी निबट जायगा।

छन्दी—यह नहीं मानती, नहीं मानती जीभ मेरी। (*मुँह खोलकर*) देवताओं में भी झगड़े हुए हैं। अगर उन्होंने आपस मे पञ्चायत करली

होती तो इस संसार में किसी को भी कानोकान खबर न पड़ती और न बड़ी बड़ी पोथियां रची जातीं, और क्या कहूँ ?

एक पञ्च—मूसल कहीं का ? निर्लज्ज !!

छन्दी—अब कुछ नहीं कहूँगा।

सरपञ्च—तो तुम यह कहते हो कि तुमने चोरियां नहीं की ?

छन्दी—हूँ

सरपञ्च—साफ कहो जी हमको लिखना पड़ेगा।

छन्दी—कुछ कहूँगा तो पञ्च लोगों का पारा गरम हो जायगा। कहेंगे मूसल हूँ। निर्लज्ज !

सरपञ्च—जो कुछ पूछा जाय उससे अधिक कुछ मत कहो।

छन्दी—पूछो।

सरपंच—की कि नहीं की ?

छन्दी—की कि नहीं की ?—नहीं की, कह तो दिया था।

(सरपंच लिख लेता है)

सरपञ्च—गांव वालो, कहो किसको क्या कहना है।

एक—छन्दी चोर है। बड़ा चोर है। इसने मुझको मारा और धमकाया था।

दूसरा—मेरी खेती इसी ने उजाड़ी।

तीसरा—मेरा घास चुराया था।

चौथा—अखाड़े में लड़कों को बुला-बुलाकर उनसे अनाज और पैसे चुरवाता है। मेरे लड़के के इसने कान उखाड़े थे।

पांचवां—इसके घर में जुआ होता है।

छठवॉ—यह गाव भर मे अकडकर चलता है । किसी से भी अच्छी तरह नही बोलता ।

कुछ गॉव वाले—चोरी करता है ।
कुछ और गॉव वाले—सरकारी साड़की तरह डोलता है
कुछ और गाव वाले—गुण्डा है ।
कुछ और गॉव वाले—इसका काला मुँह करो ।
(एक साथ)

धाधू—भाई पञ्चो मै गरीब हू, पर मेरी भी कुछ सुनी जानी चाहिए। चाहे जिसके लिए, चाहे जो कुछ कह देने से ही साबित नही मान लिया जाता । गवाही–साखी होनी ही चाहिए ।

सबल—वे बहुत भले है ।

एक पञ्च—चुप !

छुन्दी—मै चुप नही रह सकता, एक सवाल अवश्य करूँगा । क्या उन कागजो मे मेरा फैसला लिख लिया गया है ? या अभी कुछ निर्णय होगा ?

सरपञ्च—अभी कोई फैसला नही हुआ ।

छुन्दी—यहा आने से पहिले क्या ये पच आपके घर गए थे ?

सरपञ्च—तो क्या हो गया ?

छुन्दी—हो कैसे नही गया ? सब सलाह–सूत बाधकर आए है । भरे हुए आए है ।

मुखिया—नही नही, विचार किया जाएगा ।

छुन्दी—पचों से तुम्हारी क्या बातचीत हुई दादा ?

एक पञ्च—तुम कौन होते हो पूछने वाले ?

छुन्दी—छुन्दीलाल ! छुन्दीलाल !!

दूसरा पञ्च—ऐसा गँवार और ऐसा मुँहजोर है कि अदब-कायदा तो इसके पास छूकर नहीं निकला।

छन्दी—तुम्हारी जेब में है अदब-कायदा झपाझप ! किसी की बकरी दाब ली, किसी की गाय !! किसी से रुपया ले लिया !!! किसी की जमीन में घुस बैठे !!!! मज़दूरों से फोकट मे मजदूरी करा ली !!!!! बन गए पञ्च, हो गए धर्मपुत्र जुधष्ठर !!!!!!

एक पञ्च—रोको मुखिया इसको।
दूसरा पञ्च—जबान खींच लेंगे इसकी।   } *(एक साथ)*
तीसरा पञ्च—पीठ फोड़ दी जाएगी।

कुछ लोगों का समूह—*(जो अब तक चुप था और जरा बाद मे आकर खडा होगया था)*—हां, ऐसे ही मार लोगे गुरू को !

सरपञ्च—सब लोग चुप रहो। बलवा करने आए हो क्या ? अगर जरा भी गड़बड़ की तो इसी पल चौकीदार को थाने भेज दूंगा।

छन्दी—ठहरो भाइयो ! ठहरो, पहले देख तो लो न्याय किस तरह किया जाता है।

सरपञ्च—चौकीदार, तुम्हारा कथन पहले सुना जायगा। बोलो क्या जानते हो ?

चौकीदार—मैने फसल काटते या चोरी करते तो किसी को भी नहीं देखा झूठ नही बोलूँगा मै। परन्तु एक दिन चोरी की इत्तिला करने थाने की तरफ जा रहा था, तब छन्दीलाल आ गए और उन्होंने मुझे थाने की तरफ जाने से रोक दिया। बोले—कि इत्तला करने जाएगा तो सर खोल दूँगा। मै लौट पड़ा।

सरपञ्च—तुमने कहा था छन्दी ?

छन्दी—जरूर कहा था। थाने में इत्तला होती तो गाव की बदनामी होती। दूसरे गावों के लोग कहते कि इस गाँव में चोरी होती है ! सिर्फ इसीलिये रोक दिया। सिर्फ इसी मतलब से !

गॉव के वे लोग जो पीछे खड़े थे - शाबाश छुन्दी गुरू !

छुन्दी—तुम लोग चुप रहो, मै भुगतान कर लूँगा ।

एक पञ्च—क्यों छुन्दी ? किस पञ्च ने किसकी बकरी बाधी ? किसकी गाय ? और किसकी जमीन में कौन पञ्च घुस बैठा है ?

छुन्दी—मेरे पास भी एक रजिस्टर रहता है । जब मै किसी दिन गॉव का पंच हो जाऊँगा तब खोलूँगा उसको और अभी सुनना चाहते हो तो अभी सुनाने को भी तयार हूँ ।

एक पञ्च—हाँ सुना दो ।
दूसरा—हम इसके मरे बाप को भी नहीं डरते ।
तीसरा—पुलिस के हवाले करो इसको ।
} (एक साथ)

छुन्दी—पुलिस के हवाले करने में पंचायत की शान मे बट्टा लग जावेगा । मैं निर्दोष हू । यहीं अपने मन की कर लो । कसर रह जाय तो पुलिस के हवाले कर देना । मैं भुगतने को तैयार हू ।

कुछ गॉव वाले—इन गुण्डों को हटाओ, ये आग्ने दिखलाते हें ।

मुखिया—(*उन लोगों के प्रति*) यदि तुम लोग किसी ऊधम के लिए उतारू होकर आये हो तो वैसा कहो, हमारे पास काफी इलाज हैं । गांव नपुन्सक नहीं हो गया है । चोटी चोटी का पता नहीं लगेगा ।)

गांव के बहुत से लोग—ये सब के सब चोर हैं ।

छुन्दी—(*अपने साथियों से*) मैं तुम्हारे हाथ जोड़ता हू, चुप रहो, धीरज के साथ सब देखते जाओ ।

सरपञ्च—हम सबूत पीछे लेंगे, पहले तुम्हारा बयान लेंगे छुन्दी ।

छुन्दी—कितनी बार बयान लोगे दादा ?

सरपञ्च—असल में अब मतलब की बातों का आरम्भ होता है । सुनो, तुमने चोरी न की सही, पर तुमको मालूम तो है कि किसने की ?

छन्दी—मुझको मालूम है ।

एक पञ्च—जब इनको मालूम है तो इन्ही ने ही की या करवाई होगी ।

सरपञ्च—(पचसे) ठहरो भैया, (छन्दी से) बतलाओ किसने की है ?

छन्दी—दो भैंसें देने का वायदा करने वाले गिरोह ने ।

मुखिया—कैसी भैंसें ।

सरपञ्च—छन्दिया को कहते जाने दो, वह अपने कीचड़ मे साने बिना किसी को नही छोड़ेगा ।

छन्दी—भैंसो वाली बात भेद की है । सौगन्ध हो चुकी है । मै नहीं बतलाऊगा, सरपच चाहें बतला दे ।

सरपञ्च—खैर ! बतलाओ वह कंजड़ कहा है जो चोरियों का पता देने तुम्हारे पास आया है ?

छन्दी—(इधर उधर देखकर) देखता हू ।

एक पञ्च—क्या देखते हो ? बतलाओ कहा है ?

छन्दी—भाग गया ! भाग गया !!

सरपञ्च—कब ?

छन्दी—जब तुमने मेरी प्रतीति नही की और किवाड़ बन्द करके भीतर घुस गए ।

सबके सब पञ्च—यही चोर है ।

सरपञ्च—क्या बात बनाई पट्ठे तुमने ! भाई गाव वालो, छन्दी के ऊपर अपराध सिद्ध होता है । इन्होने कहा था कि एक कञ्जड़ मेरे घर पर बैठा है, जो चोरियो का ब्योरा बतलायगा । तुम लोग क्या कहते हो ?

छन्दी—एक बात मेरी भी सुन लो भाइयो । इन्होंने मन में निश्चय कर रक्खा है कि मै ही अपराधी हूँ । मैं कञ्जड़ो को इनके सामने पेश

करना चाहता था, पर इन्होने मेरी एक न सुनी, वह कज़ड इनको दो भैंसे भी देना चाहता था। ये बोले—पहले भैंसें लाओ। कौल करार हो गया। गङ्गाजली उठ गई। इन्होंने कौल पहले तोड़ा, इसलिए मुझको भी कोई आन नही रही है। मै निर्दोप हू। यह दूसरी बात है कि (*बेसुरा गाकर*) पाँसा पड़े सो दाँव, और पच करे सो न्याव।

छन्दी के साथी—वाह गुरू, वाह !

गाँव वाले—निकालो इनको। हम भी लाठी चलाना जानते है।

छन्दी—धीरज धरो भाइयो। चुप रहो।

धाँधू—बिना गवाही साखी सबूत के न्याय हो गया ! यह तो विचित्र सा है सब—मैने अपनी उमर भर में ऐसी पंचायत नही देखी !

एक पञ्च—तुमने सिवाय जुआ वगेरह खेलने के उमर भर मे देखा ही क्या है ? तुम क्या किसी से कम हो ?

सबल—हूं, हूँ। हमारे दादा ने क्या किया है ?

एक पञ्च—चुप छोकरे !

छन्दी—हा भाई, सब चुप रहो। इनको मनमानी करने दो। पचायत है काहे के लिए ? पुराने बैर चुकाने के ही लिए न ? निकालो कसरें, निकालो पुराने काटे, और करो अपने कलेजे ठण्डे।

सरपञ्च—यह बिलकुल गलत है। जान बूझकर मक्खी कोई नहीं खाता। पचायत मे बैठकर कोई अन्याय नही करता।

धाँधू—हैं कहा गवाही साखी ? कहां है छन्दी के खिलाफ सबूत ?

सबल—हा किसके सामने छन्दी काका ने फसल काटी ? देखा किसी ने ?

सरपञ्च—कोई न देख पावे तो पाप ही नही हुआ ? छन्दिया ने गांव के छोकरा तक को बिगाड़ डाला है। पचो, गाव वालो, सब को

विश्वास है कि यह चोर है । पक्का चोर, परन्तु इसमे भी कोई शक नहीं कि आखो देखा कोई प्रमाण नहीं है । ऐसी हालत मे क्या किया जाय यह सवाल है । प्राचीन काल मे जैसा कि सुनते आए ह एक उपाय किया जाता था । आजकल उसका करना बहुत मुश्किल है । यदि सब लोग राजी हो जाओ तो वह उपाय काम मे लाया जाय ।

बहुत से गाव के लोग—बतलाओ दादा, बतलाओ ।

सरपञ्च—पुराने युग मे अपराधी को नीम के पत्ते चबवाए जाते थे । यदि उसको कड़वे लगते तो अपराध साबित समझा जाता था ।

एक पञ्च—छुन्दी तो पूरा नीम का पेड़ चबाकर निगल जायगा !

सरपञ्च—एक परीक्षा होती थी हाथ पर अँगारे रखने की, दूसरी चूल्हे मे हाथ डालने की, तीसरी कड़ाही मे जलते हुए तेलमे हाथ डालने की । यदि छुन्दी मे हिम्मत है और वह चोर नहीं है तो इन परीक्षाओ में होकर निकल जावेगा । यदि वह इनकार करे तो मै अपने कागज़ो मे उसके दोषी होने का निर्णय लिख दूँगा । क्यो भाई पचो !

एक पञ्च—बिलकुल ठीक !

सरपञ्च—कहो भाई गाव वालो ?

अधिकांश गाव वाले—बिलकुल ठीक !

छुन्दी—यह मेरे लिए बिना किए का दण्ड रहा प्रत्येक दशा मे, पर लेग । यहा तो मुखिया और पचो के आबुर्दे और कृपापात्र जमा हैं न । एक ने कहा कान का कउआ ले गया तो वैसाही सबने कह दिया । कोई भकुआ यह देखने वाला नहीं कि सिर के किसी भाग मे कान जहा के तहा चिपके हैं या नहीं । पर मै इन परीक्षाओ के लिए तैयार हू । मगाओ अँगारे, आग, कड़ाही, तेल इत्यादि ।

एक पञ्च—मगाओ जल्दी ।
दूसरा—लइयो रे कोई ।
तीसरा—कढाई रमुआके यहा से ले आओ ।
चौथा—तेल बिरजुआ के यहा से ।
(एक साथ)

(कुछ लोग गाव की ओर दौड़ जाते है)

धाँधू—हे राम ! यह सब क्या हो रहा है ? क्या संसार से धरम-करम सब उठ गया ?

छन्दी—घबराते क्यों हो धाँधू दादा ? साँच को आँच क्या ? मेरा कुछ नही बिगड़ेगा ।

धांधू—मुझको बहुत डर लग रहा है । हे राम ! हे राम !!

सबल—मुझको काँटे कसक रहे हैं और घुटने की चोट दर्द कर रही है ।

धाँधू—चुप चुप । कोई बात नही ।

छन्दी—*(बेसुरा गाकर)* 'जो तुझको काँटा बुवे, ताहि बोय तू फूल, तुझे फूल के फूल हैं, उसको हैं तिरसूल ।'

एक पञ्च—अभी थोड़ी देर में सब सनीमा निकला पड़ता है ।

छन्दी—यह सब सनीमा के सिवाय और है क्या ? इस गाव में तुम लोगों का राज्य है चाहे जो कुछ करो, पर मेरा भी कोई है ।

(कुछ लोग आग, चूल्हा, कढ़ाई, तेल इत्यादि ले आते हैं । चूल्हे में आग जलाई जाता है । और तेल डालकर कढाई को चूल्हे पर चढ़ा दिया जाता है । धाँधू और सबल—हेराम, हेराम, करते है । छन्दी के साथियों को क्रोध आता है, वे आगे बढते हैं ।)

एक साथी—यह क्या करते हो गुरू ? इतने नासमझ हो गए ! हम सब मर मिटेंगे !!

छन्दी— इसतरह की बहादुरी नासमझ ही कर सकते हैं । तुम लोग दूर रहो । मै यह सब राजी खुशी से कर रहा हूँ । यदि कहीं से पुलिस रोकने के लिए आ जाय तो उससे भले ही लड़ पड़ो, पर इन गाव वालो से और पचो से कुछ मत कहना ।

सरपञ्च—छन्दी, आगी तैयार है । अगर सचे हो तो रख लो हाथ पर ।

छन्दी— मुझको जो झूठा कहे वह झूठा । पर पचो ! मै एक बात पूछता हूँ, मान लो मै चोर सही तो क्या ककड़ी के चोर को गला कतरने का दण्ड दिया जाता है ?

एक पञ्च —चोर चोर सब एकसे, चाहे ककड़ी का चोर हो, चाहे हीरे-पन्नो का हो ।

छन्दी—धन्य है पचो, लाओ आगी मै रखता हूँ अपने हाथ पर ।

(एक आदमी चूल्हे मे से कुछ अगारे खपरैल के एक टुकडे पर लाता है । चबूतरे के पास पड़े हुए खपरे के एक टुकडे को छन्दी झटपट उठा लेता है और आग लाने वाले के हाथ को झटका देकर अँगारे अपनी गदेली पर रक्खे हुए खपरे पर रख लेता है ।)

छन्दी—देखो भाइयो, मै अपराधी नहीं हू ।

सरपञ्च—यह क्या मसखरापन कर रहे हो ?

छन्दी—तुम लोग यहा जमा ही काहे के लिए हो ?

एक पञ्च—यह कोई परीक्षा है ? बिल्कुल दिल्लगी !

छन्दी—तो पचो ने यह कब कहा था कि हाथ की खाल पर अङ्गारे रख लेना । हथेली पर खपरा और खपरे पर अङ्गारे । अङ्गारे हाथ पर रक्खे हैं हो गई परीक्षा ।

गाँव के अधिकाश लोग—यह कुछ नहीं ।

एक—बड़ा चालाक है यह !
दूसरा—पूरा धूर्त ! } (एक साथ)
तीसरा—झगड़ो का सिरताज !

सरपञ्च—ठहरो ! ठहरो, अभी दो परीक्षाएँ तो और बाक़ी हैं। बेटा, कितनी चालाकी करोगे ? छन्दी, चूल्हे मे हाथ डालो। हाथ जिसपर खाल है, खाल वाला हाथ, कोई आड़-ओट न हो। खबरदार।

छन्दी—मैं तुम लोगों का आबुर्दा या कृपापात्र होता तो कैसा ही पाप कर डालने पर क्या ऐसा ही सलूक मेरे साथ किया जाता ?

सरपञ्च—गाव मे अभी क्या बाकी है यह तुमको परीक्षाओं के बाद मालूम पड़ेगा।

छन्दी—परीक्षाओं से बेदाग़ निकल जाने पर भी सताया जाऊँगा क्या ?

सरपञ्च—गाँव का यही तो लक्षण है कि जहा अपराधी परीक्षाओं से पार हुआ तहा आधे से अधिक गाव उसका पक्षपाती हो जाता है। पर अभी दो मार्के और हैं। तुम चोर हो, उनसे पार न पा सकोगे।

छन्दी—मै चोर नहीं हूँ, अभी इतना ही कहता हूँ। परीक्षाओं के खतम हो जाने पर कुछ और कहूँगा।

सरपञ्च—तो डालो चूल्हे मे अपना नङ्गा हाथ।

छन्दी—अभी लो। मैंने किया ही क्या है !

(छन्दी जलते हुए चूल्हे में हाथ डालकर तुरन्त खींच लेता है।)

सरपञ्च—यह कुछ नहीं हुआ।

घोंघू—क्यों नही हुआ ? छन्दी ने चूल्हे में हाथ डाला, और बराबर डाला, जिनके आँखें हैं, उन्होंने देखा है। और अभी दिन है, रात नहीं है।

एक पञ्च—इसको चूल्हे में हाथ डालना कहेंगे ?

छन्दी—क्यों नहीं कहेंगे ? उठाओ गङ्गाजी और कहो कि मैंने चूल्हे मे हाथ डाला या नहीं !!

मुखिया—चूल्हे में हाथ डाला तो जरूर।

सरपञ्च—परन्तु खींच तुरन्त लिया।

छन्दी—यह तुमने कब कहा था दादा, कि चूल्हे मे हाथ डालकर उसे उसी में दिए भी रहना ? यही कहा था न कि आग में हाथ डाल दो ? मैंने डाल दिया, हो गई परीक्षा, बस !

एक पञ्च—अभी कैसे हो गई परीक्षा ? ऐसे सस्ते छूटना चाहते हो ? चाहे जिसकी चोरी करवा लो। चाहे जिसको आग दिखला दो और भेड़िए की तरह मौज से घूमते रहो ! अब परीक्षा हो रही है। कड़ाही मे तेल खलबला जाने दो फिर डालना नङ्गा हाथ उसमे, अबकी बार एक भी चालाकी न चलने पावेगी। धर लिया खपरा हाथ पर। रख लिए उसपर अङ्गारे ! कह दिया हो गई परीक्षा !! बन गए सच्च !!! तुम डाल डाल तो हम पात पात। करो, कितनी चालाकी करते हो।

छन्दी—गाव मे जितने लाला, लल्ला, दादा, बड़े, काका और बाबा नामधारी होते हैं, सब एक से एक बढ़कर कतर-ब्योंत वाले होते हैं। उनसे कोई अफ़सर या कानून पार नहीं पाता। मन आठांगाठ कुमैत। मैं भी पार नहीं पा सकूँगा। पर मेरी निर्दोषिता मेरी पीठ पर है। इसलिए परवाह नहीं।

मुखिया—तुम इतने बकवादी हो और मुँह जोर न होते तो इतने बुरे न होते। गाव किसी न किसी तरह सब कुछ सहता चला जाता है, पर बुरी जबान छोटे से छोटा नहीं ओढ़ पाता।

सरपच—इनकी जबान क्या है बिजली की कैंची है। आगा देखे न तागा, सरसराते चले जाते हैं।

एक गाँव वाला—कढाही मे तेल कड़कने लगा है, तैयार है।

बहुत से गाँव वाले—डालो, हाथ कढाई मे डालो !

छन्दी—दोनों या एक ?

कुछ गाँव वाले—दोनों हाथ, दोनो। } (एक साथ)
कुछ और गाँव वाले—एक ही सही।

धांधू—(खडे होकर) कभी नही। जलते हुए तेल मे इस गरीब का हाथ कभी नहीं डालने दूँगा।

कुछ गाँव वाले—तो तुम डाल दो अपना हाथ।

धाँधू—मेरा चाहे जो कुछ कर लो। छन्दी निर्दोष है।

छन्दी—चुप बुढऊ ! चुप !!

धाँधू—मै चुप नहीं रहने का। मै बतलाऊगा चोर कौन है। एक बेकसूर मारा जाय और मै मुँह बन्द किए बैठा रहूँ ! हो नहीं सकता।

एक पञ्च—अजी नहीं, कैसे हो सकता है ? चोर-चोर मौसेरे भाई। जुआरी और चोर में अन्तर ही क्या ?

धांधू—मुझको बतलाओ इस गाव में कौन जुआ नहीं खेलता ?

सरपंच—बैठ जा बूढे बैठ जा। न्याय होने दे।

छन्दी—हां हा, होने दो न्याय। बैठो बूढे, देखो तो न्याय। साच को आच नहीं आवेगी !

धाँधू—मै तुमको तेल मे हाथ नहीं डालने दूँगा।

(बूढा उससे लिपट जाना चाहता है, छन्दी उसको अलग कर देता है।)

सरपंच—तो तुमने निश्चय कर लिया ? अब की बार का मोर्चा भयकर है।

छन्दी—मेरी गाठ मे निश्चय सदा रहता है। अपने अनिश्चय की तुम लोग जानो, बिना दोष के मुझको दोषी बना दिया। फिर दकियानूसी परीक्षाओ का सहारा लिया। एक परीक्षा ली, मैने पार पा लिया, दूसरी ली, मैं उसको भी लाघ गया, अब तीसरे पर आ कूदे! क्या इसी को न्याय कहते हैं? पंचायत यही है? मन मे किसी के विरुद्ध एक भावना पक्की करली और दिखलाने लगे न्याय का स्वाग।

छन्दी के साथी—वाह गुरू, वाह।

छन्दी—ठहरो, पचो की बेअदबी मत करो। इनको गुस्सा आजायेगा तो इन्साफ कर उठेंगे!

(छन्दी अथाई के पेड से कुछ पत्ते तोडता है)

सरपच—यह क्या? अब की बार एक भी चालाकी न चलेगी। नगा हाथ कढाई मे डालना पडेगा, और नही तो तुम्हारे विरुद्ध फैसला लिखा जायगा और तुमको कुछ दिनों जेल की हवा खानी पडेगी।

छन्दी—जिस पेड के नीचे बैठकर तुम न्याय करते हो उसी पेड की कुछ पत्तिया मैने न्याय-का रास्ता साफ करने के लिए हाथ मे ली है।

धाँधू—हा न्याय करिए साहब, न्याय। छन्दी अपराधी नहीं है, अपराधी—

छन्दी—ठहरो बुड्ढे! न्याय का साधन यह रहा मेरे हाथ मे। देखो इसकी करामात।

(छन्दी कडाही के कडकडाते तेल में पत्तियों को डुबोता है और पञ्चों पर छिटकारता है।)

छन्दी—(दौड़ दौडकर) लो भाई पञ्चो! लो!! लो भाई पञ्चो! लो!! (*पञ्च इधर उधर भागते हैं।*) अरे यह क्या? भागते क्यों हो? तुम सब तो हरिश्चन्द्र हो न? दूध के धुले हुए! धर्म के अवतार!! क्या इस तेल की बूंदे गरम लगी? क्यों भाइयो, तुम तो कोई चोर नही हो, फिर तुमको क्यों बूंदो ने जला दिया? मेरा हाथ जल जाता तो मैं चोर

एक पंच—कढाही का तेल ले जाना।

छन्दी—वह भी पराया, सो भी तुमसे बचे तब ?

सरपच—आओ छन्दी बैठो। हम लोग मामले को बढाना न चाहते। अभी कुछ ऐसा नहीं लिखा गया है। हम काले अक्षर को भू नहीं लिखेगे, निश्चय जानो। *(चौकीदार से)* तुम भी आज की बातो क इत्तला थाने मे मत करना। समझना, जानो कुछ हुआ ही नहीं। पर इ गाव वालो के लिए क्या करे जिनकी चोरिया हुई हैं ?

एक गॉव वाला—धांधू काका ने चोरी क्यो की ?

धॉधू—भूखो मर रहा था और क्या करता ?

दूसरा गॉव वाला—मेरा तो थोड़ा ही कटा है खेत। मै अपन दावा वापिस लेता हूँ।

एक पच—तो फिर न्याय नहीं करना होगा क्या ? चोर यो ही मौज करते रहेंगे।

धॉधू—मौज कहा है ? भूखो तो मर रहा हूँ।

सबल—आज दिन भर से एक दाना भी मुँह मे नहीं डाला।

एक पच—छन्दी फसल तो खड़ी है। आज उसपर हाथ जमाओ।

छन्दी—काट लेगा तो कितना ले जायगा ? फिर अपनी फसल की कुशल न समझना, पञ्च भइया !

छन्दी के साथी—वाह छन्दी गुरू ! वाह !!

सरपच—नही यह ठीक नही है। इस तरह तो खेत काटते काटते एक दूसरे के गले काटने की नौबत आ जायेगी और हम सब चौपट हो जायँगे। सब लोग मिहनत मजदूरी करे। परस्पर ईमान बर्तें। धाधू को माफ कर देना चाहिए।

धॉधू—मै जुआ नहीं खेलूगा, पंचो के सामने प्रण करता हूँ।

छन्दी—मे आगे क्या करूगा, यह कुछ सोचकर ही कहा जा सकेगा परन्तु रात का खेल अकेले धाधू का न था, यह सही है।

सरपच—ऐ ! खैर !! । इति ।

काश्मीर का काँटा

परिचय

अक्टूबर सन् १९४७ की बात है जब पाकिस्तानियों और कबीलाइयों ने षड़यन्त्र करके काश्मीर पर कई मार्गों से हमला किया। काश्मीर की १२ हजार सेना को वहाँ का तत्कालीन दीवान पहले ही बिखेर चुका था। इस सेना के एक दस्ते का ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह था। वह १२ हजार आक्रमणकारियों का मुकाबिला करने के लिए अपनी छोटीसी सेना लेकर मुजफ्फराबाद की दिशा मे गया। मुजफ्फराबाद मे कबीलाइयों ने डुगडुगी पीट कर घोषणा की थी कि श्रीनगर मे ईद मनाई जावेगी। ईद मनाने से उनका प्रयोजन कतल, लूटमार और आग लगाने से था।

ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह ने प्रण कर लिया था कि यह न होने पावेगा। लुटेरों ने ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह की छोटीसी सेना के मुसलमान सिपाहियों को बरगलाकर अपनी ओर फोड लिया। वे बेईमानी करके दुश्मनों से जा मिले। ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह की सेना मे लगभग १४० योद्धा रह गए और सामने नदी के पुल के उस पार, जो नमलापुल कहलाता है, बारह हजार सुसज्जित पाकिस्तानी और कबीलाई !! वर्तमान युग के सभी हथियारों के साथ !!!

काश्मीर के महाराज ने उस समय तक यही निश्चय न कर पाया था कि क्या करें, हिन्दुस्थान से मिल जायँ, स्वतन्त्र होकर रहें या पाकिस्तान का आसरा पकड़ें।

परन्तु ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह और उसके सैनिकों के मन में अनिश्चय बिलकुल न था। वे अपने जीतेजी इन डाकुओं द्वारा श्रीनगर का विनाश न होने देने का प्रण कर चुके थे।

उनको कहीं से भी किसी प्रकार की सहायता की आशा न थी सब सहारे टूट चुके थे।

फिर भी इन वीरों ने देश-सेवा के लिए अपने सिरों पर कफन बाँधे। इनमें कुछ स्त्री-डाक्टर भी थीं। वीरता में वे अपने भाइयों से पीछे नहीं रहीं।

वे सब २४ अक्टूबर को युद्ध में बलिदान हो गए।

सम्पूर्ण निस्सहायता की भी परिस्थिति में इन स्त्री-पुरुषों ने जो जौहर दिखलाया वह सूरमाओं के इतिहास में स्वर्ण के अक्षरों में लिखने योग्य है। वह वीरता अनुपम थी। काश्मीर क्या, भारत भर उन वीरों का चिरकृतज्ञ रहेगा।

'काश्मीर का काटा' एकाङ्की नाटक में इसी चमत्कारपूर्ण देश-सेवा की कहानी है।

वृन्दावनलाल वर्मा

नाटक के पात्र—

पुरुष—

ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह

मेजर भीमसिंह

अर्दली

दो कैदी

स्त्री—

कैप्टिन पार्वती (डॉक्टर)

कैप्टिन गौरी (डॉक्टर)

अभिनय के पात्र

पहलीबार

परिचयदाता पठान—श्री इन्द्रकुमार कञ्चन
ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह—श्री बाबूलाल मारू
(भू० पू० उपनिर्देशक न्यू-थिएटर्स)
मेजर भीमसिंह—श्री जयदेव वर्मा, बी० ए० एल-एल० बी०
कैप्टेन पार्वती—सुश्री गान्धारी जौहरी
कैप्टेन गौरी—सुश्री सावित्री सकसेना
अर्दली—श्री दशरथराव पवार
पहला कैदी—श्री महावीरप्रसाद अग्निहोत्री,
बी० एस० सी० एल-एल० बी०
दूसरा कैदी—श्री रामकृष्ण वर्मा, बी० ए० एल-एल० बी०

दूसरीबार

परिचयदाता पठान—श्री इन्द्रकुमार कञ्चन
ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह—श्री बाबूलाल मारू
(भू० पू० उपनिर्देशक न्यू-थिएटर्स)
मेजर भीमसिंह—श्री जयदेव वर्मा, बी० ए० एल-एल० बी०
कैप्टेन पार्वती—सुश्री सरला गुप्त
कैप्टेन गौरी—सुश्री सावित्री सकसेना
अर्दली—श्री दशरथराव पवार
पहला कैदी—श्री छोटेलाल पांडे
दूसरा कैदी—श्री रामकृष्ण वर्मा, बी० ए० एल-एल० बी०

काश्मीर का कांटा

[स्थान—काश्मीर का पहाडी भाग—उडी के पास, नमला पुल के बिलकुल निकट। बिखरे हुए ऊंचे-नीचे पहाडों के बीच म नदी, नाले और झरने। इधर-उधर हरे-भरे विशाल पेड, रङ्ग बिरङ्गे फूलों से लदे हुए छोटे-बडे पौधे और एक ओर सेब का उजडा हुआ बाग। कुछ दूरी पर एक छोटासा अधजला गाव। उसके पास रौंदे हुए हरे खेत। एक ओर से साफ-सुथरा राजमार्ग आया है जिसके दोनों ओर सनोबर के ऊँचे-ऊँचे पेड हैं। यह मार्ग पहाडों में होकर आगे चला गया है और पुलपर स नदी को पार करता है। समय—क्वार के शुक्लपक्ष के अन्तिम सप्ताह की रात्रि। चादनी में दूर के पहाड की चोटी पर हिम झिलमिला रही है। पहाडियों की ओट लिए हुए काश्मीरी सेना टोलिया बाधे हुए इधर उधर गढों और खाइयों में मोर्चे लगाकर पडी हुई है, मानो आक्रमणकारियों पर टूट पडने की घात में हो। इस काश्मीरी सेना का भिन्न-भिन्न टोलिया का सेनानायक के एक छोटे से तम्बू के साथ सम्बन्ध है जो एक ओट में खडा कर लिया गया है। तम्बू एक ओर से खुला है। सेनानायक ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह, तम्बू में, काठ की कुर्सी पर बैठा हुआ है। अगल बगल म काठ की कुर्सिया पडी हुई है। सामने छोटी सी मेज है जिसपर टेलीफोन लगा हुआ है और कुछ कागज रक्खे है। इस टेलीफोन का सम्बन्ध श्रीनगर से भी है। ब्रिगेडियर फोन को कान से लगाए है और कुछ चिन्तित दिखलाई पडता है। वह टेलीफोन की डाडी पर बार बार उँगलिया पटकता है, पर उसको श्रीनगर से कोई उत्तर नहीं मिलता। वह झल्लाकर फोन को मेज पर रख

देता है और खड़ा हो जाता है। ब्रिगेडियर सुन्दर आकृति का पुष्टदेह सैनिक है।]

ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह—अर्दली ! अर्दली !!

(अर्दली का प्रवेश)

अर्दली—आज्ञा।

ब्रिगेडियर—कोई आहट मिल रही है ?

अर्दली—कोई भी नहीं।

ब्रिगेडियर—मेजर भीमसिंह को भेजो। अपने तम्बू में होंगे।

अर्दली—मेजर भीमसिंह, पुल के पास वाली पहाड़ी पर, टोली नम्बर १० को देखने के लिये गए हैं।

ब्रिगेडियर—कितनी देर हुई ?

अर्दली—वहां पहुंच गए होंगे।

ब्रिगेडियर—अच्छा जाओ।

(अर्दली जाता है)

ब्रिगेडियर—(टेलीफोन को उठा कर और टोली नम्बर १० के फोन से संयुक्त करके) देखिए—हां—मेजर भीमसिंह—क्या ! हां—तोप का ठिया ठीक कर रहे हैं ?—पहले क्या ठिया ग़लत था !—हूँ—अच्छा, बदलने की जरूरत पड़ी है—हां—क्या कहा !—सब चले गए हैं ?—कम से कम इनको मैं ईमानदार समझता था। हूँ—हथियार भी ले गए। ओफ !! परन्तु परवाह मत करो। और भी दृढ़ हो जाओ। तुम सब कितने रह गए हो ?—ऐ ! केवल ग्यारह !—हूँ—अच्छा—मैं और सिपाही भेजता हूँ। मेजर भीमसिंह को जल्दी लौटने को कहो। हां—(टेलीफोन को रख देता है और मेज पर रक्खे हुये एक समाचारपत्र को विचलता में उठाता है और कुछ क्षण टहलता है। फिर पत्र पर आंखें घुमाता है। परन्तु वह समाचार या लेख

नहीं पढ़ता, विज्ञापन स्तम्भों में से एक विज्ञापन को पढ़ता है पढ़ता जाता है और बहुत बेसुरे ढङ्ग से गुनगुनाता है)

तारे कहते रात से कहां चांदनी छुटकी ?
नीले नभ को छोड़ कर किस कोने में भटकी ?

क्या बढ़िया विज्ञापन निकलने लगे हैं पत्रों में ! —(पढ़ता है) एक बहुत ही सुन्दर कुआरी लड़की चाहिये, जिसका बाप, बहुत रुपये वाला हो, —ऐसे लड़के के लिए, जिसका बाप करोड़पति है। ह ! ह !! ह !!! अर्दली, अर्दली।

(अर्दली आता है)

अर्दली—आज्ञा जनरल साहब।

ब्रिगेडियर – तुम ब्याह करना चाहते हो ?

अर्दली ब्याह जनरल साहब !

ब्रिगेडियर—हां जी। (समाचार पत्र पर दृष्टि घुमाते हुये) देखो न, इसमें एक विज्ञापन और है—(पढ़ता है) -लड़की बहुत पढ़ी लिखी, और अत्यन्त सुन्दर। अखबार के द्वारा, प्रेम-लीला और भावर के ज़रिए जन्म भर के लिए युगल जोड़ी !!

अर्दली—ब्याह जनरल साहब !!! मुज़फ्फराबाद में कबीलाई पठानों ने, डुगडुगी पीटी है कि श्रीनगर में ईद मनाएंगे। ब्याह !!!! ब्याह कैसा ?

ब्रिगेडियर—इसी अखबार में कबीलाइयों की वह घोषणा भी छपी है। हमको तुमको भी कोई बड़ा उत्सव मनाना चाहिए। समझे ? क्या समझे !

अर्दली—आज्ञा ? कबीलाई बरफ की आंधी की तरह भरभराते चले आरहे हैं। माफ करें तो विनती करूँ—यह उत्सव मनाने का समय नहीं है—हम लोगों ने तो मौत के साथ उत्सव मनाने की ठानी है।

ब्रिगेडियर—(हँसते हुए खड़े होकर) शाबाश, धन्य मेरे सिपाही। ब्याह से मेरा मतलब इसी प्रण से है।

(टेलीफोन की घण्टी बजती है)

शायद श्रीनगर से कुछ सेना सहायता के लिए आ रही है। (उदास स्वर मे) आवे और न आवे। वहा होगी भी कितनी ?

(घंटी फिर बजती है)

ब्रिगेडियर—(फोन को कान से लगाकर) जी, मैं ही हूँ—जी राजेन्द्रसिंह। श्रीनगर से सेना बिल्कुल नहीं भेजी जा सकती !! हूँ। —खैर। हूँ—श्रीनगर और बारामूला के बीच के रास्ता और फोन की रखवाली के लिए थोड़े से ही सिपाही हैं। उनको ड्यूटी पर से नहीं हटाया जा सकता। —जी—अभी नमगा पुल सुरक्षित है। कबीलाई —लुटेरे—पुल को पार नहीं कर पाए हैं। पुल को तोड़ देना चाहता हूँ, परन्तु गाठ मे डाइनामाईट बिलकुल नहीं है। क्या आप थोड़ा सा भेज सकते हैं ? हूँ—नहीं भेज सकते, तो जाने दीजिए। खैर। जी ? —हूँ—हम कुल एक सौ बयालीस रह गए हैं। हमारे जितने मुसलमान सिपाही थे सब के सब लुटेरों से जा मिले हैं—पहले ही सूचना दे दी थी। जी—हिन्दुस्थान से मदद नहीं आ रही है ? हूँ—अभी हिन्दुस्थान सरकार के साथ शामिल होने की बातचीत ही चल रही है !! कुछ तै नहीं हुआ ? हूँ—खैर। हूँ—जब तक हम लोगों मे से एक भी ज़िन्दा है, तब तक कबीलाई पुल के इस पार नहीं आ सकेंगे। जी हा—जरूर ? (हँसकर) हमारा अर्दली ब्याह करने जा रहा है। हा—हा, सच मानिए और हम सबके सब ब्याह करने जा रहे हैं—(और भी जोर के साथ हँसकर) बरात अमरपुरी जायगी। अमरपुरी। दुलहिन का नाम है मौत—जी ठीक कहता हू। उसके बराबर सुन्दर और कोई दुलहिन नहीं। इतनी सुन्दर कि अखबार वाले उसकी शादी का विज्ञापन कितने भी दामो कभी पहले से नहीं छापेंगे। (हँसते हुए ही) हा, भावर पड़ जानेपर फिर

मुफ्त मे छाप देंगे। (नेपथ्य मे धडाके की आवाज होती है) पड़ोस मे कुछ गड़बड़ है। महाराज कहा हैं ? जी ?—अच्छा ! हूँ—हां · आप —महाराज से नमस्ते कह दीजिएगा। —धन्यवाद। हम सब एक सौ बयालीस सिपाहियों का। हूं—घबराइए नहीं। हां—गलत नहीं कह रहा हूँ। धन्यवाद। सारे काश्मीर को हम लोगों का नमस्ते, और यदि काश्मीर हिन्दुस्थान में मिल जाय तो उसको भी। नमस्ते, नमस्ते। (टेलीफोन रख देता है) अर्दली ! अरे तुम यहीं खड़े थे !! कोई हर्ज नहीं, कोई हर्ज नहीं। हम सब के सब दूल्हा हैं और सबके सब बराती !!!

अर्दली—जनरल साहब, मैं अदब-कायदा, शासन डिस्पिलिन सब भूल गया था। क्षमा किया जाऊँ।

जनरल—मैं भी सब भूल गया। (हँसकर) अब ब्याह होने मे ज्यादा देर नहीं है। (टहलते हुए) ब्याह के पहले दूल्हा शासन-वासन सब भूल जाता है। समाचार पत्रों के ज़रिये ब्याह छिपलुक कर होता है और हम लोग खोलकर और मन भरके करेंगे। ब्रिगेडियर और अर्दली में कोई अन्तर नहीं। अच्छा, डाक्टर पार्वती देवी और डाक्टर गौरीदेवी को भेजो। (बैठ जाता है)

अर्दली—जो आज्ञा। (प्रसन्न जाता है)

(पार्वती और गौरी आती है। दोनों युवतियां हैं और सुन्दर। राजेन्द्रसिंह अभिवादन के लिए खड़ा हो जाता और उनको बिठला लेता है। ज़रा बारीकी के साथ देखने पर साफ मालूम हो जाता है कि वे दोनों कई रात से नहीं सोई हैं)

ब्रिगेडियर—देवी पार्वती अब अस्पताल की ज़रूरत नहीं रहेगी—देवी गौरी—

पार्वती—क्यों जनरल साहब ? क्या इस स्थान को छोड़ रहे हैं ? सहस्रों की संख्या में कबीलाई लुटेरे पुल पर से पिल पड़ेंगे और तुरन्त बारामूला को अधिकार में कर लेंगे। फिर श्रीनगर की कुशल कहां ?

ब्रिगेडियर—अस्पताल नहीं रहेगा, और अभी कबीलाइयों को लोहे के चने चबाने बाकी हैं। देवी गौरी और आप दोनों, अस्पताली सामान के साथ तुरन्त श्रीनगर जाइए।

गौरी—समझ में नहीं आया।

ब्रिगेडियर—मेरा आदेश बिलकुल स्पष्ट है। आप लोगों की जरूरत नहीं है।

दोनों—बिलकुल समझ मे नहीं आया।

ब्रिगेडियर—और न किसी अस्पताली सामान की जरूरत है।

(वे दोनों एक दूसरे का मुंह देखने लगती है)

दोनों—बात क्या है!

ब्रिगेडियर—बात बिलकुल साफ है। (हंसते हुए) आप लोग घायलों की ही तो मरहम पट्टी और देखभाल करती हैं न? मरे हुओं पर तो आपका कोई उपाय है ही नहीं। हमारी इस टुकड़ी मे अब कोई भी घायल नहीं होगा।

पार्वती—आप बहुत जागे हैं। थोड़ा सा सो लीजिये।

ब्रिगेडियर—और हम सब के सब दूल्हा बनने जा रहे हैं। ह! ह!! ह!!! ह!!!!

गौरी—मै भी यही कहने वाली थी। सो लेने से जी हल्का हो जायगा। दिमाग में ठंडक देने वाली मै कोई दवा बनाए लाती हूँ।

ब्रिगेडियर—(हँसकर) आप समझती है कि मेरे दिमाग में कुछ फितूर होगया है। बिलकुल सम्भव है। परन्तु जितनी ठण्डक आज तीन रातों के जागरण पर भी मन मे पा रहा हूँ उतनी कभी मन मे अनुभव नहीं की थी। हम लोगों में से अब कोई घायल नहीं होगा—हम सब मरने जा रहे हैं। (और भी हँसकर) हमारी लाशों की भी कोई चिन्ता नहीं की जानी चाहिए। कबीलाई लुटेरे श्रीनगर में ईद नहीं मना

सकेंगे । नहीं मना सकेंगे । उनको हमारी लाशा पर ईद मनानी होगी । अब आया आपकी समझ मे ?

दोनो—ऐ !!!

ब्रिगेडियर—हा । सीमान्त और पाकिस्तान के तोते अपने यहा के अनार छोड़ कर काश्मीर के अखरोट तोड़ने आरहे हैं । आप लोगो की और आपके सहायको की तथा किसी भी अस्पताली सामान की ज़रूरत नहीं । इसको बचा ले जाइये । यदि काश्मीर हिन्दुस्थान मे शामिल हो गया और काश्मीर की सहायता के लिए हमारे हिन्दुस्थानी भाई आगये तो वह सामान उनके काम मे आवेगा ।

गौरी—(कण्ठावरोध के साथ) काश्मीर हिन्दुस्थान से कटकर नही रह सकता। महाराज भले ही सोच विचार की धार मे पडे हो, परन्तु महारानी साहब के निर्णय और निश्चय मे कोई सन्देह नहीं ।

ब्रिगेडियर—तो उनके निश्चय को और भी दृढ करने के लिये और उस निश्चय को कार्य का रूप दिलवाने के लिये जाइए न यहा से ! अभी मार्ग और टेलीफोन बचे हुए हैं। हमारे हाथ मे मोटर लारिया हैं । सब सामान के साथ जाइये । यदि महारानी साहब का निश्चय फली-भूत होगया तो हम-एक सौ बयालीस सिपाहियो का मरना व्यर्थ नही जायगा । हिन्दुस्थान से हवाई बेडा और भूमि–सेना आवेगी । बख्तरी गाडिया, और टैंक, तोपे , बम इत्यादि । (दात पीस कर) फिर कबीला–इयो को आटा दाल का भाव मालूम पड़ेगा ।

पार्वती—जनरल साहब, हम लोग आपके साथ काश्मीर के लिए अपना बलिदान करेंगी ।

ब्रिगेडियर—(खड़े होकर) क्या ! ओफ !! क्या कहती हो देवियो ? हम पुरुषो के जीतेजी स्त्रिया बलिदान होंगी !! यह नदी, यह निर्झर, ये हरे-भरे विशाल पेड़, ये रग-बिरगे फूल, फलो से लदे हुए ये सेब के बाग़, धान के हरे-भरे खेत, उनमे काम करने वाले किसान–मज़दूर और

खेलने वाले बच्चे राख कर दिए जायें हम पुरुषो के जीतेजी !!! स्त्रिया बलिदान करेंगी, तब पुरुषो को धिक्कार है !!!! (ठण्डक के साथ) और देखो डॉक्टर, सिपाही तो थोडे दिना की कवायद-परेड और छावनी की रपटा-रपटी मे मारने-मरने योग्य बन जाता है, परन्तु डाक्टर? और नर्स? ये तो थोडे समय मे नहीं बनाए जासकते। नहीं। नहीं। आपलोगों को जाना ही होगा।

दोनो—हमलोग नहीं जायँगी।

ब्रिगेडियर - मेरी आज्ञा है। आप आज्ञा का उल्लघन करेंगी तो कोर्टमार्शल करके सज़ा दूगा—(हँसकर) परिणाम एक ही - लारी मे बन्द करके भेज दूँगा। (गम्भीर होकर) परन्तु एक उलझन हो जायगी। पहरे के लिए सिपाही भेजने पड़े गे। हम उतने कम हो जायँगे और फिर जिन सिपाहियो ने सुरपुरी मे मौत के साथ ब्याह करने की ठानी है, क्या वे जायँगे?

(टेलीफोन की घण्टी बजती है। ब्रिगेडियर फोन को हाथ मे लेता है)

ब्रिगेडियर—हू। ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह। अच्छा, मेजर भीमसिंह टोली नम्बर दस की पहाड़ी से बोल रहे हो? क्या हाल है? हूँ—ओह! कबीलाई पुल के पास आ गए थे! हूँ—धबाका हमने भी सुना था। अच्छा। बहुत अच्छा। पीछे हटा दिए गए! आप थोड़ा देर के लिए, यहा आजाइए। एक योजना बनानी है। क्या? कबीलाइयो के पास टैंक भी हैं? खैर, कोई बात नहीं। उनका हर हालत में मुकाबिला करना है। क्या? हूँ।—हू—अभी नहीं आसकते!—अरे नहीं। इतनी जल्दी प्राण मत दो भाई। कबीलाइयो और उनके पाकिस्तानी हिमायतियो से बहुत-बहुत कीमत वसूल करके तब प्राण देंगे।—हूँ—तुम नहीं आ सकते तो मै आता हूँ। नए मोर्चों को देखना चाहता हूँ।

(टेलीफोन रख देता है)

पार्वती—आप कहा जा रहे हैं ?

ब्रिगेडियर—(हँसकर) चिन्ता मत करिए। अभी वही नहीं आई है, परन्तु दस-पाच घण्टे के भीतर आयगी। मै मेजर भीमसिंह के पास जारहा हूँ। श्रीनगर से फ़ोन पर कोई बुलावा आवे तो आप बातचीत करना और मुझको टोली नम्बर दस से बुला लेना।

(जाता है)

गौरी—इनके निश्चय की दृढता मे काई सन्देह नहीं जान पड़ता, पार्वती।

पार्वती—परन्तु हमलोग इनको बिना किसी अस्पताली सहायता के यो ही छोड़कर नहीं जायँगी, गौरी। हमलोग उनके निश्चय की परवाह नहीं करेंगी।

गौरी—मैं ब्रिगेडियर के दूसरे निश्चय की बात कर रही हूँ पार्वती। उन्होंने आत्म बलिदान का निश्चय कर लिया है। उनको बचाना चाहिए। जनरल मे साधारण सैनिक जैसा दुस्साहस नहीं होना चाहिए।

पार्वती—मै भी यही कहती हूँ—सेनानायक ने यदि अपने को समाप्त कर दिया तो सेना का सचालन कौन करेगा ? पर यहा पर स्थिति ही दूसरी है।

गौरी—काश्मीर मे बारह हजार की गिनती मे सेना है, परन्तु नासमझ दीवान ने या विकट स्थिति ने इस सेना के खण्ड खण्ड करके गलत जगहो पर इधर उधर भेज दिया है।

पार्वती—दीवान को तो महाराज ने हटा दिया है, परन्तु सेनाओ के खण्ड अब इखरे-बिखरे अड्डो पर से वहा नहीं लाये जा सकते। मैं सोचती हूँ दीवान को नासमझ बनने ही क्यो दिया गया ? कमसे कम एक महीने से भारत सरकार प्रबोधन कर रही है। पाकिस्तानी शासकों ने लाहौर मे अफ्रीदियो के सरदारों को बुलाकर पन्द्रह हज़ार कबीलाइयो की सेना सगठित करने की योजना बनाई, तब भारत सरकार ने महाराज

को सूचना देदी, जब राज्य के कुछ मुख्य कर्मचारियो ने राज-द्रोह और देशद्रोह करके काश्मीर को भारत से काटकर अनजाने प्रवाह में फेंक-बहा देने का षडयंत्र रचा, तब सूचना देदी—

गौरी—कबीलाई तथा पाकिस्तान के सीमाप्रांती सहस्रो की सख्या मे जो तीन महीने से बराबर हमारे काश्मीर की केसर-क्यारियो मे साप की तरह घुसते चले आ रहे हैं वह भी शासक वर्ग को तुरन्त सचेत न कर सका !!! सब जानते हुए भी, सब समझते हुए भी।

पार्वती गौरी, इस सुन्दर भूमि का कुछ दुर्भाग्य है। महाराज अभी तक निर्णय नहीं कर पा रहे हैं कि पाकिस्तान में मिलें या हिन्दुस्थान मे, अथवा स्वतन्त्र बने रहें।

गौरी—स्वतत्र ! धनबल और जनबल के हिसाब से काश्मीर बहुत छोटा सा प्रदेश है। उसका सुहावनापन सदा से लुटेरो और हत्यारो को न्यौता देता आया है।

पार्वती—इस युग मे कोई भी देश अकेला पड जाने की मूर्खता नहीं कर सकता। काश्मीर की सीमा से अफगानिस्तान, रूस, चीन और तिब्बत लगे हुए हैं—

गौरी—और लुटेरों तथा हत्यारो को रास्ता देने वाला पाकिस्तान भी।

पार्वती—वह जगली भूसा और छाती का काटा तो सैकडो मील की लम्बाई तक काश्मीर की सीमा से लगा हुआ है।

गौरी—पाकिस्तान और हिन्दुस्थान शायद फिर कभी एक हो जाय।

पार्वती—गौरी, यह अपने को धोखा देने वालो का स्वप्न है। हिन्दुस्थान तो पाकिस्तान का मित्र बन कर रहना चाहता है, परन्तु पाकिस्तान उस तरह का बर्ताव कर रहा है जैसा हिलते हुए दातो वाली कोई बुढिया ओठो से काटखाने का प्रयत्न करे। एक कैसे हो सकते हैं ये दोनो !

गौरी—इस पर भी महाराज, अभी तक तै नहीं कर पाए हैं कि क्या करें ?

पार्वती—सीधी तो बात है। पाकिस्तानियों ने कह दिया कि राजाओं और नवाबों को अबाध अधिकार है कि वे चाहे कुछ करें, जनता के मत की कोई परवाह नहीं। भारत कहता है कि राजाओं के अधिकार का उद्गम जनमत है। कश्मीर का शासन जन-मत के नेताओं को कैदखाने में डाले है, भारत के साथ शामिल होने की जो एकमात्र शर्त है उसको वह मानता नहीं। इसीलिए सब ढुलमुलपन है।

गौरी—इधर पाकिस्तान ने काश्मीर को दबोचने में कोई भी कसर नहीं लगाई है। राज्य मे बागियों का एक दल खड़ा कर दिया है—पहला कदम पाकिस्तान में शामिल होना, दूसरा राजा को गद्दी से उतार कर अलग कर देना और तीसरा पाकिस्तान के मुक्खड़ों तथा सरहद्दी लुटेरों और हत्यारों से काश्मीर और जम्बू के हरे भरे मैदानों को भर देना। फिर भारत के ऊपर निरन्तर आक्रमण करते कराते रहना।

पार्वती—ओफ ! गौरी, तुम श्रीनगर को फोन करो। महारानी साहब से बात करो। उनसे कहो कि स्थिति भयङ्कर है, वे महाराज को भारत के साथ मिल जाने के लिए विवश करें, एक एक क्षण महत्व का है। करो फोन।

(गौरी फोन करती है, परन्तु कोई उत्तर नहीं मिलता)

गौरी—पार्वती, फोन पर तो कोई बोलता ही नहीं। जान पड़ता है किसी ने फोन का तार कहीं बीच से काट दिया है।

पार्वती—एँ ! अब क्या होगा ? ब्रिगेडियर ठीक कहते थे, गौरी—हम सबको मारने और मरने के लिए तैयार होजाना चाहिए।

गौरी—पार्वती, उतावली मत होओ। मेरी एक बात सुनो। तुम तुरन्त श्रीनगर जाओ। अभी थोड़ासा समय है। श्रीनगर यहां से लगभग पचपन मील है। दो-तीन घण्टे में पहुंच जाओगी। महारानी साहब से

कहना कि उनकी डाक्टर गौरीदेवी मरते समय प्रार्थना कर गई है कि महाराज तुरन्त दिल्ली जायें, भारतसंघ मे शामिल होजायें। वे हिन्दुस्थानी सेना की सहायता लें, फिर जैसे ही हवाई गाड़ियो के बममार बारामूला, उड़ी, कोहाला और नमला पर उड़े कि कबीलाइयों और उनके हिमायतियों के देवता कूच कर जायगे।

पार्वती—मैने धीरज के साथ तुम्हारी बात को सुन लिया गौरी। मे यहां से नही जाऊँगी, चाहे पृथ्वी इधर की उधर हो जाय और चाहे कोर्टमार्शल का बाप मेरे सिर पर बिठला दिया जाय। महारानी साहब के पास तुम्हारी पहुच है। तुम्ही जाओ।

गौरी—तुम यहा अकेली क्या करोगी पार्वती? इसमे कोई सन्देह नहीं कि हमारे अफसरो और सिपाहियो ने अपने सिरो पर कफन बाध लिए है। उनको अब किसी डाक्टर, नर्स या दवा की ज़रूरत नहीं।

पार्वती—मै अकेली!!! (हॅसकर) अकेली नहीं हूॅ और न रहूगी। मेरे साथ मे सीता, सावित्री, गौरी झांसी की रानी और अनेक देविया होंगी। विश्वास रक्खो, मैं बहुतसे लुटेरो को बन्दूक के घाट उतारूँगी।

गौरी—(घबराकर) और यदि तुम पकड़ली गई तो?

पार्वती—वाह गौरी! वाह!! क्या हिन्दू नारी को यह भी सिखलाने की जरूरत है कि वह ऐसी अवस्था मे क्या करे? (रिवाल्वर निकालकर) मेरा यह तमञ्चा रणक्षेत्र में सदा साथ रहता रहा है। एक गोली छोड़ूॅगी आक्रमणकारी के ऊपर और दूसरी छोड़ूॅगी अपनी कनपटी पर।

(फोन की घण्टी बजती है)

गौरी— प्रसन्न होकर) वह भ्रम ग़लत था। श्रीनगर से समाचार आरहा है। सुनू क्या बात है। (फोन को कान से लगाती है) जी— मै हूॅ डाक्टर गौरी देवी। आप श्रीनगर से बोल रहे है? क्या? टोली नम्बर दस से? हू—हा—आप—आप? ब्रिगेडियर जनरल साहब?

अच्छा। हू—श्रीनगर से कोई समाचार नहीं आरहा है। जब आपने खटखटाया तो मै समझी थी कि श्रीनगर से कोई बोल रहा है।··जी नहीं मालूम होता है कि श्रीनगर मे या तो टेलीफोन एक्सचेञ्ज पर कोई है नहीं, या शायद बीच मे से किसी ने तार काट दिया है। जी ?—हूँ—मैंने विचार बदल दिया है। श्रीनगर जाने के लिए तैयार हूँ। जी ? अच्छा। आप आरहे हैं। मै तैयार होती हूँ जाने के लिए।

(टेलीफोन रख देती है)

गौरी—पार्वती, तुमको अकेली छोड़ कर मेरा जी उमेठ सी खा रहा है। केसरिया काश्मीर उसी के फूलों के रक्त से सजोया जायगा !! पार्वती, (गद्गद् होकर) मैं अकेली नहीं जाना चाहती।

पार्वती—तुम असल मे डरती हो। डरपोक हो !!

गौरी—(तिनक कर) मै डरपोक हूँ ! (तमन्चे पर हाथ रख कर) मेरे पास तमन्चा है और उसका उपयोग भी जानती हू।

पार्वती—(मुस्करा कर) तब मुझको यहा अकेली समझने की भूल मत करो।

गौरी—अच्छा। अच्छा। पार्वती, मुझको आशा है कि भारत मे सेना हम लोगों की सहायता और रक्षा के लिए आवेगी।

पार्वती—आवे, चाहे न आवे, मेरे निश्चय में अतर नहीं पड़ने का काश्मीर की रक्षा करने में भारत अपनी ही तो रक्षा करेगा।

गौरी—जैसे अग्रेज लोग सीमात की रक्षा करके अपने सम्पूर्ण अधिकार की रक्षा करते थे। वे तो कबीलाइयों को रुपया पैसा भी दिया करते थे। लाखों रुपए साल, कई लाख रुपये हरसाल !

पार्वती—(क्रुद्ध कर) सापों को दूध पिलाते थे सापों को दूध। उससे क्या उनका जहर कभी कम हुआ ? लुटेरों और हत्यारों को मधुपर्क पिलाने का आदर नहीं मिलना चाहिए। उनको तो गोलिया और बम खिलाना चाहिए। तब कहीं वे अपने पिशाचपने से कुठित हो सकते हैं।

गौरी—भारतीय सेना उनका यही सत्कार करेगी।

पार्वती (उदास स्वर में) गौरी, शायद ऐसा हो सके। परन्तु भारत भी तो बहुत समृद्ध देश नहीं है। और काश्मीर का यह कांटा अनन्तकाल के लिए है। भारत की गाँठ में युद्ध के जो साधन हैं वे परमित हैं।

गौरी—भारत के साधन चाहे परमित हो। पर उसके उत्साह की कोई हद नहीं, और जैसे पानी के बादलो में से बिजली उत्पन्न हो जाती है उसी तरह भारत का सुदर्शन चक्र वज्रो की भी वर्षा कर सकता है।

पार्वती—यह ठीक है गौरी, परन्तु काश्मीरियो को स्वय भी तैयार होना चाहिए।

गौरी—काश्मीर के दो दल आपस के झगड़ो के कारण उन्नति के अवरोधक हैं।

पार्वती—एक दल लुटेरो से जा मिला है। इसी दल के समर्थक मुसलमान सिपाही काश्मीर की सेना मे थे जो देश-द्रोह, राज-द्रोह और धर्म-द्रोह करके लुटेरों मे शामिल होगए हैं।

गौरी—परन्तु एक दल तो मुसलमानों का ऐसा है जो काश्मीर भक्त हैं।

पार्वती—उस दल में बहुत से हिन्दू भी हैं, परन्तु उनके नेता कैदखाने मे पड़े हैं। गौरी, मैं तुमसे अनुरोध करती हू—महारानी साहब से प्रार्थना करना, अवसर मिले तो महाराज से भी विनती करना कि इस दल के नेताओं को छुटकारा देदें और शासन में उनको घुला मिला ले।

गौरी—महारानी साहब की राय पहले से ही स्पष्ट रही है।

पार्वती—गौरी जहा विवेकमय शक्ति नहीं, वहा कष्ट और विनाश के सिवाय और कोई परिणाम नहीं हो सकता। सारे देश में सैनिक शिक्षा अनिवार्य कर दी जानी चाहिए।

गौरी—हां पार्वती। मैं जाकर महारानी साहब से यह भी कहूँगी कि कैदखानो मे पड़े हुए देश-भक्तों को छुटकारा दिलवावे, उनको शासन में अधिकार दें और भारतीय सघ में काश्मीर को मिलवा दें, तथा काश्मीरी स्त्री पुरुषों को हथियार देकर आक्रमण करने और अपनी रक्षा करने के योग्य बनावें।

पार्वती—स्त्रियो को मारने के लिए और मरने के लिए तैयार करें—वे स्वय उनका नेतृत्व करें, महारानी साहब स्वय। समझी गौरी?

गौरी—अवश्य, मै स्वय इस काम को पूरी लगन के साथ करूँगी। कहीं तुम भी मेरे साथ होती पार्वती?

पार्वती—फिर वही मोह! झासी की रानी लक्ष्मीबाई का हाल हमने तुमने पढा है। वे वीर थीं और गीता की भक्त। वे कभी मोह में नहीं पड़ीं।

गौरी - हा पार्वती—हम सब झासी की रानी लक्ष्मीबाई बनने का उद्योग करेंगीं। नागिने बनकर अत्याचारी आक्रमणकारियों को डसेंगीं; विश्वास रक्खो। ससार भर हमारे वीर कर्म और त्याग धर्म को देखेगा और हमारी पुकार को सुनेगा।

पार्वती—सुनेगा। पर हर हालत मे हमारा कर्तव्य निश्चित है। (नेपथ्य मे आहट पाकर) शायद ब्रिगेडियर जनरल साहब आ रहे हैं।

[ब्रि० राजेन्द्रसिह और मेजर भीमसिह का प्रवेश। मेजर भीमसिह अधेड़ अवस्था का सतर्क और छरेरा सैनिक है। वह पार्वती और गौरी का अभिवादन करता है। दोनो बैठ जाते है। थके हुए से है, परन्तु उनकी आंखो मे तेज और निश्चय है]

ब्रिगेडियर—आप जा रही हैं डाक्टर गौरी—ठीक है। और आप भी डाक्टर पार्वती?

पार्वती—जी नहीं।

ब्रिगेडियर—(मुस्कराकर) कोर्ट मार्शल करूंगा आपका।

पार्वती—या पोस्ट मार्टम* ? (हँसती है)

ब्रिगेडियर—(गंभीर होकर) मरने की भावना रखने वालो
अन्तर कितनी जल्दी मिट जाता है ! (मुस्कराकर) शायद पोस्ट मा
किसी का भी न होगा।

गौरी—मै चाहती हूँ कि मै भी इसी रण-क्षेत्र में प्राण देती।

पार्वती—श्रीनगर जाकर जो अत्य त जरूरी काम करने हैं अ
मानो तुम्हारे सामने कोई महत्व ही नहीं। मरने की तो असमर्थ अ
निहत्थे ठाना करते हैं। मैं तो यहा मारने के लिए रुक रही हूँ।

ब्रिगेडियर—हमारे शासको से निवेदन करना डाक्टर गौरी
काश्मीर या हिन्दुस्थान शाति के समय की ढीली ढाली आदतो से
बचाया जा सकता। तीव्र और प्रबल उपाय काम मे लाए बिना वि
की भी कुशल नहीं।

मेजर भीमसिंह—इस ओर रुझान किसीका भी नजर नहीं आत
हमारे उच्च और उदार नेता हिटलर की तरह के निष्ठुर और स्वार्थ
लोगो के लिए ज़रूरत से ज्यादा भले हैं। रगे सियारो को समझा बु
कर उनकी राय बदलने की कोशिश करना बेकार है।

ब्रिगेडियर—ठीक है। एक समय था जब देश-द्रोही दुश्मनों
लल्लो चप्पो करने के लिए कुछ कारण भी था, परन्तु अब शाति अ
सान्त्वना तथा प्रसन्न करने की नोति से सिवाय नुकसान के और क
परिणाम न होगा। महाराज जनता के नायकों को अपने साथ ले अ
अपनी जनता के होकर रहें। कह देना कि मरने के पहले उनके स
सिपाहियो की यही पुकार थी।

पार्वती—मैं इनको यह सब समझा चुकी हूँ।

ब्रिगेडियर—(अनसुनी सी करके) मुस्लिम कान्फ्रेंस और उस
नेताओ की खुशामद बन्द करदे। इन्हीं लोगों ने हमारी सेना के मुसलम

---

* शव-परीक्षा।

सिपाहियों को बरगलाया और उनसे बेईमानी करवाकर आक्रमण-कारियो के पक्ष में मिलवाया। ये हैं थोड़े से ही परन्तु बर्बर और धर्म हीन हैं। महाराज शेख अब्दुल्ला का सहयोग प्राप्त करें जो जनता का सही नेतृत्व कर सकते हैं।

गौरी—मैं भूलूंगी नहीं।

मेजर भीमसिंह—मीर मकबूल शेरवानी का भी नाम न भूलना। वह प्राणवान देश-भक्त काश्मीर के लिए हर तरह की कुरबानी कर सकता है।

ब्रिगेडियर—हां, हां, अवश्य। वह काश्मीर का होनहार सपूत है। आह! उस तरह के यदि और बहुत से होते।

पार्वती—और यदि हमारे सब नेता कुछ दूसरे प्रकार से भी बातो को सोचते?

ब्रिगेडियर—(सोचते हुए से) हां...ऊँ .

पार्वती—जनरल साहब, अधिकाश मनुष्यों का एक कान कच्चा होता है और दूसरा पक्का।

ब्रिगेडियर—(विचार से चौंकता सा) यह समय शरीर विज्ञान और पोस्ट मारटम की चर्चा का नहीं है देवी।

पार्वती—सुनिये जनरल साहब, तुम भी ध्यान मे रखना गौरी—हमारे अनेक नेताओं का भी एक कान कच्चा और एक पक्का होता है। साधारण मनुष्यो से थोड़ा सा और ज्यादा, पक्के कान का द्वार बन्द और कच्चे का खुला हुआ।

गौरी—पार्वती, यह सब क्या कह रही हो? मैंने तो मारने मरने की ठानी थी पर मेरे दिमाग में तो ऐसी कोई अडबड बात नहीं उठी। जनरल साहब की अमरपुरी और मौत वाली बात तो समझ मे आगई पर तुम यह किस शास्त्र की चर्चा कर उठी हो?

मेजर भीमसिंह—अमरपुरी जाने के क्षण के लिए अब बहुत देर नहीं है, इसलिए इन्हें भी कुछ कह डालने दो। डाक्टर पार्वतीदेवी, कुछ और रह गया है क्या इनसे कहने के लिए?

ब्रिगेडियर—हां अब डाक्टर गौरी, यह स्थान शीघ्र ही छोड़ना चाहिए। शीघ्र ही?

पार्वती—सुनिए आप दोनों, न उस समय आपके चित्त मे कोई विकार था और न मेरे चित्त मे इस समय है। मैं जो मरने जारही हूँ उसकी एक बात नेताओं के कान तक पहुंचनी चाहिए।

गौरी—अवश्य। } एक साथ]
ब्रिगेडियर और मेजर—क्या?

पार्वती—कि, हमारे बड़े लोग कच्चे और पक्के कान का ठीक-ठीक उपयोग किया करें।

गौरी—हुं!

पार्वती—हु!! हुं क्या?

गौरी—कच्चे और पक्के कान, और, न जाने क्या क्या। (पिघल कर) पार्वती, अब भी निश्चय को बदल दो। हम दोनों श्रीनगर चलकर बहुत बड़ी देश-सेवा कर सकेंगी। चलो न बहिन?

पार्वती—बातें सुनो। नेताओ के कानों में भली और बुरी, गलत और सही सब तरह की बातें पड़ती हैं। रंगे सियारो की चिकनी-चुपड़ी गलत बातों को वे कच्चे कान की राह से हृदय में उतार लेते हैं और उसको सच्चा मान लेते हैं, तथा सचेत और सावधान करने वालों की मीठी-कड़वी परन्तु उचित और सही बातो को पक्के कान के बन्द द्वार के भीतर नहीं जाने देते।

ब्रिगेडियर—परेशान हैं बिचारे क्या करें। मेजर!

मेजर—हां—जी—(अँगड़ाई लेता है)

पार्वती—क्यो नही करे ? स्वार्थियो की गलत-सलत बातों और रंगे सियारो के चिकने-चुपड़े ढोंगो और ढकोसलो को कच्चे कान के मार्ग से हृदय मे न बैठने दें। यह मार्ग केवल सचेत और सावधान करनेवालो के लिए खुला हुआ छोड़ दे, पक्के कान का बन्द द्वार गलत बातो के लिए है जहा वे टकराती रहे, भनभनाती रहे और अन्त मे वहीं समाप्त होती रहें।

ब्रिगेडियर—हा।

मेजर—मै भी समझ गया।

गौरी—बहिन पार्वती, बात पहले कुछ अटपटी जान पड़ी थी। अब समझ गई। जिनसे कहना है वहा तक पहुंचना मेरे लिए कठिन है, परन्तु उनके कानो तक पहुंचाए बिना न रहूगी।

(नेपथ्य मे आहट होती है। चारो सतर्क हो जाते है)

(अर्दली घबराया हुआ आता है)

अर्दली—(हड़बड़ी के साथ) जनरल साहब, एक दुश्मन हमारे अड्डो में होकर घुस आया था। वह पकड़ लिया गया है। परन्तु पकड़े जाने के पहले उसने हमारे एक सिपाही को घायल कर दिया है।

(जनरल खड़ा हो जाता है। पार्वती और गौरी तमन्चे निकाल लेती हैं)

ब्रिगेडियर—हमारे सिपाही को घायल कर दिया है! उसको गोली से तुरन्त उड़ादो।

(अर्दली गमनोद्यत होता है)

ब्रिगेडियर—ठहरो अर्दली। पहले उससे कुछ सवाल करेंगे। उसको लाओ।

(अर्दली जाता है)

मेजर—यह पुल पर से आ कैसे गया ? इतनी चाँदनी रात मे !! इतने सतर्क अड्डो मे होकर !!!

ब्रिगेडियर—और शायद पुल पर ही से अगर एक दुश्मन आ-सकता है तो वे सबके सब भी आसकते हैं। हजारो की सख्या मे। कल ईद का त्योहार है। वे श्रीनगर मे ईद मनाने की घोषणा कर चुके हैं। मेजर, आज रात, बस आज की ही रात, समझ गए न? पार्वती! गौरी!! तुम दोनो श्री नगर जाओ। हम लोगो के जीते जी यदि हमारी दो काश्मीरी स गिनी मारी गई तो हमको मरने के समय व्यथा होगी।

पार्वती— दो नहीं केवल एक। ब्रिगेडियर, वह क्षण तो आपके आनन्द का होना चाहिए, क्यो कि अब आपकी बहिनें मरने की अपेक्षा मारना बहुत अच्छी तरह सीख रही हैं।

ब्रिगेडियर—ओफ! न मालूम वह दिन कब आयगा अभी तो थोड़ी ही—

[अर्दली एक कैदी को लेकर आता है। वह कैदी पठानी वेश मे है, परन्तु उसकी दाढ़ी मूछ साफ है। उसका सलवार खाका है और कुर्ता साफा इत्यादि हरे रङ्ग के। अर्दली उसकी बगल में बन्दूक तान कर खडा होजाता है। कैदी घबराया हुआ है उन दोनो स्त्रियो को उत्सुकता के साथ एक क्षण देख कर आखें नीचे कर लेता है। ब्रिगेडियर जेब मे से नोटबुक और झरनी (फाउन्टेन पैन) निकाल लेता है।]

ब्रिगेडियर—कैदी, ये दोनो देविया कप्तान पद की डाक्टर हैं, और ये मेजर हैं—मेजर भीमसिंह। जो कुछ पूछा जाय सही जवाब देना। सच बोलने से कुछ रियायत पा सकोगे, अन्यथा गोली तुम्हारे खोपड़े को फोड़ कर प्राणों को तुम्हारे ऊजड़ पहाड़ी इलाके में आराम के साथ पहुँचा देगी। समझ गए?

कैदी—जी—हा जी—ई—

ब्रिगेडियर—अपना नाम पता इत्यादि बतलाओ।

कैदी— नाम गुलाम जीलानी रहने वाला ज़िला हजारा। बाप का नाम मुहम्मद कयूम जो एडीटर 'लड़ाई-भिड़ाई' अखबार के हैं।

ब्रिगेडियर— मेजर, आप लिखिए इसकी कहानी को, मैं सवाल करूँगा। केवल थोड़े से नोट लेता जाऊँगा।

मेजर भीमसिंह— जो आज्ञा।

(मेजर भीमसिंह नोटबुक और फ़रनी को ले लेता है)

ब्रिगेडियर— तुम खुद क्या काम करते हो? कुछ पढ़े-लिखे हो?

कैदी— जी हा। (गर्दन ऊँची करके) मैं एम० ए० हूँ। अलीगढ यूनीवर्सिटी से पास किया था। सरहद्दी सूबे में सरकारी पुलिस का इन्सपैक्टर हू।

ब्रिगेडियर— अच्छा जी! मैं ब्रिगेडियर जनरल हूँ, मेजर साहब एम० ए० हैं और ये दोनो देवियां एम० बी० बी० एस० हैं, इसलिए तुम्हारी बात समझने में हमलोगो को कोई उलझन नहीं पड़ेगी। और, न तुम्हारा सिर चकनाचूर करने में भी यदि तुमने हमारे सवालो का ठीक उत्तर न दिया तो। (कैदी सिर नीचा कर लेता है)

कैदी— मैं क्या बतलाऊँ— कुछ नहीं जानता!

ब्रिगेडियर— बाधो इसके हाथ पीछे से अर्दली। (अर्दली भीमसिंह की सहायता से उसके हाथ बाध देता है) लेजाओ इसको बाहर और उड़ादो गोली से।

(अर्दली गमनोद्यत)

कैदी— हुजूर। जनरल साहब। बे क़सूर हूँ। योंही इस झमेले में फंस गया। बिलकुल यो ही।

ब्रिगेडियर— (कड़ाई के साथ) यहा किसी की जियारत करने या किसी दावत में शामिल होने के लिए आया था।

कैदी— (भयकंपित) नहीं जनरल साहब। जो कुछ मैं जानता हूँ, सब सही सही और पूरा पूरा बतलाऊँगा।

ब्रिगेडियर— हा—यदि खोपड़े के टुकड़े टुकड़े नहीं कराना चा
हो तो बतलाओ।

कैदी—ज़रूर, सरकार, जरूर, सरकार।

ब्रिगेडियर— कुल कितने आदमी हो? प्रधान छावनी कहा है
हथियार किस किस्म के हैं? कहा से मिले? इस उपद्रव की जड़ मे क
है और कौन है? तुम लोगों ने कहा कहा क्या क्या किया है? आगे क
करने जा रहे हो और क्यो?

कैदी—ब्रिगेडियर जनरल साहब, सारा फसाद आजाद काश्म
सरकार का उठाया हुआ है। पठान जो काश्मीर मे घुसते चले आरहे
उनको पाकिस्तान रोकने की ताकत नहीं रखता—

ब्रिगेडियर— मैने यह नहीं पूछा। होश के साथ बात करो। ज
पूछा उसको बतलाओ।

कैदी—हुज़ूर, वही तो कह रहा हू—वही—

ब्रिगेडियर—तब सीधे तौर पर सब बतलाते जाओ। प्राणो क
चिंता हो तो। समझे?

कैदी— शुरू मे हमला बाहर से नहीं हुआ। आग पहले भीतर ही
सुलगी। फिर पठान आए। अब हमलोग सब मिलाकर पचास हज़ा
आदमी है जो पल्टनों में बटे हुए हैं। गिलगिट, एबटाबाद, रावलपिंड
कोहाला और स्यालकोट के रास्तो से तोपें, मशीनगनें, मौटरैं वगैरह
मौजूदा वक्त के हथियार लाये हैं। थोड़े दिनों मे दो तीन लाख
हो जाएगे।

गौरी—इस पर भी कहता है कि हमला बाहर से नहीं हुआ है!

कैदी—जी—ई क्या करूँ? हमको यही जवाब सिखलाया गया है।

पार्वती—सिर को बचाना चाहे तो सब सच सच कहता जा।

कैदी—जी—ई—

ब्रिगेडियर—हूँ—इन पल्टनो के आने के पहले और कोई लोग आए ?

कैदी—जी ? जी। (चुपरह जाता है)

ब्रिगेडियर—(कड़ाई के साथ) बोलो ब्योरे के साथ बतलाओ—ये आने वाले कौन हैं ? कहा से आए ? पूरी और सही बात बतलाने पर ही कुछ रियायत पा सकोगे।

कैदी—हा जी। (खास कर गला साफ करता है)

ब्रिगेडियर—(कड़क कर) बयान करो।

कैदी—कई हज़ार कबीलाई पठान कई महीने पहले से काश्मीर मे धसा दिए गए थे।

ब्रिगेडियर—क्यो ? आखिर क्यो ?

कैदी—बतलाता हू हुजूर। (जल्दी जल्दी) अग्रेज सरकार कबीलाइयो सरहद्दी पठानों को गुजर बसर या रिश्वत के तौर पर लाखो रुपया साल देती रही है। पाकिस्तानी सरकार यह रुपया नही देना चाहती। एक वजह यह है हमला करने की। दूसरी—अगर काश्मीर हिन्दुस्तान में जा मिला तो रूसी इलाके के साथ हिन्दुस्थान सरकार का नाता सीधा जुड़ जायगा; अफगानिस्तान और चीन पड़ौसी बन जायगे—

मेजर—जल्दी मत करो, जरा धीमे बोलो।

कैदी—जी। बीच एशिया पर हिन्दुस्थान का असर किलिक और कराकुरुम दर्रों में होकर बिलकुल सीधा पड़ उठेगा।

गौरी—इसको पाकिस्तान अपना इजारा बनाना चाहता है।

ब्रिगेडियर—(मुलायम पड़कर) क्या बारीक राजनीति की ये बाते वे पढे कबीलाई वगैरह समझते हैं ?

कैदी—जी नहीं। वे लोग सिर्फ एक लफ्ज़ की आवाज सुन चुके हैं यानी पठानिस्तान की, आजाद पठानिस्तान की,। पाकिस्तान नहीं चाहता कि यह ख्याल कभी भी कामयाब हो।

पार्वती—क्यों ?

कैदी—क्यो कि पठानिस्तान के अगुआ लोग रूस या हिन्दुस्थान से जा मिले गे और इस से पाकिस्तान को नुकसान होगा।

पार्वती—काश्मीर मे लूट मार करने का क्या कारण है।

कैदी—कबीलाइयो का ध्यान काश्मीर की तरफ मोड़ दिया गया है, क्यो कि लूट मार उनको पठानिस्तान के ख्याल से भी ज्यादा प्यारा है, क्या कि इस जरिये से नए नए रगरूट मिलते है।

ब्रिगेडियर—हथियार वगैरह कहा से मिले ?

गौरी—मोटरे कहा से आई ? पैट्रोल किसने दिया ?

कैदी—मुसलिम लीग की सरकार और अफसरो से।

ब्रिगेडियर—लड़ाई की हिकमते कौन बनाता है ?

कैदी—आजाद हिन्द फौज, और सरकारी फौज के छुट्टी लिए हुए अफसर, मगर बुनियादी नकशे पाकिस्तान के अफसर तैयार करते है।

पार्वती—लूट मार करने में रियासती सिपाहियो का भी हाथ है ?

कैदी—जी हा। लूटमार का पेशा करने वाले फिका के हजारा आदमियो मे वे लोग भी शामिल होगए हैं।

ब्रिगेडियर—इस हमले में अग्रेजो का भी कुछ हाथ है ?

कैदी—हुजूर है। सरहद्दी सूबे का गवर्नर जब बरसात के शुरू मे छुट्टी लेकर काश्मीर आया तब 'आजाद काश्मीर सरकार' के बीज उसीने बोए। हमले की साजिश मे वह शरीक है। इगलैण्ड हिन्दुस्थान को रूस का दोस्त नहीं बनने देना चाहता जो कि वह काश्मीर के रास्ते से बन जायगा।

ब्रिगेडियर—यहा की मुसलमानी जनता के साथ पठानों को कोई हमदर्दी है ?

कैदी—कतई नहीं जनरल साहब। जब पठान काश्मीर और जम्मू के मैदानों और घाटियों मे भर जायँगे तब यहा के रहने वालों को पठानों की हकूमत और मर्जी पर चलना होगा।

पार्वती—इसपर भी कहते हैं कि काश्मीरी मुसलमानों को आजाद करने के लिए आरहे हैं।

कैदी—वे तो काश्मीरी मुसलमानो को काफिर, बजात और हेच समझते है।

ब्रिगेडियर—हु—काश्मीर को बर्बाद करने के बाद फिर क्या करने की योजना है?

कैदी—फिर हिन्दुस्थान के लीगी मुसलमानो की मदद से हिन्दुस्थान को अपनी हकूमत में लाने की फितरत है। क्योंकि हिन्दुस्थान को एक पुराने बीमार हाथी की मिसाल दी जाती है जो एक जमाने से आज़ादी के साथ चलने-फिरने काबिल तक नहीं है।

ब्रिगेडियर—यह गुस्ताखी!

कैदी—(भयकंपित) हुजूर, यह मेरा खुद का ख्याल नहीं है।

ब्रिगेडियर—तुम्हारी निज की बात नहीं पूछी जारही है।

पार्वती—हिन्दुस्थान की ऐसेम्बली की शक्ति को नहीं जानते वे लोग?

कैदी—हुजूर, हिन्दुस्थान की ऐसेम्बली ने तै कर लिया है कि उसका रङ्ग-रूप सोशलिस्ट रिपब्लिक का होगा। पाकिस्तान के नवाब और जमीदार सोशलिस्टो और कम्यूनिस्टो मे कोई भेद नहीं मानते। ऐसेम्बली का उनको कोई डर नहीं। वे उससे नफरत करते हैं।

गौरी—नफरत तो उनका चाय-पानी, रोटी-शर्बत और आराम तक है।

ब्रिगेडियर—हूँ—हिन्दुस्थानी फौज का कोई डर नहीं है तुमलोगो के गिरोहो को?

कैदी—कुछ खौफ है सरकार। मगर काश्मीर के पहाड, नदी–नाले, जङ्गल और बर्फीले तूफान हिन्दुस्थानी फौज को बहुत अर्से तक काम नही करने देंगे। तबतक कबीलाई सारी रियासत को कब्जे में कर लेंगे।

ब्रिगेडियर—हवाई बेड़े का भी डर नहीं है?

कैदी—बहुत डर नहीं है हुजूर क्योंकि ज़रूरत पड़ने पर पाकिस्तान कबीलाइयों को हवाई जहाज भी देगा।

ब्रिगेडियर—ओफ! यह शरारत!!! पाकिस्तानी सरकार हवाई बेड़ा देगी, अपना सिर और अपनी जेब बिना टटोले ही?

कैदी—सरकार, जेब का तो यह हाल है कि खज़ानों में चूहे डण्ड पेलते हैं। डाकखाने के टिकिटों, गोबर के कण्डों और अधजले सिगरेटो तक पर चोरबाजारी चलती है।

ब्रिगेडियर—हूँ—खैर—प्रधान छावनी कहा है? कमान कौन कर रहा है?

कैदी—पलन्द्री और गिलगिट मे खास खास छावनिया हैं। कमान कर्नल रहमान कर रहा है।

ब्रिगेडियर—कर्नल रहमान! जो नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के लिए आंसू बहाते बहाते नहीं थकता था!! जिसकी जान कांग्रेस ने बचाई!!! खैर, तालीम कितने दिनों की है? और कहा कहा हो रही है?

कैदी—कई महीनो से एबटाबाद, रावलपिण्डी और सियालकोट मे हो रही है।

ब्रिगेडियर—जनता को क्या कहकर बर्गलाया जाता है?

कैदी—लोगो से यह कहा जाता है कि जिन टैक्सों और जुल्मो की चक्कियों में तुमको पीसा जारहा है उनसे छुटकारा मिल जायगा और सब को बन्दूक वगैरह रखने का सुभीता हासिल हो जायगा।

ब्रिगेडियर—हुं—अब यह बतलाओ कि तुमने कहा पर क्या क्या किया है।

कैदी– (कांपकर) मैंने तो कुछ नहीं किया; हुजूर । मैतो मजहब की लड़ाई समझ कर शामिल हुआ था। और लोगो ने बड़े बड़े सितम किए हैं।

ब्रिगेडियर— उन्हीं लोगों की बात पूछी जारही है।

कैदी– बिना किसी भेद भाव के हिन्दू और मुसलमानो को लूटा और मारा है। आगजनी से गाव के गाव खाक कर दिए हैं। औरतो और लड़कियो को पकड़ ले गए ह। उनकेसाथ—

पार्वती—कहता जा, रुकमत बेशर्मों के कीड़े !

कैदी— कहते नहीं बनता मुझ से। सैकड़ो हज़ारो के साथ बड़ी जबरदस्तिया की गई हैं। सैकड़ों मर गई। सैकड़ो को बाज़ारों मे नीलाम किया गया। मुसलमान बच्चों को गुलाम बनाने के इरादे से कबीलाई इलाको मे भेज दिया गया है। लूट का माल ऊटो, बकरो और गधोपर लाद लाद कर भेजा जारहा है।

गौरी— मुसलमानो को भी नहीं छोड़ा ?

कैदी— ज्यादा बस्ती आबादी तो मुसलमानों की है। मसजिदो तक को उन्होंने ना पाक किया। कुरान शरीफ की भी तौहीन की !

ब्रिगेडियर—तुम हमारी कतारों मे कैसे आए ?

कैदी—पुल पर से पेट के बल रेंगता हुआ।

ब्रिगेडियर— तुमने हमारे सिपाही को घायल किया ?

कैदी—हुजूर उसको सोगन्ध धरवाकर पूछें। वह अपने ही जोर से टकरा कर घायल हुआ है।

ब्रिगेडियर— मेजर इसके हाथ खोलदो। (भीमसिंह उस के हाथ खोल देता है)

कैदी— (ऊपर हाथ फैला कर) मेरी छाती के पास रिवाल्वर है। (ब्रिगेडियर तुरन्त उसके रिवाल्वर को झपट कर ले लेता है।

पार्वती और गौरी अपने अपने रिवालवर हाथ में ले लेती है)
यह भरा हुआ है । मै चाहता तो काम में ला सकता था ।

ब्रिगेडियर— बेकार जाता, क्यो कि फिर तुम्हारी देह की धज्जिया उडाई जाती । तुम्हारे पास और क्या है ? मेजर जेबो को देखो ।

कैदी—इससे भी बढ कर खतरनाक चीज । (पार्वती और गौरी रिवालवर तान लेती हैं । भीमसिह को कैदी सहज ही अपनी जेब से कुछ कागज निकाल लेने देता है)

मेजर—कुछ कागज़ है ।

कैदी— इनका खतरा दूसरी तरह का है । (कागज मेज पर फैला लिये जाते है । गौरी एक कागज को हाथ मे ले लेती है)

गौरी— इन कागजो का मतलब ?

कैदी—इन कागजो मे तस्वीरे है । मतलब जाहिर है । लाहौर मे छापी गई हैं । इनमें दिखलाया गया है कि मुसलमानो पर हिन्दुओ और सिक्खो ने बे हिसाब और बेमिसाल जुल्म किए हैं ।

पार्वती— बिलकुल झूठ ।

ब्रिगेडियर ये कहा कहा बाटे गए हैं ? और क्यों ?

कैदी—काश्मीर, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, ईराक, अरब, मिसिर सब जगह । इन मुल्को से आदमी, हथियार और रुपया पाने की उम्मेद से ।

पार्वती— मिसिर, अरब ईराक और फिलिस्तीन को घर के झगडो से फुरसत मिलगई है ?

ब्रिगेडियर—खैर—

गौरी—(अपने हाथ वाला कागज दिखाते हुए) इस कागजमें क्या है?

मेजर—(कागज को देखकर) हुं—हु – घोड़े पर सवार है ।

पार्वती— कैदी यह क्या है ? } एकसाथ
ब्रिगेडियर—यह क्या है ? }

कैदी —दो टापें हिन्दुस्थान के नकशे मे अ॰ब समुद्र पर दिखलाई गई हैं और दो हिन्दुस्थान पर—यानी हिन्दुस्थान को रौंद कर पाकिस्तान उस पर हुकूमत करेगा ।

ब्रिगेडियर— हुं—घोड़े पर सवार कौन है ?

कैदी—पाकिस्तान का जिन ।

पार्वती—अच्छा !!! घर मे नहीं हैं दाने अम्मा चली भुनाने !!!!

ब्रिगेडियर - अच्छा गुलाम जीलानी, पूर्वीय पजाब पर हमला क्यो नहा किया गया ?

कैदी— फिलहाल हमला करने से हिन्दुस्थानी फौज फौरन सिरतोड़ जवाब देती, मगर किसी वक्त होगा ।

ब्रिगेडियर—और किसी तरफ से भी हिन्दुस्थान पर हमला करने का इरादा किया जा रहा है, कैदी ?

कैदी—हुजूर, कह नहीं सकता। सुना है कि जैसलमेर, जोधपुर वगैरह को भी देखा जावेगा ।

गौरी—हु—और हिन्दुस्थान चुप बैठा रहेगा ।

ब्रिगेडियर— अच्छा कैदी, तुमको इसी समय श्रीनगर भेजा जा रहा है। यदि वहा किसी और पूछताछ की जरूरत पड़ी तो की जायगी। मै यहा से सिफारिश लिख रहा हूँ कि तुम्हारा प्राण न लिया जाय ।

कैदी- हुजूर का हजार हजार शुक्रिया ।

ब्रिगेडियर—अर्दली, कैदी को ले जाओ और बन्द रक्खो।

(अर्दली कैदी को ले जाता है। ब्रिगेडियर कुछ लिखता है और अपनी नोट-बुक में रख देता है। ब्रिगेडियर लिखे बयान को अपनी नोटबुक समेत गौरी को दे देता है।)

ब्रिगेडियर—आप श्रीनगर जाने के लिए तुरन्त तैयार हो जाइए, गौरी देवी। कैदी आपके पहरे मे जायगा। रसद सामान और दवाए भी।

पार्वती और गौरी अपने अपने रिवालवर हाथ में ले लेती हैं) यह भरा हुआ है। मैं चाहता तो काम में ला सकता था।

ब्रिगेडियर– बेकार जाता, क्यों कि फिर तुम्हारी देह की धज्जियां उड़ाई जाती। तुम्हारे पास और क्या है? मेजर जेबों को देखो।

कैदी—इससे भी बढ़ कर खतरनाक चीज। (पार्वती और गौरी रिवालवर तान लेती है। भीमसिंह को कैदी सहज ही अपनी जेब से कुछ कागज निकाल लेने देता है)

मेजर—कुछ कागज़ है।

कैदी– इनका खतरा दूसरी तरह का है। (कागज मेज पर फैला लिये जाते है। गौरी एक कागज को हाथ मे ले लेती है)

गौरी—इन कागजो का मतलब?

कैदी—इन कागजो मे तस्वीरें है। मतलब जाहिर है। लाहौर में छापी गई हैं। इनमे दिखलाया गया है कि मुसलमानो पर हिन्दुओ और सिक्खों ने बे हिसाब और बेमिसाल ज़ुल्म किए हैं।

पार्वती– बिलकुल झूठ।

ब्रिगेडियर ये, कहा कहा बाटे गए है? और क्यों?

कैदी—काश्मीर, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, ईराक, अरब, मिसिर सब जगह। इन मुल्को से आदमी, हथियार और रुपया पाने की उम्मेद से।

पार्वती– मिसिर, अरब ईराक और फिलिस्तीन को घर के झगड़ो से फुरसत मिलगई है?

ब्रिगेडियर—खैर—

गौरी—(अपने हाथ वाला कागज दिखाते हुए। इस कागजमें क्या है?

मेजर—(कागज को देखकर) हु—हु – घोड़े पर सवार है।

पार्वती– कैदी यह क्या है? } एकसाथ
ब्रिगेडियर—यह क्या है? }

कैदी —दो टापें हिन्दुस्थान के नक्शे मे अ॰ब समुद्र पर दिखलाई गई हें और दो हिन्दुस्थान पर—यानी हिन्दुस्थान को रोंद कर पाकिस्तान उस पर हुकूमत करेगा ।

ब्रिगेडियर— हुं—घोडे पर सवार कौन है ?

कैदी—पाकिस्तान का जिन ।

पार्वती—अच्छा !!! घर मे नहीं हैं दाने अम्मा चली भुनाने !!!!

ब्रिगेडियर - अच्छा गुलाम जीलानी, पूर्वीय पजाब पर हमला क्यों नहा किया गया ?

कैदी— फिलहाल हमला करने से हिन्दुस्थानी फौज फौरन सिरतोड़ जवाब देती, मगर किसी वक्त होगा ।

ब्रिगेडियर—और किसी तरफ से भी हिन्दुस्थान पर हमला करने का इरादा किया जा रहा हैं, कैदी ?

कैदी—हुजूर, कह नहीं सकता। सुना है कि जैसलमेर, जोधपुर वगैरह को भी देखा जावेगा।

गौरी—हुं—और हिन्दुस्थान चुप बैठा रहेगा।

ब्रिगेडियर— अच्छा कैदी, तुमको इसी समय श्रीनगर भेजा जा रहा है। यदि वहा किसी और पूछताछ की जरूरत पड़ी तो की जायगी। मैं यहा से सिफारिश लिख रहा हूॅ कि तुम्हारा प्राण न लिया जाय।

कैदी- हुजूर का हज़ार हज़ार शुक्रिया।

ब्रिगेडियर—अर्दली, कैदी को ले जाओ और बन्द रक्खो।

(अर्दली कैदी को ले जाता है। ब्रिगेडियर कुछ लिखता है और अपनी नोट-बुक मे रख देता है। ब्रिगेडियर लिखे बयान को अपनी नोटबुक समेत गौरी को दे देता है।)

ब्रिगेडियर—आप श्रीनगर जाने के लिए तुरन्त तैयार हो जाइए, गौरी देवी। कैदी आपके पहरे मे जायगा। रसद सामान और दवाए भी।

गौरी—मैं तैयार हूं । लारी में सामान रखने के लिए कुछ मिनट ही तो चाहिये ।

ब्रिगेडियर—आप महारानी और महाराज तथा देशभर को समझा देना कि केवल कबीलाई लुटेरो का मुकाबला नहीं है । घरो में लोगो को बन्द करके जला डालने वालो का ही सामना नही है, बल्कि हिन्दुस्थान भर मे आग लगाने की नियत रखने वालो का सामना है ।

गौरी—मुझको मालूम है ।

ब्रिगेडियर—यह आक्रमण शक्ति और तेज़ी पाकिस्तान से पा रहा है जो बेहद बेशर्मी और क्रूरता के साथ लुटेरो का सरपरस्त बन रहा है ।

गौरी—इसमें कोई सदेह नहीं ।

ब्रिगेडियर—बतला देना कि इन लुटेरो के अत्याचारों की कोई मिसाल इतिहास में नहीं मिलेगी । सैकड़ों हजारो की सख्या में मुसलमान स्त्रियो और बच्चों को भी नहीं छोड़ा है । और (रुंधे गले से) हजारों की तादाद में हिन्दुओं को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया गया है । हे शंकर भगवान, इस बीसवीं सदी में यह सब !!

गौरी—यह क्या कभी भुलाया जा सकता है ?

ब्रिगेडियर—काश्मीर के हम थोड़े से सिपाही अकेले काश्मीर की लड़ाई नहीं लड़ रहे हैं, बल्कि सारे हिन्दुस्थान की लड़ रहे हैं । सबको पुकार पुकार कर समझाना ।

पार्वती—काश्मीर हिन्दुस्थान का भाग होकर रहेगा । काश्मीर के समझदार हिन्दू मुसलमानों की यही चाह है । एक बाधा अवश्य मिटाई जानी चाहिए ।

ब्रिगेडियर—बाधा !! अब भी बाधा ?

गौरी—गुरुदासपूर और पठानकोट से लगी हुई थोड़ी सी लम्बाई की ही सीमा काश्मीर को हिन्दुस्थान से मिलाती है । नाम लेने लायक भी रास्ता नहीं जहां होकर काश्मीर का माल और फल हिन्दुस्थान में जा

सके और हिन्दुस्थान की सेना काश्मीर की सहायता के लिए आ सके। जो कुछ भी भला बुरा मार्ग है वह हिन्दू मुसलमानी झगड़े के कारण सङ्कट पूर्ण है इसके लिए क्या किया जाय?

ब्रिगेडियर क्या किया जाय? जो किया जाता है वह किया जाय लोगों को समझाया जाय और उनके होश को किसी तरह भी हाथ में रक्खा जाय। ऐसा प्रबन्ध किया जाय कि काश्मीरी और हिन्दुस्थानी मुसलमान वे खटके और अकेले दुकेले, बिना किसी सन्त्री और पहरे के इस मार्ग से आ जा सके, क्यों कि पश्चिमी और उत्तर के मार्ग अब सदा के लिए नहीं तो बरषों के लिए अवश्य बन्द हुए। पाकिस्तान गाड़िया, हथियार, सिपाही, नेतृत्व और रसद हमारे दुश्मनों को दे। अपनी दो सौ पचास मील भूमि के ऊपर होकर उनको सुरक्षा और आराम के साथ आने दे!! और हिन्दुस्थान की सभ्यता इस छोटे से और सकरे मार्ग को समाज विरोधी दलों से निस्सङ्कट भी न रख सके!!!

गौरी – अवश्य रख सकेगी जनरल साहब, मुझको पूरी आशा है। हिन्दुस्थान का अनन्त और अमर अलख शीघ्र जागेगा।

ब्रिगेडियर—(खड़े होकर) तो जाओ देवी, जगाओ उस अलख को। बहुत दिनों सो चुका है। उसके जागते ही क्रूर निष्ठुर बर्बर, अपने अपने बिलो मे भाग जायगे।

गौरी—मैं जाती हूँ।

ब्रिगेडियर— अफसोस! हिन्दुस्थान के विरोधियो की महत्वाकाक्षा और बुरी नियत की आगाही को गम्भीरता के साथ नही टटोला गया। देश द्रोही हथियार बन्द अड्डे बनाते चले गए। हम उनका मखौल उड़ा कर आत्म सन्तोष करते रहे। ओफ! यह अज्ञान हमको बहुत महगा पड़ा!!

पार्वती- अब भी स भल जाय तो समय है।

(नेपथ्य मे मोटर की भर भर होती है)

ब्रिगेडियर—जाओ देवी गौरी। नमस्ते। हम एक सौ बयालीस काश्मीरियों का सारे सभ्य संसार को नमस्ते। देखो गौरी, हम लोगों का खून रक्त बीज का काम करे। इसी आशा पर हम लोग मर मिटने पर जुट पड़े हैं।

गौरी—(जाते जाते, कंठावरोध के साथ) नमस्ते जनरल। (वह आसू पोछती हुई जाती है) (लौटकर) नमस्ते मेजर, बहिन पार्वती नमस्ते।

(जाती है)

ब्रिगेडियर—पार्वती, तुम भी चली जाती तो हम सबको बड़ा चैन मिलता। (बैठ जाता है)

पार्वती—(चिहुककर) आप मुझको कमज़ोर क्यों समझ रहे हैं?

मेजर भीमसिंह—कमजोर नहीं समझते हैं। नमालूम हमलोगो को फैलफुट्ट होकर कहा कहा लड़ना पड़े। आप कहीं अकेली पड़ जायगी तो हम सब लोगो को मरने के समय चिन्ता रहेगी।

पार्वती—(और भी तिनककर) कि कहीं पार्वती को कबीलाई उठा तो नहीं ले गए! आप भी विलक्षण हैं!! आप नहीं जानते कि पार्वती हिमालय पर्वत की कन्या है हिम सदृश कठोर। राइफिल, रिवाल्वर, हथगोला इत्यादि सब साथ में होगा, फिर चिन्ता किस बात की?

ब्रिगेडियर—तब भी

पार्वती—तब भी क्या? आपही सरीखे सन्देही पुरुषों ने स्त्रियों को लड़ने न देकर चिताओं पर जल जाने के लिए विवश किया। मेवाड़ के इतिहास में मैंने पढ़ा है—एक राजपूतनी ने इसी सन्देह के कारण अपना सिर अपने हाथ से काटकर पति की गोदी में डाल दिया था।

ब्रिगेडियर—(खड़े होकर) देवी, क्षमा करो। मुझको तुम्हारी हिम्मत और हथियार चलाने की चतुराई पर पूरा भरोसा है।

(बैठ जाता है)

पार्वती—(हँसकर) मैं सरसों के तेल, आलू और चाय की पत्तियों तक से भीड़ की भीड़ को उड़ा देने वाले बम भी बनाना जानती हूँ। पकड़ भी ली गई, जो कि असम्भव है, तो सैकड़ों हजारों दुश्मनों को राख करके मरूंगी।

(नेपथ्य में दो धड़ाके होते हैं)

ब्रिगेडियर—हूं मेजर, समय आगया। देखो क्या है?

(मेजर भीमसिंह जाता है)

पार्वती—यह कोई दुश्मन का दूसरा भेदिया है। दुश्मन का कोई छोटासा भी दस्ता नहीं होगा। वे पुल को ऐसी आसानी के साथ पार नहीं कर सकेंगे।

ब्रिगेडियर—(मुस्कराकर) ठीक कहती हो, देवी। मेजर के पीठ फेरते ही मेरे अन्तर्मन से भी यही बात उठी।

पार्वती—जान पड़ता है कि लड़ाई और भी विकट घोरता के साथ लड़नी पड़ेगी।

ब्रिगेडियर—(हँसकर) मौका तो अब आया है देवी, जब अपनी एक एक ज़िन्दगी को उनकी सौ सौ मौतों से तोलना है।

पार्वती—(खड़ी होकर) इस समय हमारे बड़े किस कल्पना या सिद्धात के साथ तुक लगा रहे होंगे? उनको क्या मालूम कि हमलोग किस तरह मर रहे हैं। (बैठ जाती है) परन्तु उनका क्या दोष है? वे क्या करें?

ब्रिगेडियर—दोष यह है कि विरोधियों की उत्पन्न की हुई समस्याओं के प्रति उनका दृष्टिकोण राजनैतिक न होकर नैतिक और आदर्शवादी रहा है, और, उन्होंने नए नए और पराक्रम पूर्ण काम करने की अपनी शक्ति को कमजोर कर डाला है।

पार्वती—परन्तु वे दृढतापूर्वक हमलोगों की सहायता करेंगे। सम्भव है हिन्दुस्थानी सेना इसी घड़ी आरही हो।

ब्रिगेडियर—(हँसकर) इस आशा में प्राणों को मत अटकाओ, देवी। सहायता आवे या न आवे अपना कर्तव्य साफ है - हमको हर हालत मे इन आताताइयों को पुल के उसी पार रखना है। यह क्या कम है कि हम इनके मनचाहे समय पर श्रीनगर मे धसने नहीं देंगे?

पार्वती - ठीक है जनरल, हमलोगों को मरने के बदले में इतना मिल जायगा तो बहुत है। मौत एक बार आती है केवल एक बार। डरपोक रोज रोज़ मरते हैं। हमलोग अपने देश के लिए मरकर जो धारा बहा जायगे वह अभङ्ग और अखिण्ड रहेगी। वह •

[अर्दली और मेजर भीमसिह एक कबीलाई को पकड़ कर लाते हैं। उसके दाढ़ी मूछ है। आखे चञ्चल, परन्तु सहमी हुई। जबड़ा चौड़ा, नाक मोटी और कमानीदार। सारी आकृति दृढ़ता क्रूरता और वध-निष्ठा की। हरी पगड़ी, हरा ढीला कुरता जिस पर मोटा सलूका, उसी रङ्ग का खाकी सलवार जो काफी ढीली और पायचेदार है। इसके कपड़े कई जगह से फटे हैं। अर्दली एक ओर इस पर बन्दूक ताने है। दूसरी ओर भीमसिह इस पर अपना रिवाल्वर सीधा किए है। कैदी की अवस्था अधेड से कम है।]

मेजर भीमसिह - इसने हमारे एक सिपाही को मार डाला है।

ब्रिगेडियर—(खड़े होकर) ऐ! हमारे सिपाही को मार डाला है!! सौ बैरियों को मौत के घाट उतारने वाला एक अनमोल प्राण चला गया!!! मारदो इसको तुरन्त। (वे लोग सचेष्ठ होतेहै) ठहरो! इससे कुछ पूछना है। कैदी, कहा का रहने वाला है?

कैदी—वज़ीरिस्तान से भी दूर का।

ब्रिगेडियर यहा क्यों आया?

कैदी—आया नहीं। अमको भेजा गया लूटने और मार डालने और आग लगाने और औरतो को पकड़ ले आने वास्ते और—

ब्रिगेडियर— वेश्या कहीं का ! अब इसके आगे भी कुछ और है ?

कैदी - हां है। तुमने पूछा अमने बतलाया। और फसलों को तबाह करने वास्ते, काश्मीर को आजाद करने वास्ते, बस। हुकुम था। अमारा कोई कसूर नहीं।

ब्रिगेडियर—फिर मुसलमानों को क्यों मारा ? उनकी औरतों को क्यों बेइज्जत किया ?

कैदी—क्योंकि अमरे कमान अफसर को अच्छा लगा, इसलिए मारा क्योंकि जब हिन्दू मारने को नई मिला तो मुसलमानों को मार दिया, क्या कि उसके पास पैसा और मवेशी था और अमारे पास कुच नई।

ब्रिगेडियर—काश्मीर पर ही क्यों हमला किया ?

कैदी—अमको नहीं मालूम। हुकुम था।

ब्रिगेडियर—काश्मीर में क्या करोगे ?

कैदी—मकानों में रहेंगे। श्रीनगर में दुम्बे पालेंगे।

पार्वती— खेती करेगा ?

कैदी – नई करेगा। तुम अमारे साथ चलेगा तो अलबत्ता कुच तो भी करेगा।

पार्वती—(रिवाल्वर निकाल कर) इसको खायगा ?

कैदी (भयभीत होकर) औरत गोली मारने लगा ! ओ बाबा !! अमको बतलाया गया कि औरत तो कुच कर नहीं सकता। और काश्मीर का आदमी निकम्मा है।

पार्वती—अब तुमको और तुम्हारे हुकुम देने वालों को जल्दी मालूम हो जायगा कि हम लोग तुमको कच्चा चबा जायगे।

कैदी—ओह ! हिन्दुस्तान का औरत इतना बुरा हो गया है ये अम को कभी नई बतलाया गया ! अमारा सरदार बोला वो तो फूंक मारने से उड़ाया जा सकता है, मगर ये तो कुच और है। बाबा !!

ब्रिगेडियर – तुम यहां किस वास्ते आया ? सच सच बतलाना।

कैदी - अमको हुकुम थ। बर्गेडियर को मार दो, कम्प मे आग लगा दो, सब लोग पाछे आता है। बस।

ब्रिगेडियर—अच्छा! ब्रिगेडियर हम ही है। अब देखो कौन किस को मारता है।

[कैदी छाती के पास हाथ ले जाता है। अर्दली समझ जाता है और उसकी छातीपर बन्दूक अडा देता है। मेजर भीमसिंह कैदी का कनपटा पर रिवाल्वर के मुंह का चिपका देता है। ब्रिगेडियर तुरन्त उछलकर कैदी का हाथ पकड़ लेता। और उसकी छाती के पास से रिवाल्वर को झपट लेता है।]

कैदी—(निराशा के स्वर मे) अब अमारे पास कुछ नई, ओफ! ओ!!

मेजर—खुदाई खिदमतगार का नाम सुना है?

कैदी - सुना है। वो तो अमारा दुश्मन है।

मेजर—हम सब को खुदाई खिदमतगार समझो। तुम्हारी खिदमत अभी हाल होती है।

ब्रिगेडियर—तुमने हमारे सिपाही को मारा?

कैदी—(अधिक भय भीत हो कर) ऐ—ऐ—नई तो। वो—वो—अमारा बन्दूक छीना। बन्दूक चल गया। वो मर गया बस।

ब्रिगेडियर—अच्छा, एक बार बन्दूक फिर चलेगी और अबकी बार तुम मरोगे। (मेजर भीमसिंह और अर्दली से) ले जाओ इस डाकू को यहा से और उड़ादो इसका खोपड़ा। इसके जवाबों से घृणा ही और बढ़ेगी कोई लाभ नहीं अधिक परेशान करने से। (वे दोनो उसको घसीट ले जाते है, बाहर धड़ाका होता है और किसी के गिरने की आवाज)

पार्वती इन लोगो को सिखलाया गया है कि गैर मुसलमान खास तौर पर और सारे काश्मीरी आम तौर पर कमजोर हैं और सहज ही

दबोचे जा सकते हे। इसलिए इन लोगों ने इतना दुस्साहस किया ••
और इस लिए यह कैदी इस तरह वर्ता मानो हम लोग कुछ भी न हो।

ब्रिगेडियर—ये पहली बिल्लिया हैं। इनको समझाया गया होगा कि काश्मीरी निरे चूहे हैं।

(मेजर भीमसिंह और अर्दली आते है)

मेजर—जनरल साहब, अब सारा कम पुल पर लगा देना है। इस आदमी ने टेलीफोन के कई तार काट डाले हैं।

ब्रिगेडियर—ओह! चलो समय आगया है। (हँसकर) अर्दली अब हम सब लोग मौत के साथ शादी करने जारहे हैं।

अर्दली - (हँस कर) सब से पहले मै जनरल साहब।

ब्रिगेडियर—नही, सबसे पहले जनरल। देखो मेरी ब्रिगेड के नाम को बट्टा न लगने पावे मेरे बाद।

पार्वती—पहले मैं जाती हू और किसी टोली की कमान को संभालती हू। (मुस्कराकर) अब आपको सदेह नहीं रहेगा कि न जाने मेरे पीछे किसका क्या होगा।

(जाती है)

ब्रिगेडियर—ठहरो देवी! ठहरो कैप्टेन पार्वती। रुको बहन, तुम्हारा ब्रिगेडियर तुमको आदेश देता है।

पार्वती—(जाते जाते) वीर भवानी दुर्गा देवी मेरी ब्रिगेडियर हैं। अब नमस्ते। प्यारे काश्मीर और प्यारे भारत को नमस्ते।

(गई)

ब्रिगेडियर—हुं—हा - (गला साफ करता है उन दोनो की आँखे भर आती है रूमाल से पोछ लेते है) दवाइया और ज़रूरी सामान तो डाक्टर गौरी के साथ चला गया है न ?

मेजर—जी हा। सब।

ब्रिगेडियर—अब अपने सब कीमती सामान मे आग लगा दो दुश्मन के हाथ हमारी एक कौडी भी न लगने पावे।

मेजर भीमसिह—हमारे मारे जाने के बाद केवल हमारे हथियार उनके हाथ लगेगे।

ब्रिगेडियर - (दोनो मुट्ठियां बाधकर) यह एक चिन्ता अवश्य है।

मेजर भीमसिह-- परन्तु शायद सहायक सेना आजावे और ये हथियार उसीके हाथ लग जावे।

ब्रिगेडियर —और शायद हमारे शवो का दाह, क्रियाकर्म, श्राद्ध-तर्पण भी सहायक सेना करदे! (गभीर होकर) प्यारे मेजर अब सब प्रकार के सहारो की ओर से मन को मोड़कर परमात्मा को याद करो और जितनी देर तक हो सके इन लुटेरो, हत्यारो को नमला पुल से इस ओर मत आने दो। ये हथियार यदि इतना कर सके तो बहुत होगया।

मेजर भीमसिह—दुश्मन हमारी लाशो पर ही होकर आसकेगा। मै जाता हू।

ब्रिगेडियर—ठहरो भाई भीमसिंह, पहले मै मरूगा। इतने स्वार्थी मत बनो। मेरे सब मित्र पहले चले जायँ और मैं अकेला रह जाऊँ!

मेजर भीमसिह— मित्रों के मारे जाने पर आपका खून और भी दमकेगा, बल और भी चमकेगा।

अर्दली— क्या मै आपका कोई नही हूँ?

ब्रिगेडियर— (आगे बढकर) क्यों नही? तू मेरा मित्र है, मेरा भाई है। (अर्दली को छाती से लगा लेता है)

मेजर भीमसिह— हमारी ब्रिगेड का नाम है मौत ब्रिगेड। हम सब भाई भाई हैं। कोई छोटा बड़ा नही। (वे सब एक दूसरे को छाती से लगाते है)

(नेपथ्य मे मशीनगन चलने का शब्द होता है)

ब्रिगेडियर—यह हामरी बहिन पार्वती का काम है। हमारी बहिनों और भाइयों के नाम पर काश्मीर के फूल सदा खिलते रहेंगे।

मेजर भीमसिंह—तो चलिए हम लोग पीछे नहीं रहेंगे। छप्पन घन्टे हो गए हैं बिना नींद के। अब अकाल की गोद में सुख से सोयगे।

अर्दली—चलिये और कुछ मेरा भी जौहर देखिये। पहरा लगाते लगाते थक गया हूँ।

तीनों—चलो। जय काश्मीर!

जयहिन्द!! जयहिन्द!!! जयहिन्द!!!!

(तीनों जाते हैं नेपथ्य में। मशीनगन चलने की आवाज़ होती है, और प्रकाश होता है। यवनिका गिरता है।

❀ इति ❀